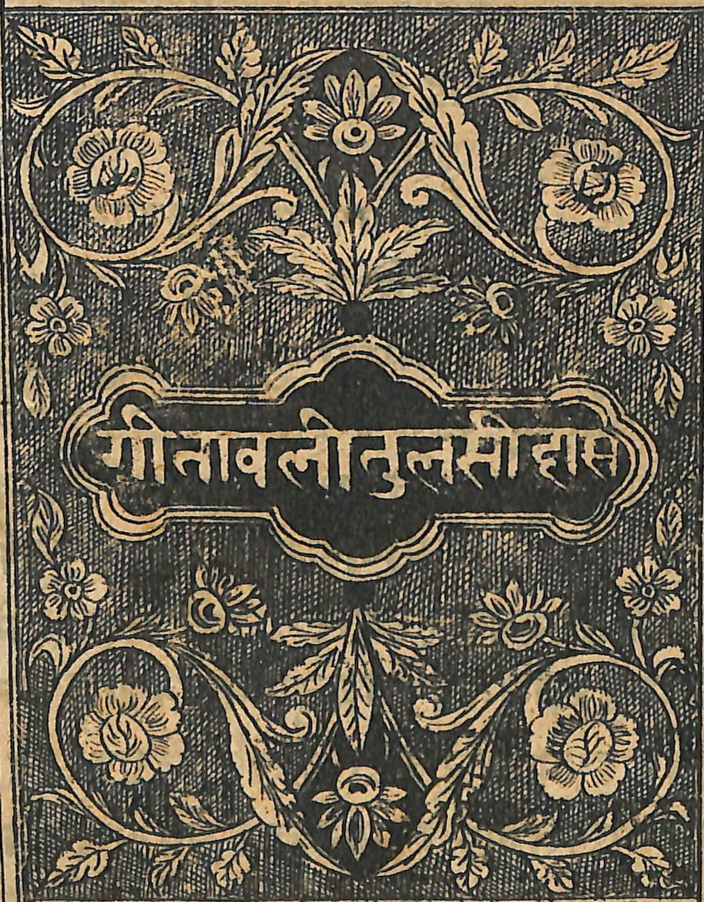
श्री गणेशाय नमः

मतबअ इलाही पएहर आगरा



गीतावली तुलसीदास

मुरलहर कम्बोह टोला मच्छू खां के

एहतमाम से छपी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

...यनमः नीलाम्बुजं श्यामल कोमलांगं सीता स
...मारोपित वामभाग पाणौ महासायक चारु चापं नमामि रा
मं रघुवंश नाथं ॥ राग आसावरी ॥ आजु सुदिन सुभ घरी सुहाई
रूप शील गुण धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई ॥ अति पुनी
त मधु मास लगन ग्रह वार योग समुदाई ॥ हर्षवन्त चर अचर
भूमि सुर तनरुह पुलक जनाई ॥ बर्षहि विबुध निकर कुसु
मावलि नभ दुन्दुभी बजाई ॥ कौशल्यादि मातु मन हर्षित यह
सुख बरणि न जाई ॥ सुनि दशरथ सुत जन्म लियो सब गुरु जन वि
प्र बुलाई ॥ वेद विहित करि क्रिया परम शुचि आनंद उर न समाई
सदन वेद धुनि करत मधुर मुनि बहु विधि बाज बधाई ॥ पुरवासि
न प्रिय नाथ हेतु निज निज सम्पदा लुटाई ॥ मणि तोरण केतु पता
कन पुरी रुचिर करि छाई ॥ माग धसूत द्वार बंदी जन जंह तंह करत
बड़ाई ॥ सहज शृंगार किये बनिता चलि मंगल विपुल बनाई ॥ गा
वहि देहि आशीस मुदित चिर जिवौ तनय सुखदाई ॥ वीथिन कुङ्कु
म कीच अरगजा अगर अबीर उड़ाई ॥ नाचहिं पुर नर नारि प्रेम भरि
देह दशा बिसराई ॥ अमित धेनु गज तुरग बसन मणि जात रूप अधि
काई ॥ देत भूप अनुरूप जाहि जोई सकल सिद्धि गृह आई ॥ सुखी भये
सुर संत भूमि सुर खल गण मन मलिनाई ॥ सबै सुमन विकसत रवि
निकसत कुमुद विपिन बिलखाई ॥ जो सुख सिंधु सुकृत सीकर
ते शिव विरंच प्रभुताई ॥ सोई सुख अवध उमगि रह दश दिशि कौन
जतन कहौं गाई ॥ जो रघुवीर चरण चिंतक तिनकी गति प्रगट देखाई
अविरल अमल अनूप भक्ति दृढ़ तुलसीदास तब पाई ॥ राग जयंति
॥ टेक ॥ सहेली सुनि सोहिलो रे सोहिलो सोहिलो सोहिलो सो
हिलो सब जग आज पूत सपूत कौशल्या जायो अचल भयो कुल

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

राजु १ चैत चारु नौमी तिथि सित पख मध्य गगन गत भानु न...

लग्न भलो दिन मंगल मोद निधानु २ व्योम पवन पावक जल थल

हि पिाटरा हु सुमंगलमूल सुरदुंदुभी बजावहिं गावहिं हर्षहिं बर्ष

हिं फूल ३ भूपत सदन सोहिलो सुनि बाजे गहगहे निसान जहं तहं

सजि हिं कलश ध्वज चामर तोरण केतु वितान ४ सींच सुगंध रचें चौके

गृह आंगन गली बजार दल फल फूल दूब दधि रोचन घर घर मङ्गल चा

र ५ सुनि सानंद उठे दशस्यन्दन सकल समाज समेत लिये बोलि गुरु

सचिव भूमिसुर प्रमुदित चले निकेत ६ वेदकर्म करि पूजे पितर सुरदि

एम हिं दे मन दान ते हिं औसर सुत तीन प्रगट भे मङ्गल मुद कल्याण

आनंद मंह आनंद अवध आनन्द बधावन होइ उपमा कहै चारि फल की

मोहि भलन कहै कवि कोइ ८ सजि आरती विचित्र थाल कर जूथ जूथ व

नारि गावति चली बधावन लैलै निज निज कुल अनुहारि ९ असहीं दु

सही मारहि सही मन वैरिन बढ्यो बिषाद न्दपसुत चारि चारु चिरजीव हु

शंकर गौरि प्रसाद १० लैलै ढोव प्रजा प्रमुदित चले भांति भांति भरि

भार करहिं गान करि आन राय की नाचहिं राजदुआर ११ गज रथ बाजि

बाहनी बाहन सबनि संवारे साज जनु उछल पति रति पति को फूल पुरवि

हत सहित समाज १२ घंटा घंटि पखाउज आउज झांझ वेनु डफ तार

नूपुर धुनि मंजीर मनोहर कर कंकन झनकार १३ न्टत्य करहिं नट नटिनटीना

रिनर अपने अपने रंग मनहु मदन रति विविध भेष धरि नटत सुदेश

सुगंध १४ उघरहिं छंद प्रबंध गीत पद राग ताल बंधान सुनि किन्न

र गंधर्व सराहत बिथक हिं बिबुध विमान १५ कुंकुम अगर अरगजा छिर

कहिं भरहिं गुलाल अबीर नभ प्रसून झरि पुरी कोलाहल भै मन भाव

ते भीर बड़ी बयस विधि भयो दाहिनो गुरु सुर आशिर्वाद दशरथ

सुकृत सुधा सागर सब उमगे तजि मर्याद ... १४ ब्राह्मण भेद मर्याद मित

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धुने मंगल गान निकसत पैठत लोग परस्पर बोल
त लगि लगि कान १८ बरषहिं मुकुता रत्न राज महिषी पुर सुमुखि सम
न बगरे नगर निछावरि मणि गण जनु जुआरि जव धान १९ कीन्ह बेद बि
धि लोकरीति नृपमंदिर परम हुलास कौशल्या कैकयी सुमित्रा रह
सविवश रनिवास २० रानिन दये बसन मणि भूषण राजा सहन भंडार
मागध सूत भाट नट याचक जहँ तहँ करहि कवार २१ बिप्रवधू सनमा
नि सुआसिनि जन पुरजन पहिराइ सनमाने अवनीप असीसत ईश
रमेश मनाई २२ अष्टसिद्धि नवनिद्धि भूति सब भूपति भवन कमा
हि समय समाज राज दशरथ को लोकप सकल सिहाहि २३ को कहि
सकै अवधवासिन को प्रेम प्रमोद उछाहु सारद शेष गणेश गिरीश
हि अगम निगम अवगाहु २४ शिव विरंचि मुनि सिद्ध प्रशंसत बड़े भू
प के भाग तुलसीदास प्रभु सोहिलो गावत उमँगि उमँगि अनुराग २५
२ राग बिलावल आज महामंगल कोशलपुर सुनि नृप के सुत चारि
भये सदन सदन सोहिलो सुहावनो नभ अरु नगर निसान हये सजि स
जि जान अमर किन्नर मुनि जानि समय शुभ गान ठये नाचहिं नभ
अपसरा मुदित मन पुनि पुनि बर्षहिं सुमन चये अति सुख वेगि बोलि
गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गये जातिकर्म करि कनक बसन म
णि भूषित सुरभि समूह दये दल रोचन फल फूल दूब दधि युवतिन भ
रि भरि थार लये गावति चलीं भीर भई बीथिन बंदिन बाकुर विरद बये
कनक कलश चामर पताक ध्वज जहँ तहँ बंदन वार नये [illegible] अबीर
अरगजा छिरकहिं सकल लोक एक रंग रये उमगि चल्यो आनन्द लो
क तिहूँ देत सबनि मन्दिर रितये तुलसीदास पुनि भरे देखियत राम
कृपा चितवनि चितये ३ राग जयति श्री गावै विबुध विमल वरवाणी
भुवन कोटि कल्याण कन्द जायो पूत कौशल्या रानी मास पक्ष ति

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

थिवारनखतग्रहयोगलग्नशुभखानी जलथलगगनप्रसन्नसाधुमुनिदेवदिशाहियहुलसानी बर्षतसुमनबधावनगरनभहर्षनजातबखानी ज्यौंहुलासरनिवासनरेशहि त्यौंजनपदरजधानी अमरनागमुनिमनुजसपरिजनविगतविषादगलानी मिलहिंमांझरावणरजनीचरलंकसंकअकुलानी देवपितरगुरुविप्रपूजिनृपदयेदानरुचिजानी मुनिबनितापुरनारिसुआसिनिसहसभांतिसनमानी पाइअघाइअशीसनिकसतयाचकजनभेदानी यौंप्रसन्नकेकयीसुमित्रहिहोहुमहेशभवानी दिनदूसरेभूपभामिनिदोउभईसुमंगलखानी भयोसोहिलोसोहिलेमोसृष्टिसोहिलेसानी नचतगावतभोमनभावतसुखआवतअधिकानी देतलेतपहिरतपहिरावतप्रजाप्रमोदअघानी गाननिसानकोलाहलकौतुकदेखतदुनीसिहानी हरिविरंचिहरपुरशोभाकुलकोशलपुरीलोभानी सानंदअवनिराजरवनीसबभागहुकोखिजुडानी आशिषदेइसराहहिसादरउमारमाब्रह्मानी विभवविलास बाढ़िदशरथकीदेखिनजिनहिंसोहानी कीरतिकुशलभूतिजयऋधिसिधितिनपरसवैकोहानी छठीवारहोलोकवेदविधिकरीसुविधानविधानी रामलक्ष्मणरिपुदमनभरतधेरनामललितगुरुजानी सुकृतसुमनतिलमोदवासविधियतनयत्रभरिथानी सुखसनेहसबदियदशरथहीखरिखेललखिथानी अनुदिनउदयउछाहउमगजगघरघरअवधकहानी तुलसीरामजन्मयशगावतसोसमाजउरआनी ४ रागकेदार अवधबधावनेघरघरमंगलसाजसमाज शकुनसुहावनेमुदिनकरतनिजनिजकाज छन्द निजकाजसाजसवांरिपुरनरनारिरचनाअनगनी गृहअजिरअटनबजारवीथिनचारुचौकेंविविधचनो चामरपताकावितानतोरणकलशदीपावलिबनी सुरससुकृ[illegible]

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धुनि बाँधि सुभसि जननी जनु जनी १ चैत चतुर्दशि चांदनी
अमल उदित निशिराज उडुगण अवलिलि प्रोद प्रदिपा उमगान आ
नंद आज छन्द आनन्द उमगत आजु विबुध विमान विपुल बनाइ कै
गावत बजावत नटत हर्षत सुमन बर्षत आइ कै नरनिरषि नभ सुषे
षि पुर छवि परस्पर सचुपाइ कै रघुराज साज सराहि लोचन लाहु लेत
अघाइ कै २ जागिए राम छठी सजनारी रजनी रुचिर निहारी मंगल
मोद मढी मूरति जनु निपबालकनारी छन्द मूरति मनोहर चारि वि
रचि विरंचि परमारथ मयी अनुरूप भूपहि जानि पूजन योग विधि पू
करदयी तिनकी छठी मंजुल मठी जग सरस जिनकी सरसदी किय
नींद भामिनि जागरन अभिरामिनी यामिनि भयी ३ सेवक सजग भये
समय सुसाधन सचिव सुजान मुनिवर गुरु पूछ पये लौकिक वैदिक
विविध विधान छन्द वैदिक विधान अनेक अलौकिक आचरण सु
नि जानि कै बलिदान पूजा मूलिकामणि साधि राखे आनि कै जे
देव देवी सेइयत हित लागि चित सनमानि कै ते यंत्र मंत्र पिरवाइ
राखत सबनि सोपहिचानि कै ४ सकल सुआसिनि गुरुजन पुरजन
पाहुन लोग विबुध विलासिनि सुरमुनि याचक जो जेहि योग छन्द
जोहि योग जेहि तेहि भांति तेहि पहराइ परिपूरण किय जय कहत
देत असीस तुलसीदास ज्यों हुलसत हिये ज्यों आज कालि हु परब जा
गन होहिंगे नेवते दिये ते धन्य पुण्य पयोधि जे तेहि समय सुख जी
वन जिये ५ भूपति भागवली सुर नर नाग सराहि सिराहिं किय वखेष
अली सम्पति सिधि अणिमादिक माहिं छन्द अनिमादि सारदपौ
ल नंद नि बाललालहि पाहहीं भारजन्म जे पायेन ते परितोष उमा रमा
लहीं निज लोक विसेर लोकपन घरकीन चर्चा चालहीं तुलसी नप
ललितंह नाप जग जनु प्रभु छठी छायालही ६ ५ राग जयति श्री

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चरण प्राण निछा
वारु आज अवधगहगहे सानन्द बधाये नामकरन रघुब
र सुदिन सोधाये पाय रजाय सुराय को ऋषिराय बुलाये विप्र
सचिव सेवक सखा सादर सिर नाये साधु सुमति समरथ सबै सा
नंद सिखाये जल दल फल मणि मूलि मंगल काज लिखाये २ गण
प गौरि हर पूजि कै गोवृन्द दुहाये घर घर मुद मङ्गल महा गुणगण
सुहाये तरल मुदित जहँ तहँ चले मन के भय भाये सुरपति शास
न घन मनो मारुत मिलि धाये २ गृह आंगन चौहट गली बाजार ब
नाये कलश चवर वर तोरण ध्वजा सुवितानत नाये चित्र चारु चौ
कार चो लिखि नाम जनाये भरि भरि सरवर वापिका अरगजा सनाये
३ नर नारि न पल चारि में सब साज सजाये दशरथ पुर छवि आपनी
सुरनगर लजाये बिबुध विमान बनाय कै आनंदित आए हर्षि सुम
न वर्षन लगे गए धनु जनु पाए ४ चार विधि दुवद कै रविकुल गुरु ज्ञानी
आपु वसिष्ठ अथर्वनी महिमा जग जानी लोकरीति विधि वेद की क
रि कह्यो सुबानी शिशु समेत वेगि बोलिये कौशल्या रानी ५ सुन
त सुभागिनि लै चली गावति बड़भागी उमा रमा शारद सचा लखि
मुनि अनुरागी निज निज रुचि बपु धरि कै मिलि मिलि संग लागी
तेहि औसर तिहुं लोक की सुदशा जनु जागी ६ चारु चौक बैठत भई
नृप भामिनि शोभै गोद मोद मूरत लिये सुकृति जनु जो है सुख
सुखमा कौतुक कला नखि सुनि मुनि मोहैं सो समाज ज्यों कहि
सके ऐसो कवि को है ७ लगे पढ़न रक्षा रिचा ऋषिराज बिराजे गा
न सुमर्हरि जय जय बहु बाजन बाजे भये अमंगल लंक में संक
संकट गाजे भुअन चारि दश के बड़े दुख दारिद भाजे ८ बाल वि
लोकि अथर्वनी हंस हरि हि जनायो शुभ को शुभ मोद मोद को राम
नाम सुनायो आलु बाल कलकौ शिशु दल बरण सुहायो कन्द

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

आनन्द कोजनु अंकुरि जायो ६ जोहि जानि जपि जोरिके करपुट पुर रखि जय जय जय करुणा निधे सादर सुर भाषसत्य सिंधु सांचे सद जिग्रा स्वरआवें प्रणत पाल पावे सहीजे फलस मिलावें २० भूमिदेव सुर देखिकै नरदेव सुखारी बालसचिव सेवक सखापट चारि भंडारी देहु जाहि जोइ चाहिए सनमानि सम्भा री लगेदेन हियहर्षि के टेरि टेरि हंकारी २१ राम निछावरि लेनको दूरि होतभिषारी बहुरि देत तेह देखिये मानहुं धन धारी भरतल षण रिपु दवन हूं धरे नाम बिचारी २२ भये भूपबालक निके नाम नि नूप मनीके गये पूंच संकट मिटे नबते पुरतीके सुफलम नोरथ विधि किए सव विधिसव ही के अबहेहू गाये सुने सवके तु लसी के २३ ६ राग बिलावल सुभाग सेज सोहति कौपल्या तु चिरराम शिशु गोद लिये वारवार विधु बदन विलोकत लोचन चा रु चकोर किये कवहुं पौढि पय पान करावति कवहुं करारवति राहि यें वाल के लिगावति हूललावति पुलकति प्रेमपियूषपिये विधिम हेशमुनि सुरसिहात सवदेखत अंवर ओट दिये तुलसिदास अस सख रघुपतिपै काहू तो पायो नविये ७ राग सोरठ हैं दैलालकव हिंबडे वलिमैया राम लखण भावते भरत रिपुदमन चारु चहु भैया बाल विभूषण वसन मनोहर अंगनिविरचिवनैहों छगण मगणमि लि अजिरखेलि हौ ठुमुकि ठुमुकि कवधैहो कलवल वचन तोतरी मंजुल कहि मामोहि वुलैहो पुरजन सचिव राव रानी सवसेवक सखा संहेली लैहें लाचन लाहु सुफल लखि फलित मनोरथ वेली जा सु ख कीलालसाल टू थिव शुक सनकादि उदासी तुलसी नेहि सुख सिन्धु कौशिल्या मगन प्रेम पथ प्यासी ८ पगनिकव चलिहो चारो भैय प्रेम पुलकि उरलाए सुअन सवकहति सुमित्रा भैया सुंदरतन

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

शिसु वसन अभूषण नख सिख निरखि निकैया दलि तृण प्राण निछा
वरि करि करि लैहैं मात वलैया किलकनि नटनि चलनि चित-
वनि भजि मिलनि मनोहरतैया मणि खंभनि प्रति विम्ब झलक
छवि छलकिहि भरि अंगनैया वाल विनोद मोद मञ्जु विधु ली-
ला ललित जोहैया भूपति पुण्य पयोधि उमगि घर घर आनंद ब-
धैया ह्वै है सकल सुकृत सुख भाजन लोचन लाहु लुटैया अनाया
स पाइ है सो जन्म फल तो नर बचन सुनैया ॥ भरत राम रिपुदवन ल-
खण के चरित सरित अन्हैवैया ॥ तुलसी तबज्यौं अजहुं जानिबे
रघुवर नगर बसैया ॥ ९ ॥ चुपरि उवटि अन्हवायके नयन आं-
जे रचि रुचि तिलक गोरोचन को कियो है ॥ भ्रूपर अनूप मसिबिन्दु वारे वा-
रे वार विलसत शीस पर हेरि हरु हियो है ॥ मोद भरि गोद लिये लालति सु-
मित्रा देखि देव कहे सब को सुकृत उपवियो है ॥ मातु पितु प्रिय परिज-
न पुरजन धन्य पुण्य पुञ्ज पेखि पेखि प्रेमरस पियो है ॥ लोहित ललित ल-
घु चरण कमल कर चलि चाहि सुछवि सुकवि जिय जियो है ॥ वाल केलि वात वस झ-
लकि झलमलत शोभा की दिअढ मानो रूपदीप दियो है ॥ राम शिशु सानुज च-
रित चारु गाइ सुनि सुजन निसादर जनम लाहु लियो है तुलसी विहाय दशरथ
दशचारि पुर ऐसे सुख योग विधि विरच्यो न वियो है ॥ १० ॥ राम शिशु गोद महामोद
भरे दशरथ कौशिल्हु ललकि लषण लाल लयो है भरत सुमित्रा लये कैक-
यी सम न सत्रु तन प्रेम पुलक मगन मन भयो है मेढी लटकन मणि कनक रचित
वाल भूषण वनाइ आछे अङ्ग अंग ठयो है चाहि चुचुकारि चूमि लालत लावत
उर तैसे फल पावत जैसे सुवीज वयो है घन ओट विबुध विलोकि वर्षत फूल अनु-
कूल वचन कहत नेहमयो है ऐसे पितु मातु पूत पुर परिजन विधि जानियत आ-
यु भरि रई निर्मयो है अजर अमर होहु करें हरि हर होहु जठर जठेरिन आशिर्वा-
ददयो है तुलसी सराहैं भाग तिनके जिनके हियें डिंभन राम रूप अनुराग रं-
गयो है ॥ ॥ ॥ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

...धवो ॥ आजु अनरसेहैं भोर के पय पियत ननीके रहत न बैठे
ठाढ़े पालने भूलनहुं रोवत राम मेरो॥ सोच्यो चु सबही के देव पितर यह पूजियेतु
लातो लिये घीके नदपि कबहुं कबहुं सखि रैसेही आरत जब परत दृष्टि दुष्टनी
के बेगि बोलि कुलगुरु छुयें माथो हाथ अमीके सुनत आइ ऋषि कुश हरेनरसिंह
मंत्र पढ़ि जो सुमिरत भय भीके जासु नाम सर्व शरस दा शिव पार्वती के नाहिं रु रावनि
कोशिला यह रीति प्रीति निकी हियहु लसनि तुलसीके १२ माथो हाथ ऋषिजवदिये
रामकिलकन लागि महिमा समुझि लीला विलोकि गुरु सजलनयन तनपुलक
रोम जागे लिये गोद धाये गोद तेमोद मुनि अनुरागे निरखि मात हर्षि हिये
आली औटकहति मृदु वचन प्रेमके सेपागे तुम्ह सुरतरु रघुवंशके देत अ
भिमत मांगे मेरे विशेषि गति रावरी तुलसी प्रसाद जाके सकल अमङ्गल
भागे १३ अमिय विलोकनि करि कृपा मुनिवर जब जोए तब ते राम अनुभर
तलषण रिपुदवन सुमुख सखि सकल सु अनसुख सोए लाय सुमित्रा लिये
हिये फणी मणि ज्यों गोए तुलसी निछावरि करत मातु अति प्रेम मगन मनस
जल सुलोचन कोए १४ मात सकल कुलगुरु वधू प्रिय सखी सुहाई सादर सब मङ्ग
ला किये महि मति महेश पर सवनि सुधेनु दुहाई बोलि भूप भूसुर लिये अति विनय
बड़ाई पूजि पाय सनमान दान दिय लही असीस मुनिवर्षै सुमन सुरसांई घरघ
र पुर बाजन लगी आनंद बधाई सुख सनेह तेहि समयको तुलसी जानै जाको
चोखो चित चहु भाई १५ राग धनाश्री ॥ या शिशुके गुण नाम बड़ाई को कहि सकै
सुनहुं नर पति श्रीपति समान प्रभुताई यद्यपि बुधि वय रूप शील गुण समय चारु
चारयो भाई तदपि लोक लोचन चकोर शशि राम भक्ति सुखदाई सुर नर मुनि
करि अभय दनुज हति हरिहि धरणि गरु आई कीरति विमल विश्व अघमो
चनि रहिहि सकल जग छाई याके चरण सरोज कपट तजि जो भजिहै मन
लाई सकल सुगल सहित तरिहै भव यह नक छू अधिकाई सुनि गुरु वचन
पुलकि तन दम्पति हर्षन हृदय समाई तुलसिदास अवलोकि मातु सुख प्रभु
मन मे मुसुकाई १६ राग विलावल ॥ अवध आजु आगमी एक आयो करत

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लनिरखि कहै सबगुणगण बहुतनि परिचो पायो बूढो बडो प्रमाणिक ब्राह्मण शं
कर नाम सुहायो संगशिसुशिष्यसुनतकौशल्या भीतर भवन बुलायो पायपखा
रि पूजि दिय आसन असन वसन पहिरायो नेले चरण चारु चाख्यो सुनमाथे हाथ
दिवायो नखशिषबाल विलोकि विप्र तनुपुलकनयनजल छायो लैलै गोदकम
लकरनिरखत उरप्रमोद अनुमायो जन्मप्रसंग कह्यौ कौशिक मिसुसीयस्वयम्बर
गायो राम भरत रिपुदवन लखण कोजयसुखसुयशसुनायो तुलसिदास रनिवा
सरहसवश भो सबको मन भायो सनमान्यो महिदेव अशीशत सानंद सदन
सिधायो १७ रागकेदारा ॥ पौढिये लालपालने हौं झुलावौं करपदमुख चखक
मल लसत लखिलोचन भ्रमर भुलावौं बालविनोद मोद मंजुलमणि किलक
निखानि खुलावौं तेइ अनुराग ताग गुहिवे कहै मति मृगनयनि बुलावौं तुलसी भणि
त भली भामिनि उरसो पहिराइ फुलावौं चारु चरित्त रघुवर तेरे हि मिलिगाइ चरण चि
तुलावौं १८ सोई लाल लाडिले रघुराई मगन मोद लियगोद सुमित्रा बार बार बलिजा
ई हंसे हसत अनरसे अनरसत प्रतिबिंबनि ज्यों झांई तुम सबके जीवनके जीवनस्क
लसुमंगलदाई मूल मूलसुरवीथिवेलि तमतोमसुदल अधिकाई नखतसुमन
भविटपवोडि मनुछटाछटकि छविछाई हौं जंभात अलशात तात तुव बानि
जानिमैं पाई गाइ गाइ हलराइ वोलिहों सुखनीदरी सुहाई बछरु छौना छग
न मगन मेरे कहति मल्हाइ मल्हाई सानुज हिय हुलसति तुलसी के प्रभुकि
ललित लरिकाई १९ ललन लोने लरु आबलि मैया ॥ सुखसोइ ए नीद वरि
या भइ चारु चरित चहूं भैया ॥ कहति मल्हाइ लाइ उर छिन छिन छगन छबी
ले छोटे छैया मोद कन्द कुलकुमुदचन्द मेरे रामचन्द्र रघुरैया रघुवर बालके
लि संतनकी सुभग सुभुद सुरगैया ॥ तुलसी दुहि पीवन सुखजीवन पयसुप्रेम
घनघैया २० सुखनीद कहति आलि आइहो रामलखण रिपुदवन भरत शि
सु करि सनसुमुखसोवाइहो रोवनि धोवनि अनखानि अनरसनि डिठि मिठि
निठुर नशाइहौं हंसनि खेलनि किलकनि आनन्दनि भूपति भवन वसाइहौं
गोदविनोद मोदमय मूरति हरषि हरषि हलराइहौं ननु नित नित लक रि वारि राम

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

परलेहैंरोगवलाइहों रानीराउसहितसुतपरिजननिरखिनयनफलुपाइहों चारुचरितरघुवंशतिलककेनहंतुलसिहिंमिलिगाइहों२१राग असावरी कनकरत्नमयपालनोरच्यौमनहुंमारसुनहार विविधिखेलोनाकिंकिनी लागेमंजुलमुक्ताहार रघुकुलमंडनराम लल्ला१जननिउवटिअन्हवाइकैम णिभूषणसजिलियेगोद पादायेपटुपालनेशिशुनिरखिमगनमनमोदुदशरथ नंदनरामलला२मदनमोरकीचंद्रिकाझलकनिनिंदरनितनुज्याति नीलक मलमणिजलदकीउपमाकहेलघुहोति अतिसुकृतफलरामलल्ला३ल घुलघुलोहिततललसितहैंपदपाणि अधरअरुकरंग कोकविजोबकविकाहि शकैमरवशिखसुंदरसव अंग परिजनरंजनरामलला४पगनूपुरकटिकिं किणीकरकंजमपहुंचीमंजु हियहरिनरव अद्भुतनवज्योमनोमनसिजमणिग णगंजु पुरजनसुरमणिरामलला५लोचननीलसरोजसेभूपरमसिविंदु विराजजनुविधुमुखछवि अमियकोरसकराख्यो आज शोभासागररामलला ६गमुआरीअलिकावलि लसैलटकनललितललाट जनुउडगणविधु मिलनकोचलेनमविहारिकैरिवाट सहजसुहावनरामलला७देखिखेलौना किलकहींपदपाणि विलोचनलोल विचित्रविहंग अलिजलजज्योंसुखमास रकरतकलोल भक्तकल्पतरुरामलला७वालवोलिविनुअर्थकेसुनिदेतप दारथचारि जनुइनवचननतेंभयेसुरतरुतापसत्रिपुरारि नामकामधुकराम लला६सखीसुमित्रावारहींमणिभूषणवसनतिभाग मधुररुलाइसलहावहीं गावहिंउमगिउमगिअनुराग हैंजगमंगलरामलला१०मोतीजायोसीपमें अदितिजयोजगभानु रघुपतिजायोकोशिलागुणमंगलरूपनिधानु भु वनविभूषणरामलला११रामप्रगटजवतेंभये गयेसकलअमंगलमूलगीतसु दिनदिनदिनहैंनितवैरिनकेउरसूल भवभयभंजनरामलला१२अनुजस खाशिशुसङ्ग लैखेलनजैहैंचोगान लाड़ूनरवरभरपैरेगोसुरपुरवाजिहैंनि मान रिपुगणगंजनरामलला१३रामअहेरेचलहिंगेजवगजरथवाजिसंवारि दसकधरउरधकी अवजनिधावैधनुधारि अरिकरिकेहरिरामलला१४गीतसु

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मिचासाखिनके सुनिसुनिसुरमुनि अनुकूल द्वय अग्रीआजपजय कहैं हूँ मैं वैवैं
फूल सुरसुखदायकरामलल्ला २५ बालचरितमय चंद्रमा यह सोरहकलानि
धानचितचकोरतुलसी कियोकरै प्रेमअमीरसपान तुलसीके जीवनरामल
ला २६ २२ रागकाह्नरा ॥ पालनेरघुपतिहि झुलावहि लैलैनामसप्रेमसरसस्व
रकोशल्याकलकीरतिगावै केकि कण्ठद्युतिश्यामवरणवपुबालविभूषणविर
चवनाये अलकैंकुटिलललितलटकनभ्रूनीलनलिनद्वौनयनसोहाये शिशु
सुभावसोहतजवकरगहिवदननिकटपदपल्लवल्याये मनहुंसुभगयुगभुजग
जलजभरिलेतसुधाशशिसोंसुचिपाये उरअनूपविलोकिखेलौनाकिलकतपु
निपुनिपाणिपसारत मनहुंउभयअम्भोजअरुणसोंविधुभयविनयकरतअ
तिआरत तुलसिदासबहुवासविवशअलिगुंजत सोनहिजातबखानी मनहुं
सकलश्रुतिरिचामधुपह्वैविसदसुयशवरणतवरबानी २३ रागविलावल ॥ झूल
तरामपालनेसोहैं भूरिभागजननीजनजोहैं तनमृदुमंजुलमेचकताई झलक
तिबालविभूषणझांई अधरपाणिपदलोहितलोने सरसिंगारभवसारससोने
किलकतनिरखिविलोलखेलौना मनहुविनोदलरतछविछौना रंजितअंज
नकंजविलोचन भ्राजतभालतिलकगोरोचन लस्यौमसिविंदुवदनविधुनीके
चितवतचितचकोरतुलसीके २४ रागकल्याण ॥ राजतशिशुरूपरामसकलगु
णनिकायधामकौतुकीकृपालब्रह्मजानुपाणिचारी नीलकञ्जजलदपुञ्ज
मरकतमणिसरिसश्यामकामकोटिशोभाअंग अंगनूपुरवारी हाटकमणिर
तखचितचितइंदुमंदिरनिवाससदनविधिरच्यौसंवारी विहरतनृपअजिर
अनुजसहितबालकेलिकुशलनीलजललोचनहरिमोचनभयभारी अरुण
चरणअंकुशध्वजकंजकुलिशचिन्हरुचिरभ्राजतअतिनूपुरवरमधुरमुखरका
री किङ्किणिविधिजालकम्बुकण्ठललितमालउरविसालकेहरिनखकङ्कन
करधारी चारुचिबुकनासिकाकपोलभालतिलकभृकुटिश्रवणअधरसुंदर
द्विजछविअनुपमन्यारी मनहुं अरुणकंजकोशमंजुलयुगपांतिप्रसवकु
न्दकलीयुगलयुगलपरमसुभवारी चिक्कनचिकुरावलीमनोषडंग

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धिमरडुली वनी विशेषगु ञ्जनजनु वालक किलक कारी दुकटक प्रतिविम्ब
निरखिपुलकन हरिहर्ष लैउछंगजननी रसभंग जियविचारी शेषहुंसन
कादिशंभुनारदादिसुकमुनीशकरतविविधु योग काम क्रोध लोभजारी द॰
शदशगृह सोइउदार भंजनसंसार भार लीलाऽवतार तुलसिदास त्रास
हारी २५ रागकान्हरा॥ अंगन फिरत घुटुरुवन धाये नीलजलजतनश्या
मरामशिशु जननिनिरखि सुखनिकट बुलाये वंधुकंससमनुऽरुणपदपंकज
अंकुशप्रमुखचिह्न वनिआये नूपुरजनुमणिवरकलहंसनिरचेनीड दै
वाहुवसाये कटिमेखलवरहारग्रीवदररुचिर वाहुभूषणपहिराये उरश्री
वत्समनोहर हरिनखहेममध्यमणिगणवहुलाये सुभगचिवुक द्विज
अधरनासिका श्रवण कपोल मोहिऽतिभाये भूसुन्दर करुणारसपूर
णलोचनमनहुं युगलजलजाये भालविशाल ललितलटकनवरवा॰
लदशाके चिकुरसुहाये मनुद्वौगुरु शनिकुजऽगे करि शशिहि मिलनत
मकेगणआये उपमारुक अभूत भई तव जव जननीपट पीतउढाये नील
जलद पर उडुगणनिरखिततजिसुभावजनुतडितछपाये अंगअंगपर
मारनिकर मिलिछविसमूह लैलैजनुछाये तुलसिदासरघुनाथरूपगुण
तौ कहौं जो विधि होहि वनाये २६ रागकेदारा॥ रघुवरवालछवि कहौंव
रणि सकलसुखकी सींव कोटिमनोजशोभाहरणि रुचिरनूर किंकिनी
मनुहरतिरुनुझुनु करणि वसी मानहुं चरण कमलनि अरुणतानजितर
णि मञ्जुमेचक मृदुलतनु अनुहरति भूषणभरणि मनहुं सुभगशिंगार
शिशुतरुफस्यो अद्भुतफरणि भुजनिभुजगसरोजनयननिवदनविधु
जित्यौलरणि रहे कुहरनिसलिलनभउपमाऽपरदुरितडरणि लसतक
रप्रतिविम्बमणिआंगनुघुटुरुवनिचरणि जलजसंपुटसुछविभरिभरिधर
निजनु उरधरणि पुण्यफल अनुभवतिसुतहि विलोकि दशरथघरणि
वसति तुलसीहृदयप्रभुकिलकनिनटनिलरखरणि २७ नेकु विलोकि॰
धौंरघुवरणि चारिफलत्रिपुरारितोकौंदयोहै नृपघरणि वालभूषण

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वसनसुंदर रुचिर राज भररी॥ परस्सर खेलनि अजिरउ ठि चलनि गिरि गिरि
पररी॥ रुकनि झुंकनि छांह सो किलकनि नटनि हठि लररी॥ तोतरी वोलनि
विलोकनि मोहनी मनुहररी॥ सखिवचनसुनि कोशिला लखि सुठर पारेट
ररी॥ लेति भरि अङ्कूरौं त्तति पैन जनु दुह्नु कररी॥ चरोतनि रखत विवुधतुल
सी ओटर दै जल धररी॥ चहत सुर सुरपनि भयो सुरपति भयो चहै तररी॥
२९ रागजयतिश्री ॥ भूमितल भूपके सोना॥ राम लखण रिपुदवन भरत शि
सुनिरखत अति अनुराग वाल विभूषण लसत पाइ मृदु मंजुल अंगवि
भाग दशरथसुकृतमनोहरविरवनिरूप करहु जनु लागराज मरालविर
लविराजत विहरत जेहर हृदय तडाग नेन पअजिरजानु पारी॥ धावन
धरण चट कचलकाग सिद्ध सिहात सराहत मुनिगणाक है सुरकिन्नरना
ग है चरुविहंगविलोकियै वालक वसिपुर उपवनवाग परिजनसहितरा
यरानिह्न कियोमज्जन प्रेम प्रयाग तुलसी फल चारो ताके भरी॥ मरकनपं
कजरज २१ रागअसावरी ॥ छगणमगण॥ अंगन खेलचानरु चारौ भाई
सानुज भरत लाल लक्षण राम लोने लोने लरिका लखि मुदित मातसमुद
ई वाल वसनभूषण धरें नखशिखछवि छाई नीलपीत मनसिजसरसि
जमंजुल मालनि मानो है देहनितें द्युति पाई ठुमुकु ठुमुकु पगधररी॥ न
टनि लरखरणि सुहाई भजनि मिलनि रूठनि टूठनि किलकनि अवलो
कनि वोलनि वरणी न जाई जननि सकल चहुँ ओर आलवाल भरी॥
अंगनाई दशरथ सुकृत विवुधविर रावलि सुनविलो किजनु विधिवर
वारि वनाई हरि विरंचि हर हेरि रामप्रेमपरवश नाई सुख समाज रघुरा
जके वरणत विशुद्ध मनसुरनि सुमगन्दरि लाई सुमिरत श्रीरघुवीरय
की लीला लरिकाई तुलसिदास अनुराग अवधि आनन्द अनुभवतत
वकोसो अजहु अघाई २० रागविलावल ॥ आंगन खेले आनन्दकन्द
रविकुल कुमुद सुखद चहुं चन्द॥ सानुज भरत लखण संग सोहैं शिशुभू
षण भूषित मनमोहै ननु द्युति मोर चंद्र जिमि झलकै मनहुं उमगि अंग अंग

दविछलकै कटिकिंकिनिपायैजनिवाजैं पंकजपाणि पहुंचिआंराजे कछु लाकरछवघनहानीके नयनसरोजमयनसरसीके लटकन लसनललाट लटूरी दमकत है है दंतुरिआंरूरी मुनिमन हरति मंजुमसिवुन्दा ल॰ लितवदनवलिवालमुकुन्दा कुलही चित्रविचित्र रूगूलीं निरखहिं मातमुदित अतिफूली गहिमणिखंभनिडिग डिगडोलत कलवलवच ननोतरेवोलत किलकतनुकिरांकत प्रतिविम्वनि देत परम सुख पितु अरु अम्वनि ॥ सुमिरत सुखमाहियहुलसी है गावत प्रेमपु॰ लकितुलसी है ॥ ३१ ॥ रागकान्हरा ॥ ललित सुनहि लाललसिचुपा यें कोशिल्याकलकनकअजिरमहिसिखवतिचलन अंगुरि आंला यें ॥ कटि किंकिनी पैंजनी पायनिवाजतिरुनुरुनिमधुरेगायें पहु॰ चीकरनि कंठकठुला वन्यो केहरि नखमणिजरितजरायें पीनसुची रवि चित्रअंगुलियासोहतिश्यामशरीरसुहायें दति आं दै दै मनोहर मुख छवि अरुण अधरचित लेत चोरायें ॥ चिवुक कपोल नासिका सुन्दर भालतिलक मसिविन्दुवनायें ॥ राजत नयन मञ्जुल युतखञ्ज नकञ्ज मीन मद नायें लटकनिचारु भ्रकुटिआं टेढी मेढी सुभगसुदे हसुभायें किलकिकिलकिनाचत चुटकी सुनिडुरपतजननिपाणि छुटकायें गिरत घुटुरुवनिटेकिउठि अनुजनितोतरिवोलत पूप खायें वालकेलि अवलोकिमात सव मुदितमगन आनंद अनभाये देखतनभघन ओटचरितमुनियोगसमाधिविरति विसरायें तुल सिदासजेरसिकनयेहिरसतेनरजनजडजीवतजगजायें ३२ रागल लित ॥ छोटी छोटी गोडिआं अंगुरिआंछवीली छोटी नखजोति॰ मोती मानो कमल दलनिपर ललित आंगन खेलैं ठुमुकुठुमुकुचलैं रुनुरुनुपायपैंजनी मृदुमुखर किंकिनीकलित कटि हार करलजटि मंजु कर कजनि पहुंचिआं रुचिरतर पियरीझीनझगुली सांवरे शरीरखुली वालकदामिनि ओढिमानो वारे वारिधर उरवघ नहा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ट कण्ठ कठुला भूंडले केशनमें ठीलटकनमसिविन्दुमुनिमनहु
र अंजनरञ्जितनयना चित चोरे चितवनि मुखशोभापरवीर अ
मित असमशर चुटुकीवजावतिन चावतिकौशल्यामातावालके
लिगावतिमल्हावति प्रेमसर किलकि किलकि हँसैं दैदंतुरि
यां लसैं तुलसीके मन वसैं तोतरे वचनवर ३३ सादरसुमुखि विलो
कि राम शिशु रूप अनूप लिये कनियां ॥ सुंदर श्याम सरोज वरणतन॰
नसव अंग सकल सुखदनियां ॥ अरुण चरण जानि जगम
गतिरुनु झुनुकरति पाय पैंजनियां ॥ कनकरत्न मणि जटितरटि
त कटि किङ्किनि कलित पीत षटतनियां ॥ पहुंची करनिपरि
कहरिनखउर कठुला कण्ठमंजु जगमणियां ॥ रुचिर चिवुक
रद अधर मनोहर ललित नासिका लसति नथुनियां ॥ विकरभृकु
टि सुखमानिधि आनन कलक कपोलकान निनगफनियां ॥
भाल तिलक मसि विन्दु विराजत सोहतिशीश लाल चौतनियां ॥
मन मोहनी तोतरी वोलनि मुनि मन हरणि चोहसनिकिलकि॰
नियां ॥ वालसुभाय विलोलविलोचन चोरतचितहि चारुचितवनि
यां ॥ सुनिकुलवधू रोखनिझांकति राम चन्द्र छवि चन्द्रवदनियां
तुलसिदास प्रभु देखिमगन भई प्रेम विवश कछु सुदिधिन अपानयां
३४ ॥ रागविलावल ॥ सोहत सहज सुहाये नयन ॥ खञ्जनमीन॰
कमल सकुचत तव जव उपमा चाहत कविरयन ॥ सुंदर सव अङ्ग
नि शिशु भूषण राजत जनु शोभाये लयन ॥ वडो लाभ लोभ वशर
हिगये लखि सुखमा वहु मयन ॥ भोरभूपलिये गोदमोद भरे निरखि
तवरसुनतकलवयन वालकरूप अनूप राम छवि निवसति तुल
सिदास उर अयन ३५ ॥ रागविभास ॥ भोरभये जागहु रघुनंद
न ॥ गत वालीक भक्तन उर चन्दन शशिकर हीन सीनदितितारे ॥
तम तुरमुखर सुनहु मेरे प्यारे निक सित कञ्ज कुमुद विलखाने

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सैपरागरस मधुप उडाने ॥ अनुजसखा रावबोलन आवे वन्दिन अति
पुनीत गुण गाये मन भावनो कले वो कीजे ॥ तुलसिदास कहुं जूठ न दीजै
३६ प्रात भयो तात वलमात विधुवदन पर मदनवारों कोटिउठो प्राणप्य
रे ॥ सूत मागध वन्दी वदत विनुदावली द्वार शिशु अनुज प्रियतम अति
हारे ॥ कोक गतशोक अव लोकि शशि हीन छवि अरुण भये गगन
कर रुचिर भरगतारे ॥ मनहुं रवि वाल मृगराजन मनि कर करि दलित
अति ललित मणिगण विथारे ॥ सुनहुं तमचुर मुखर कीर कलहंस पिि
कके करवक लित वोलत विहंगवारे ॥ मनहुं मुनि वृन्द रघु वंशमणि॰
रावरे गुण आश्रम निवस परिवारे ॥ सरनि विकशित कञ्ज पुञ्ज मकर
न्द वर मञ्जुलतर मधुकर गुंजारे ॥ मनहुं प्रभु जन्म सुनि वयन अमरा
वती इन्दिरा तन्द्रि मन्दिर संवारे ॥ प्रेम सम्मिलत वर वचन रचना अक
निराम राजीव लोचन उघारे ॥ दास तुलसी मुदित जननि करे आरती
सहज सुंदर अजिर पाउ धारे ३७ ॥ जागिये कृपानिधान जानराय रामचं
द्र जननी कह वार वार भोर भयो प्यारे ॥ राजिव लोचन विशाल प्रीति॰
वापिका मराल ललित वदन उपर मदन कोटि वारिडारे ॥ अरुण उदि
त विगत सर्बरी शशांक किरनहीन दीनदीपक जोति मलिन द्विति
समूह तारे मनहुं ज्ञान घन प्रकाश वीते सब भव विलास आस त्रास
तिमिर तोष तरणितेज जारे वोलत खगनिकर मुखर मधुर कर प्रती॰
ति सुनहु श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम वारे मनहुं वेद वन्दी मुनि
वृन्द सूत मागधादि विरुद वदत जय जय यति कैटभारे ॥ विकसित
कमलावली चले प्रपुञ्ज चञ्चरीक गुञ्जत कल कोमल धुनि त्यागि क
ञ्ज न्यारे ॥ जनु विराग पाइ सकल शोक कूप गृह विहाय भृत्य प्रेम
मत फिरत गुण निहारे ॥ सुनत वच प्रियरसाल जागे अतिसय दया
ल भागे जंजाल विपुल दुःख कन्द म्वन टारे ॥ तुलसिदास अति अनं
द देखिके मुखार विन्द छूटे भ्रम फन्द परम मंद द्वन्द भारे ३८ ॥ वोलत अ

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वनियकुमार ठाढे नृपभवन द्वार रूप शील गुण उदार जागहु मेरे प्यारे ॥ विलषित कुमुदिनि चकोर चक्र वाक हर्ष भोर करत सोर तमचुर खग गुञ्जत अलि न्यारे ॥ रुचिर मधुर भोजन करि भूषण सजि सकल अंग संग अनुज बालक सब विविधि विधि सवारे ॥ करतल गहि ललित चाप भंजन रिपु निकर दाप कटि तट पट पीत तूण सायक अनि आरे ॥ उपवन मृगया विहार कारण गवने कृपाल जननी मुख निरखि पुण्य पुञ्ज निज विचारे ॥ तुलसिदास संग लीजै जानि दीन अभै कीजै दीजै मति विमल गावै चरित वृति हारे ॥ ३९ ॥ राग नट ॥ खेलन चलिये आनंदकन्द ॥ सखा प्रिय नृपद्वार ठाढे विपुल बालक वृन्द न्यषित तुम्हरे दरश कारण चतुर चातक दास ॥ वपुष वारिद वर्षि छवि जल हरहु लोचन प्यास ॥ वन्धु वचन विनीत सुनि उठे मनहु केहरि वाल ललित लघु सर चाप कर उर नयन वाहु विशाल चलन पद प्रतिविम्ब राजत अजिर सुखमा पुञ्ज ॥ प्रेमवस प्रति वरण महिमनोदेनि आसन कञ्ज ॥ निरखि परम विचित्र शोभा चकित चितवहिं मात ॥ हर्ष विवसन जात कहि निज भवन विहरहु तात ॥ देषि तुलसीदास प्रभु छवि विहि सब पलरोकि ॥ थकित निकर चकोर मानहु सरद इन्दु विलोकि ४० विहरत अवध वीथिन राम ॥ संग अनुज अनेक शिशु नवनील नीरद श्याम ॥ तरुण अरुण सरोज पद बनिक नकभय पद त्राण ॥ पीत पट कटि तूण वर कर ललित लघु धनु वाण ॥ लोचनन्नि को लेत फल छवि निरखि पुर नरनारि ॥ वसत तुलसीदास उर अवधेश के सुत चारि ॥ ४१ ॥ राग नट ॥ करतल शोहत वान धनुहियां खेलत फिरत कनक आंगन पैपायन्द लाल वनहियां ॥ दशरथ कुसुद इन्दु चिंतामनि प्रगटे भूतल महियां ॥ हारिद रवन मोह तम नाशन सुखदायक महि महियां ॥ जो सुख तिहूं लोक मे नाहीं सो पै यन प्रभु पहियां ॥ तुलसी जन्ममरण भक्तन को नेरु वारत दैव हियां ॥ ४२

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जैसे राम ललित तैसे लोने लछमन लाल * तैसेई भरत शील सुख मास नेह
विधि तैसेई सुभग सङ्ग सत्रु साल धरे धनुसर कर कसे कटि तर कशि
पीरे पट ओरें चले चारु चाल अंग अंग भूषण जराय के जगमग।
तहरत जनके जीके ति मिरजाल * खेलत चौहट घाट वीथी वाटिका।
नि प्रभु शिवसु प्रेम मानस मराल * सोभादान दैदै सन मानतया चक
जानि करत लोक लोचन निहाल * रावण दुरित दुख दले सुर कहैं।
राजु अवध सकल सुखके सुकाल * तुलसी सराहैं सिद्ध सुकृत कोश
ल्या जू के नैसै भूरिभाग भाजन भुआल ४३ राग ललित * ललित
ललित लघु लघु धनुसरकरै तै सीतर कशि कटि कसे पट पियरे * ल।
लित पनही पाय पै जनी की किंकिन धुनि सुनि सुख लहे मनरहे नितनिये
रे पहुंची अंग रचा उ हृदय पदिक हा रु कुण्डल तिलक छवि गडी
कलि जिपरे * शिर टेढी पागें लाल नीरजनयन विशाल सुन्दर खवदन
ठादे सु सुभग सकल अंग * अनुज बालक संग देखे नर नारि
रहे ज्यों कुरङ्ग दियरे * खेलत अवध खोरि गोला भौंराय कडोरी मूरति
मधुर वसे तुलसी के हियरे ४४ छोटिये धनुहियां पनहियां पगनि छो
टी छोटिये कछौटी कटि छोटियेन रकशी * लसनि रुंगुली झीनी दामि
नी की छवि छीनी सुन्दर वद शिर पगिया जर कशी * दय अनु हरत वि
भूषण विचित्र अङ्ग जोहे जिय आवति सनेह की सर कशी * मूरति की
सूरति कही न परे तुलसी पै जानै सोइ जाके उर कसे के कर कशी ४५
* रागटोडी * राम लषण एक ओर भरत रिपुदवन लाल एक ओर भ
ये * सरजु तीर सम सुभग भूमितल गणि गुणि गोहियां वांटि लये * कन्दु
क के लि कुशल हय चढि चढि मन कसि कसि ठोकि ठोकि खये * करक
मलन विचित्र चौगानै खेलन लगे खेल रिझये * व्योमविमानन विवुध
विलोकत खेलक पेषक छांह छ्ये * सहित समाज सराहि दशरथहि
वर्षत निज तरु कुसुम चये * एक लेत वढ त येक फेरत सब प्रेमप्रमे

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रवि नोर भये येक कहत भइ है राम जूकी एक कहत भैया भरत ज
ये प्रभुवक सत गज बाजि बसन मणि जय धुनि गगन निसान हये पाइ
सखा सेवक याचक भरि जीवन दूसरा द्वार गये नभपुरपरति निछावर
जहंतंहं सुर सिर निवरदान हये भूरि भाग अनुराग उमगि ले गाव।
तसुनन चरित नितये हारे हर्ष होन हिय भरत हि जीते सकुचि शिरन।
यन नये तुलसी सुमिरि सुभाय शीलगुण सुकृती जोये हि रंगरये ५६ खे
लिखेलिसु सेलन हारे उतरि उतरि चुचुकारि तुरंग निसादर जाइ जो
हारे बंधु सखा सेवक सराहि सनमानि सनेह सभारे दिये वसन गज।
बाजि साजि शुभसाज सुभांति सवारे मुदित नयन फल पाइ गाइ।
गुण सुर सान न्द सिधारे सहित सभा अजमंदिर कहुं राम राय पगु
धारे भूपभवन घरघर घमण्ड कल्याण को साह सभारे ॥ निरीष हर्षि।
आरती निछावरि करत शरीर विसारे ॥ नितये सङ्कल मोद ग्रव धसव
विधिसव लोग सुखारे ॥ तुलसी तिन समते जिन के प्रभु ते प्रभु चरित
पयारे ५॰ राग सारङ्ग॥ रहत महामुनि याग जये ॥ नीच निशाचर देत दुस
ह दुख कृशतनु तापत्रयो ॥ शाप जापन यनि हर तवसमवत वय हमंच
दयो ॥ विप्रसाधुसुरधेनु धरणि हित हरि अवतार लयो ॥ सुमिरत श्री सारं
ङ्गपाणि छनमें सबसोचगयो ॥ चले मुदित कौशिक कोशल पुर शगुननि।
साय दयो ॥ करतमनोरथ जातपुलकि प्रगटत आनन्द नयो ॥ तुलसी
प्रभु अनुराग उमगि मङ्गल मूलभयो ५८ आजु सकलसुकृत फल।
पाइहौं ॥ सुखकी सींव अवधि आनंद की अवधि विलोकि हौं
जाइहौं ॥ सुतनिसहित दशरत्थ हिं देखिहौं प्रेम पुलक उर लाइहौं
॥ रामचंद्र मुख चंद्र सुधा नैन चकोर निप्याइ हौं ॥ सादर समा
चार न्रप बूझिहैं हौं सब कथा सुनाइहौं ॥ तुलसी है कृत कृत्य आश्रमहिं
रामलखन लैआइ हौं ॥ ५९ रागनट देखि मुनि सके पद आजुभ
यो प्रथम गणतीमें अब तें जहं लौं साधुसमाजु ॥ चरणबन्दि कर जो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रिनि होरत कहिय कृपा करि काजु ॥ मेरे कछु न अदेय राम बिनु देह गेह स·
वराजु ॥ भली कही तुम्ह सों त्रिभुवन मे को सुकृती जिरताजु ॥ तुलसी रा
मजन्म हिं ते जनियत सकल सुकृत को साजु ॥ ५० ॥ राजन राम लखण·
जो दीजे ॥ यश रावरो लाभ ढोटनि हूं मुनि सनाथ सब कीजे ॥ डर पत हों·
सांचेहु सनेह वश सुत प्रभाव बिनु जाने ॥ बूझिये वामदेव अरु कुल
गुरु तुम पुनि परम सयाने ॥ रिपु रण दलि मख राखि कुशल अति अ·
ल पदिननि घर ऐहैं ॥ तुलसिदास रघुवंश तिलक को कविकुल की
रति गैहैं ५१ ॥ रहे ठगि से नृपति सुनि मुनिवर के वचन ॥ कहि न शकत
कछु राम प्रेम वश पुलक गात भरे नयन ॥ गुरु वसिष्ठ समुझाइ कह्यो
तब हिय हरषि जाने शेषशयन ॥ सौंपे सुत गहि पाणि पाय परि भू·
सुर उर चले उमगि चयन ॥ तुलसी प्रभु जोहत पोहत चित सोहत मोह·
न कोटि मयन ॥ मधु माधव मूरति दोउ संग मानो दिन मणि गमन कि
यो उत्तर अयन ५२ ॥ राग सारङ्ग ॥ ऋषि संग हरषि चले दोउ भाई ॥ पि
तु पद वन्दि शीश लियो आय सुसुनि सिष आशिष पाई ॥ नील पीत पा
थोज वरण वपु वय किशोर वनि आई ॥ सर धनु पाणि पीत पट कटि
तट कसे निखंग बनाई ॥ कलित कण्ठ मणि माल कलेवर चन्दन
खौरि सुहाई ॥ सुंदर वदन सरोरुह लोचन मुख छवि वरणि न जाई ॥ प
लव पङ्ख सुमन शिर सोहत क्यों कहौं वेष लोनाई ॥ मनो मूरति धरि·
उभय भाग भई त्रिभुवन सुंदरताई ॥ पैठत सरनि शिलनि चढि चित
वत खग मृग वन रुचिराई ॥ सादर सभय सप्रेम पुलकि मुनि पुनि पु·
नि लेत बुलाई ॥ एक तीर तकि हती ताडका विद्या विप्र पढाई ॥ राख्यो य
ज्ञ जीति रजनीचर भै जग विदित बडाई ॥ चरणकमल रज परसि अ
हिल्या निज पति लोक सिधाई ॥ तुलसिदास प्रभु के बूझे मुनि सुरस
रि कथा सुनाई ॥ ५३ ॥ राग नट ॥ हौ राजसु अयन राजन मुनि के संग ॥ नख
शिख लोने वदन लोयन दामिनि वारिद वरण अंग शि र नि ....

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

शिखा सुहाई उपवीत पट धनु शर कर कसें कटि निखंग ॥ मानो मखरु
जनिशिचर हरिबे को सुत पावक के साथ पठ्यो पतंग ॥ करन छांह घ·
न बर्षे सुर सुमन छवि वरणत अतुलित अनंग ॥ तुलसी प्रभु विलो·
कि मग लोग खग मृग प्रेम मगन रंगे रूप रंग ५४ ॥ राग कल्याण ॥ मुनि
के संग विराजत वीर ॥ काक पक्ष धर कर कोदण्ड सर सुभग पीत पट क
टि तूणीर ॥ वदन इन्दु अम्भोरुह लोचन श्याम गौर शोभा सदन शरी
र ॥ पुलकत ऋषि अवलोकि अमित छवि उर न समाति प्रेम की भीर ॥
खेलन चलत करत मग कौतुक विलमत सरित सरोवर तीर तोरत लता सुमन
सरसीरुह पियत सुधा सम शीतल नीर ॥ बैठत विमल शिलनि विटपनि त
र पुनि पुनि वरणत छांह समीर ॥ देखत नटत केकि कल गावत मधुप म
राल कोकिला कीर ॥ नयननिको फल लेत निरखि खग मृग सुरभी व्रजव·
धू अहीर ॥ तुलसी प्रभुहिं देत सब आसन निज निज मन मृदु कमल कु·
टीर ॥ ५५ ॥ राग कान्हरा ॥ सोहत मग मुनि संग दोउ भाई तरुण तमाल चा
रु चंपक छवि कवि सुभाय कहि जाई ॥ भूषण वसन अनुहरत अंगनि
उमगति सुन्दरताई ॥ वदन मनोज सरोज लोचन निरखि लो भाई ले
ताई ॥ अंसनि धनु शर कर कमलनि कटि कसे निखंग बनाई ॥ सकल
भुवन शोभा सर्वस लघु लागत निरखि निकाई ॥ महि मृदु पथ घन छांह
सुमन सुर वर्षि पवन सुखदाई ॥ जल थल रुह फल फूल सलिल सब क
रत प्रेम पहुनाई ॥ सकुच सभीत विनीत साथ गुरु बोलनि चलनि
हाई ॥ खग मृग सुभग विचित्र विलोकन विच विच लसति ललित ल
रिकाई ॥ विद्या दई जानि विद्यानिधि विद्यहु लही बडाई ॥ ख्याल हती
ताडका देखि मुनि देत अशीश अपाई ॥ बूझत प्रभु सुरसरि प्रसंग क·
हि निज कुल कथा सुनाई ॥ गाधि सुवन सनेह सुख सम्पति उर आश्रम
न समाई ॥ वन वासी बहु जती योगि जन साधु सिद्ध समुदाई ॥ पूजत पे·
खि प्रीति पुलकि तनु नयन लाभ लुटि पाई ॥ मख राख्यो बल दल दलि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जब लवा जनविबुधवधाई ॥ निजप्रत चरित सहित तुलसीविनवसतल
षणरघुराई ॥ ५६ ॥ मंजुलमङ्गलमयनपदोटा ॥ मुनिमुनितिय मुनि
शिसु विलोकि कहै मधुरमनोहर जोटा ॥ नाम रूप अनुरूपवेषवय
राम लषणलाल लोने ॥ इनने लहिजनु घनदामिनिद्विति मनसिज
मरकत सोने ॥ चरणसरोज पीत पट कटि तट तूणनीर धनु धारी के
हरिकंधकाम करि कर वर विपुलबाहु बल भारी ॥ दूषणरहित सम
प सम भूषण पाईसु अङ्ग निसोहैं नवराजीवनयन पूरण विधु वद
न मदन मन मोहै ॥ शिर निम्रषराड सुमन दल मगडन वाल सुभायब
नाये ॥ केलि अङ्ग तनुरेनु पंकज जनु प्रगटत चरित चोराये ॥ मखरारि
वेलागि दशरथ सों मांगि आश्रमहिं आने ॥ प्रेमपूजि पाहुने प्राण
प्रियगाधिसुअनसनमाने ॥ साधन फलसाधक सिद्धनिके लोचनफ
लसवही के ॥ सकलसुकृत फल मान पिताके जीवन धन तुलसीके
५७ ॥ रागसुहव ॥ रामपदपद्मपराग परी ऋषितियतुरतत्यागि
पाहनतनु छविमयदेह धरी ॥ प्रवलपाप पतिशापदुसह दवदारु
णजरनिजरी सींचिकृपाजलविवध वेलिज्यों फिरिसुख फर निफ
री ॥ निगम अगम मूरति महेश मति युवति वराइवरी ॥ सोई मूरति
जानो नयन पथ एक टकतेनटरी ॥ वरणतिहृदयसरूपशीलगु
ण प्रेम प्रमोद भरी ॥ तुलसी अैसे केहि आरत की आरति प्रभुनह
री ५८ परत पदपंकजरजकर बिरवनी ॥ भई प्रगट अतिदिव्य देहधरि
मानो त्रिभुवन छवि छवनी ॥ देषि वडो आचार्य्य पुलकितनु कहति
मुदित है सुनिभवनी ॥ जो चलिहैं रघुनाथपयादेहि शिलानहीं
रहिहै अवनी ॥ परसि जे पाय पुनीत शंभु शिर सोहइ तीन पथगव
नी ॥ तुलसिदासतेहि चरण की महिमा कहमति कवनी ॥ ५९ ॥ भू
रि भाग भाजन भई ॥ रूपराशि अवलोकि वन्धु द्वौ प्रेम सुरंगरई ॥ क
हा कहौं केहि भांति सराहै नहि करतूतिनई ॥ विनुकारणाकरुणा कर

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रघुवर केहि केहि गनिन दई ॥ करि वहु विनय राखि उर मूरति मङ्ग
लमोदमई ॥ तुलसी ह्वै विशोक पति सों कहि प्रभु गुण गनति गई ॥
६० ॥ रागकान्हरा ॥ ए कौशिक मखके रखवारे नाम राम अरु लख
खन ललित अति दशरथराय दुलारे मेचक पीत कमल कोमल·
कलकाकपक्ष धरवारे ॥ शोभा सकल सकेलि मदन विधि सकर स·
वैंमिसें वारे ॥ सहस समूह सुबाहु सरिस खल समर सूल भट भारे
केलि तूण धनु बाण पाणि रण जितें निशाचर मारे ॥ ऋषिनृप
नारि स्वयम्बर पेखन जनक नगर पगु धारे मग नर नारि निहारत स
दर कहि बड भाग हमारे ॥ तुलसी सुनत एक एकनि सों चलत
विलोकनि हारे ॥ एकनि वचन लाहु मानो अंधनि लहे विलोचन
तारे ॥ ६१ ॥ रागटोडी ॥ आए सुनि कौशिक जनक हर्षने है बोलि गु
रु भूसुर समाज सों मिलन चले जानि वडे भाग अनुराग अकुलाने है
नाइ शीस पगनि अशीस पाइ प्रमुदित पावडे अरघ देन आदर सों आ
ने हैं ॥ असन वसन वास कै सुपास सब विधि पूजि प्रिय पाहुने सुभाय सन
माने है ॥ विनय बडाई करि परस्पर करत पुलकि प्रेम आनन्द
अघाने हैं ॥ देखे राम लखण निमेषें विथकिन भई प्राणहूं ते प्यारे लागे वि
नु पहिचाने हैं ब्रह्मानन्द हृदय दरश सुख लोयननि अनुभव उभय सरस·
राम जाने हैं ॥ तुलसी विदेह की सनेह की दशा सुमिरि मेरे मन माने राउनि
पट सयाने हैं ॥ ६२ ॥ रागमल्लार ॥ कोशलराय के कुंअर ढोटा ॥ राजत·
रुचिर जनकपुर पैठत श्याम गौर नीको जोटा ॥ चौतनि शिरनि कनक क
लि कानन कटि पट पीत सुहाये ॥ उरमणि माल विशाल विलोचन सी
य स्वयम्बर आये ॥ वरणि न जात मनहिं मन भावत सुभग अवहिं व
यकोरी ॥ भई है मगन विधु वदन विलोकन वनिता चतुर चकोरी ॥
कहं शिव चाप लरिकवन वूझत विहँसि चितै तिरछो है ॥ तुलसी गलि
न भीर दरशन लगि लोग अटनि अवरोहे ॥ ६३ ॥ ए अवधेश के सुत दोऊ स

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दि मंदिरनविलोकतसारं ई जनकनगरसब कोऊ ॥ श्यामगौरसुन्दरकिशोरतनुतूणवाणधनुधारी ॥ कटिपपीत कण्ठमुक्तामणि भुजविशालबलभारी ॥ मुखमयंकसरसीरुह लोचननिलक भाल टेढी भोहैं ॥ कलकुण्डलचौतनी चारु अति चलतमत्तगजगौहैं विश्वामित्रहेतु पठयेनृप इनहिं ताडिकामारी ॥ मखराख्यो रिपुजीतिजानजगमगसुनिवधूउधारी पियपाहुनेजानिनरनारिननयननिरूपनदये ॥ तुलसिदासप्रभुदेखिलोगसबजनकसमाभय ॥ ७४

॥ रागटोडी ॥ बूझतजनकनाथढोठा दोऊ काकेहैं तरुणतमालचारु चंपकवरणतनुकोनेवडे भागीकेसुकृतपरिपीकेहैं ॥ सुखकेनिधानपायेहियेकेविधानलायेठगकेसे लाडूखाये प्रेममधुछाकेहैं स्वारथरहितपरमारथीकहावतहैं भैसनेहविवशविदेहताविवाकेहैं ॥ शीलसुधाके अगारसुखमाके पारावार पावतनपरिपरिपैरिपाकेहैं ॥ लोचनललकिलागेमन अति अनुरागे एकरसरूपचितसरूसकलसभाकेहैं ॥ जियजियजोरतसगाई रामलषणसोआपने आपनेभायजैसे भापजाकेहैं ॥ पीतिकोप्रतीतिकोसुरिवेकोसेईवेकोशरणाकोरामरपतुलसिहूताकेहैं ॥ ७५ ॥ रागमलार ॥ एकोनकहांतेआये ॥ नीलपीतपथोजवरणमनहरणसुभायसुहाये मुनिसुतकिधौंभूपकुअरकिधौंब्रह्मजीवजगजाये रूपजलधिकेरलसुछवितियलोचनललितलखाये किधौरविसुअनमदनऋतुपतिकिधौंहरिहरभेषवनाये किधौंआपनेंसुकृतसुरतरुकेसुफलरावरेहिपाये भयेविदेहनेहवशदेहदशाबिसराये पुलकगातननसमानहर्षहियसलिलसुलोचनछाये ॥ जनकवचनमृदुमञ्जमधुरभरेभक्तिकौशिकहिभाये ॥ तुलसी अतिआनन्दउमगिउररामलषणगुणगाये ७६ ॥ कौशिककृपालहूकोपुलकिनननुगोउमगनअनुरागसभाकेसराहे भागदेखिदशाजनककीकहि

वेकोमनुभो॥प्रीतिकेनपातकीदियेहुंगापपायवडोमखमिसमेरो
नव॥नवधमवनुभो॥प्राणहुंतेप्यारेसुतमांगेदिपेदशरथसत्यसिन्धु
शोचसहेमूनोसोमवनुभो॥काकशिषाशिरकरकेलितूणधनुशर
वालकविनोदजातुधाननिसोरणुभो॥वृत्तविदेह॥अनुराग॥आ
चरजवशऋषिराजपागभयोमहाराज॥अनुभो॥भूमिदेवनरदेव
सचिवपरसपरकहतहमहिसुरतरुशिवधनुभो॥सुनतराजाकीरि
तिरूपजीप्रतीतिप्रीतिभागतुलसीकेभलेसाहवकोजनुभो॥६॥
चारौभलेवेटादेववदशरथरायकेप्रजेसेरामलक्षणभरतरिपु
हणतसेशीलशोभासागरप्रभाकरप्रभायके॥ताडकासंहारिमखरखे
नीकेपालेव्रतकोटिकोटिभटिकियेएकएकधायके॥एकवाण
वेगहीउडानेजातुधानजानसूखिगयेगानहेपतो॥भयेवायके
शिलाछोरुछु॥पत॥अहल्याभईदिव्यदेहगुणपेवेपारसकेपंकरुह
पायके॥रामकेप्रसादगुरुगोतमखसभयेरावरेहुसतानन्दपूलभयेमा
यके॥प्रेमपरिहासपोषवचनपरसरकहतसुनतसुखसवहीसुभा
यके॥तुलसीसराहेभागकोशिकजनकजूकेविधिकेसुढरहोतसुढ
रसुदायके॥ई॥एदोऊदशरथकेवारे॥नामरामघनश्यामलखि
णलघुनखशिख॥अंगउजियारे॥निजहितलागिमागि॥आनेमैध
र्मसनरखवारे॥धीरवीरविरुदैतवांकुरेमहावाहुवलभारे॥एक
तीरतकिहतीताडिकाकियेसुसाधुसुखारे॥यज्ञराखिजगसाखि
तोषिऋषिनिदरिनिशाचरमारे॥मुनितियतारिस्वयम्वरपेषन॥
आयसुनिवचनतिहारे॥पेउदेखिहैंपिनाकुनेकुजेहिनृपनिलला
जज्वरजारे॥सुनिसानंदसराहिसपरिजनवारहिवारनिहारे॥पूजि
सप्रेमशशिकौशिकहिंभूपतिसदनसिधारे॥शोचतसत्यसनेहवि
वशनिशिनृपहिगनतगइतारे॥पठयेवोलिभारगुरुकेसंगरङ्ग॥भू
मिपगुधारे॥नगरलोगसुधिपाइमुदितसवसवहीकाजविसारे॥म॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मनहुं मघा जल उमगि उदधि रुख चले नदी नद नारे ॥ ये किसोर धनु·
घोर बहुत बिलखात बिलोकनिहारे ॥ टरौ न चाप तिन्हने जिन्ह सुभट
न कौतुक कुधर उखारे ॥ ये जाने बिन जनक जानियत करि प्रण भूप·
हंकारे ॥ नतरु सुधासागर परिहरि कत कूप खनाउब खारे ॥ सुखमा
सील सनेह सानि मानो रूप बिरंचि संवारे ॥ रोम रोम पर सोम काम श·
त कोटि वारि फेरि डारे ॥ कोउ कह तेज प्रताप पुंज चितये नहिं जा·
त निहारे ॥ छुअत शरासन शलभ जरैगो दिनकर वंश दियारे ॥ एक
कहैं कछु होइ सुफल भए जीवन जन्म हमारे ॥ अवलोके भरि नयन·
आजु हम तुलसी प्राण पियारे ॥६९॥ जनक बिलोकि बार बार रघुबर
को ॥ मुनि पद शीश नाय आयसु अशीस पाइ राई वामें कहत गवनु कि
यो घर को ॥ नींद न परति राति प्रेम पन एक भांति सोच संकोच न बिरंचि
हरिहर को ॥ तुमतें सुगम सब देव देखिबे को अपयश हंसि किधौं सोच ब
हुगुन पर को ॥ ल्यायो सङ्ग कौशिक सुनाये कहि गुण गण आये देखि
दिनकर कुल दिनकर को ॥ तुलसी तऊ सनेह को सुभाउ बाउ मानो च·
लदल को सो पात चरै चित खरको ॥७०॥ राग केदार ॥ रङ्ग भूमि भोरहीं
जाइ कै राम लखण लखि लोग लूटिहैं लोचन लाभ अघाइ कै ॥ भू
प भवन घर घर पुर बाहर इहै चर्चा रहि छाइ कै ॥ मगन मनोरथ मोद ना
रि नर प्रेम बिबश उठे गाइ कै ॥ सोचत विधि गति समुझि परस्पर कहत बच
न बिलखाइ कै ॥ कुंअर किशोर कठोर शरासन असमंजस भये आइ
कै ॥ सुकृत संभारि मनाइ पितर सुर शीश ईश पद नाइ कै ॥ रघुबर क
र धनु भङ्ग चहत सब अपनो सो हित चित लाइ कै ॥ सुनि अनुकूल मुदि
त मन मानहु धरत धीर जोइ धाइ कै ॥ कौशिक कथा एक एकन सों कह
त प्रभाव जनाइ कै ॥ सीय राम संयोग जानियत रच्यो बिरंचि बनाइ कै ॥ मा·
नस माहि सराहि मगन वर बाहु उछाहु बढाइ कै ॥ सानुज राम समाज·
बिलोकत काम पिनाक नवदार कै ॥ बडी सभा लखो लागु बडो पार उतो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

बराई पाइकै॥ कोमुनो हि है और को लाम करघुनायकहि बिहाइकै॥ गव निहैं गवहिं गवाइगवं गइ नृप कुल वलहि लजाइकै॥ करि खारपमा नका भञ्जन क कोहम एहित सकुदा टूक॥ भली भांत साहिब तुलसी घा लिहै व्याह बजाइकै॥ ७१॥ रागटोडी॥ भोर फूलबी निवे कौं गये फुलवा ईं॥ शीश निटेपारो उपवीत पीत पट करि दोना वाम करनि सुलोनि भेस पाइहैं॥ रूपके अगार भूपके कुमार सुक भार गुरु के सुठि प्राणाधारसं गसेवकाई है॥ नीचव्यौं टहल करै रुखराखे अनुतरैं कोन्नि कुसेको हीनन किये दुहुं भाई हैं॥ सखिन सहितनेहि औसर संयोगवि धि गौरि जापूजिवे को जानकीजू आई हैं॥ निरखे ल सणराम जानेरतुपति कामसोहिमानो मदन मोहनी मूड़ नाई है॥ राघोजू श्रीजान की लोचननि लिवेको मोदकहिवेको योगनमैंबातेसी बनाई है॥ स्वामी सिपसखिन लक्षरातुलसी कौं तेसी नैसोमन भयोजा की जैसि नैसगाई है॥ ७२॥ पूजिपार्बती भले भाय पाप परिकै॥ सजलसुलोचनासिथिलतनपुलकित आवे नवचनमनरह्यो प्रेम भरिकै॥ अन्तरजामिनि भवभामिनिस्वामि निसों कही चहौं बात मात अन्त नो हिलरिकै॥ मूरति कृपाल मंजुमा लदेवोलनि भई पूजो मन कामना भावतो नरु वरि कै॥ राम्कपूल हपाइबेलि ज्योंबोडी वनाइ माग को पितापिकै फूलकरिकै॥ लहौगी कहोंगी तव साची कही अम्बासिय गहे पाइहै उठाइ माथे हाथ धरिकैं॥ सु दिन असीससुनि सीस नाइ पुनि पुनि बिदाभई देवी सों जननि डरखरिकै॥ हर षिसहेली भयो भावतो गावतगीतगवनी भवनतुलसीसहि पोहरिकै॥ ७३॥ श्र ूर भूमि आये दशरथ किशोर दें पेषतोसे पेषन चले हैं पुरनेरनारि वा रबूढे अंध पंगु करत निहोरहैं॥ नील पीन नीरज कनकमरकत धनदामि नावरण बन्न एकेनि चोर हैं॥ पहुंच तवानेर मन रूपराम लसिनवा भजेस सुजेनेसदे कं धरशिनमोर हैं॥ नगरासरोज चाहल जघाजानु रकदि कोपर वशगल वाहुवज्रोर हैं॥ नीकेकैनिबग करोकरक नलन लसै वारसा

शिषासनमनोहरकठोरहैं ॥ काननकनकफूलउपवीतअनुकूल
पिअरेदुकूविलसनआछेछोरहैं राजिवनयनविधुवदनटेपारे
शिरनखशिषअंगनठगोरहैं सभासरवरलोककोकनदकोकगण
प्रमुदितमनदेखिदिनमणिभोरहैं ॥ अवुधअसैलेमैंलेमहिपा
लभयेकछुकउलूककछुकुमुदचकोरहैं भाईसोंकहतवातकौशि
कहिसकुचातवोलघनघोरसेवोलतथोरथोरहैं ॥ सनमुखसवहिं
विलोकतसवहिनीकेकृपासोंहेरतहंसितुलसीकीओरहैं ७४ ययेईरा
मलखणजेमुनिसंगआयेहैं ॥ चौतनीचोलनिकाछेसखासोहैं आगे
पाछेआछेहूंतेआछेआछेभायभायेहैं सांवरगोरेशरीरमहावाहुमहा
वीरकटितूणतीरधरधनुषसोहायेहैं ॥ देखतकोमलकलअतुल
विपुलवलकौशिककोदंडकलाकलितशिखायेहैं इनहींताडिका
मारीगौतमकीतियतारीभारीभारीभूरिभटरणविचलायेहैं ऋषिम
खरखवारेदशरथकेदुलारेरंगभूमिपगुधारेजनकवुलायेहैं ॥ इनके
विमलगुणगणपुलकिततनुसतानन्दकौशिकनरेशहीसुनायेहैं ॥
प्रभुपदमनदियेसोसमाजचितकियेहुलसिहुलसिहियेतुलसिहु
गायेहैं ७५ रागकाहरा ॥ सीयस्वम्बरमाईदोभाईआयेदेखनसुनन
चलीप्रमदाप्रमुदितमनप्रेमपुलकितनमनहुमदनमजुलपेष
न ॥ निरखिमनोहरताईसुखपाईकहेंएकएकसोंभूरिभागहमध
न्यआलिएदिनएसन ॥ तुलसीसहजसनेहसुरंगसवसोसमाज.
चितचित्रसारलागीखेलन ७६ रागगौरी ॥ रामलखणजवदृष्टिपरे
रीअवलोकनसवलोगजनकपुरमानोविधिविविधिविदेहकरे
रीधनुषयज्ञकमनीअवनीतलकौतुकहीभयेआइखरेरीछ
विसुरसभामनहुमनसिजकेकलितकल्पतरुरूपफरेरीसकलकामव
र्षतमुखनखकर्षतचितहितनहर्षभरेरीतुलसीसवैसराहतभूपहिभलेपनवा
सेसुढरढरेरी ७७ नेकुसुमुखिचितलाइचितोरीराजकुंअरमूरतिरचिवे

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कीउचिसुचिविधिश्रमकियोहै कितोरी ॥ नखशिषसुंदरता अ
वलोकत कहैनपरत सुखहोत जितोरी ॥ सांवर रूपसुधांभरिवे
कहुं नयनकमल कल कलशरितोरी मेरेजान इन्हवोलिवेकारण
चतुरजनकठयोठटइतोरी तुलसीप्रभुभंजिहैं शंभुधनुभूरिभाग
सियमातपितोरी ७८ रागसारंग ॥ जवतेरामलखणचितयेरीरहे एकट
कनरनारिजनकपुरलागतपलककल्पवितयेरी प्रेमविवशमागत
महेशसोदेखतहीरहियेनितयेरी कैयेसदावसहुइननकेएनयनजा
हुजितयेरी कोउसमुझाइकहै किनभूपहिवडेभाग आयेइतयेरी विर
चतइनहिविरञ्चिभुवनसवसुंदरताखोजतरितयेरी तुलसिदासतेधन्य
जन्मजगनवचक्रमजिनकेहितयेरी ७९ सुनुसखिभूपनिभलोइकियोरी
जेहिप्रसादअवधेशकुंअरहौनगरलोगअवलोकिजियोरी मानिप्रती
तिकहैमेरेतें कतसंदेहवसकरलिहियोरी तौलौंहै पहशम्भूशरासन
श्रीरघुवरजौलौंनलियेरी ॥ जेहिविरञ्चिरचिसीयसंवारीरामहिं ऐ
सोरूपदियोरी ॥ तुलसिदासतेचतुरविधातानिजकरयहसंयोगसिपे
री ॥ ८० ॥ अनुकूलनृपहिसूलपाणिहैं नीलकण्ठकारुण्यसिन्धु
हरदीनवन्धुदिनदानिहैं ॥ जोपहिलेहीपिनाकजनककहंगये
सौंपिजियजानिहै ॥ बहुरिविलोचनकेफलसवहिसुलभकि
येआनिहै ॥ सुनियतभवभावतेरामहैंसियभावतीभावनिहै ॥
परिखत प्रीतप्रतीतिपयप्रणरहैकाजठटुठानिहै ॥ भयेविलो
किविदेहनेहवसवालकविनुपहिचानिहै ॥ होनहरेहोनेवि
रवन दलसुमतिकहत अनुमानिहैं ॥ देखियनभूपभोरके
सेउडहगण गरत गरीव गलानिहै ॥ तेज प्रताप वढत कुं
अरनिको यदपिसंकोचीवानिहैं ॥ वयकिशोर वरजो
रवाहवलमेरुमेलिगुणतानिहैं ॥ अवशिरामजीवविलोच
नशंभुसरासनभानिहैं देखिहै व्याहउछाहनारिनरसकलसुमङ्गलानि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मिहैं ॥ भूमिभागतुलसीलेऊजे सुनिहैं गाइ बखानिहैं ॥ ८१ ॥ रागकेदा
रा ॥ रामहिं नीके निरखि सुनयनी ॥ मनसहु अगम समुझि यह अवसर
क. तसकुचति पिकबयनी ॥ बडे भाग मख भूमि प्रगट भइ सीय सुमङ्ग
लसयनी ॥ जाकारण लोचन गोचर भेइ मूरति सब सुख दयनी ॥ कुलगु
रुतियके वचन मधुर सुनि जनकयुवति मति पयनी ॥ तुलसी सिथिल
देह सुधि बुधि करि सहज सनेह विषयनी ॥ ८२ ॥ मिलो वर सुन्दर सुन्द
रि सीतेहि लायक सांवरो सुभग सोभाहू को पर मसिंगारु मनहु को मन
मोहै ॥ उपमाको आन को है सुखमा सागरसंग अनुज राजकुमारु ॥ ललि
तसकल अंगतनु धरें कैधौ अनङ्ग नयननि को फल कैधौ सिपको सुकृ
तसारु ॥ सरद सुधा सदन छबिहिं निन्दै बदन अरुण आपतन वनलि
नलोचन चारु ॥ जनक मनकी रीति जानि विहित प्रीति ऐसी ओमूर
ति देखे रह्यो पहिलो विचारु ॥ तुलसी नृपहि ऐसो कहि नबुझावको
उ प्रण औ कुअर दोउ प्रेमकी तुला धौं नारु ॥ ८३ ॥ रागसारङ्ग. देखि
देखि री दोउ राजसुअन ॥ गौर स्याम सलोने लोने लोयन निजिन को
शोभा ते सोहैं सकल सुअन ॥ इनहि ताडिका मारी मुनितियनारी ऋषि
मख राख्यौ रण दले हैं दुअन ॥ तुलसीप्रभुको अब जनक नगर नभ
सुयश विमलरविचाहत भुअन ॥ ८४ ॥ रागटोली ॥ आरङ्ग भूमि आ
जु वै देजाइ कै आपने अपने थल आपने २ साज आपनो २ बखानक
बनाइ कै ॥ कौशिक सहित राम लषण ललित नाम लरिका ललाम
लोनि पठये लिलाइ कै ॥ दरश लालसा बस लोग चले भाय पलिबिक
संत भूरति कसत चाइ धाइकै ॥ सानुग सानन्द हिये आगे है जनकलि
ये रचना रुचिर सब सादर दिखाइ कै ॥ दिये दिये आसन सुपास सा
काम आपत आके २ विषे वि हिं पिन छ नावि छ छज्जे ॥ भूपनि किशो
र मुनि कीराव च सुमि राउ दे खि दे को दाउ दखादे रेखि खासिहाइ कें भु
वयनमें सलोने है सुख रसु अनजोते लोभातु मोर भार किराङ्ग बाइ के

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कौतुक को लाहु लनिसान गानपुरनभ वषतसुमन विमानरहे सुख
के ॥ हित अनहितरत विरतविलोकि बाल प्रेममोद मगनजनम फल
पाइकै ॥ राजा की रजाइ पाइ सचिवसहेली धाइ सतानन्द ल्यायेसि
पसिविकाचढाइके ॥ रूपदीपिका निहारि मृगमृगीनर नारिबिथ
केविलोचन निमिषें बिसराइकै ॥ हानि लाहु अनख उछाहु बाहुब-
लकहि वन्दी बोले बिरद अकस उपजाइकै ॥ दीपदीपके महीप आये
सुनि पैज पराकीजै पुरुषारथको अवसर भो आइकै ॥ आनाकानीक
रहंसीसुहाचाहीन लागी देखि दशा कहत बिदेह बिलखाइकै ॥ घरनि
सिधारियेसुधारिये आगिलकाज पूजिधनुकीजे बिजपवजाइके ॥ जन
कवचन छुयेबिरवालजारुसेवीर रहेसकलसकुचिशिरनाइकै ॥ तुलसी
लखणमाषेरोषेरारवे राम रुख भाखे मृदु परुषसुभाय नरिसायके ॥ ८५॥
भूपति बिदेह कही नीकी पैजो भई है ॥ बडेही समाज आजराजनिकी
लाजपतिहांकि आंकएक कहीपिनाक छीनि लई है ॥ मेरो अनुचि
तनकहत लरिकाई बश पराप रमिति औरभांतिसुनिगई है ॥ नतरु
प्रभु प्रतापउतरु चढाय चापदेतोपैदेखाय बल फलपापमई है ॥ भूमि
केहरैया उखरैया भूमिधरनिके बिधि बिरचे प्रभावजाकोजगजई है ॥
बिहंसिहियेहरषिहटकेलषणराम सोहत सकोचशीलनेह नारिन
ई है ॥ सहमी सभा सकल जनक भये बिकल रामलखि कौशिक अ-
शीस आज्ञादई है ॥ तुलसी सुभाय गुरु पाय लागिरघुराय ऋषिराय
कीरजाइ माथेमानिलई है ॥ ८६॥ सोचनजनक पोचपेचपरिगई
है ॥ जोरिकर कमल निहारि कहे कौशिकसों आयसुभोराम को सोमे
रेदुचितई है ॥ बाणजातिधानपति भूपदीप सातहू के लोक पबिले
कन पिनाक भूमि लई है ॥ जोतिलिङ्ग कथासुनिजाकी अन्त पाये
बिनु आये बिधि हरि हारि सोई हाई है ॥ आपुही बिचारियेनिहारि ये
सभाकी गत बेद मरयाद मानो हेतु वाद हई है ॥ इन को जिनो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

है मनु सोभा अधिकानी ननु सुखनि की सुखमा सु लदर सई है रावरो·
भयो सांवलई है कोऊ किधे बल कधौं कुल को प्रभाउ कै धौं लरिकई
है ॥ कन्या कलकीरति विजय विश्व की वटोरि कै धौं करतार इनही
को निरमई है ॥ पण कौन मोह विशेषि चिन्ता सीनाहू की सुनि है पै
सोई सोई जोई जोई वई है ॥ रहे रघुनाथ कि निकाई नीकी नीके ना·
यहाथ निनि हारे करतूति जाकी नई है ॥ काहे साधु गाधिसुअन सरा
हे राज महाराज जानि जियठीक भली दई है ॥ हरषे लषण हरषानी वि
लखाने लोग तुलसी मुदित जाको राजा रामजई है ॥ ८७ ॥ सुजन स
राहे ॥ जो जनकवान कही है राम हि सोहानी जानि मुनि मन मानी सु
नि नीच महिपावली दहन विनु दही है ॥ कहे गाधिनन्दन मुदित रघुन
न्दन सौं नृपगति अगह गिरान जाति गही है ॥ देखे सुने भूपति अनेक झू
ठे झूठे नाम सांचे तिरहुति नाथ साखी देति मही है ॥ रागऊ विराग भोग योग यो
गवत मनु योगी यागवलिक प्रसाद सिद्ध लही है नातनेन राणितेन सीरेखु
धा करहू ते सहज समाधि निरूपाधि निरवही है ॥ अैसेक अगाध बोध
रावरे सनेह वस विकल विलोकियत दुचितई सही है ॥ कामधेनु कृपा हु
लसानी तुलसीश उर पण प्रसु हेरि मरयादा वांधि रही है ॥ ८८ ॥ ऋ
षिराज राजा आजु जनक समान को ॥ आपु यहि भांति प्रीति सहित सरा
हियत रागी और विरागी वडभागी अैसो आन को ॥ भूमि भोग करत अनुभ
वत योग सुख मुनि मन अगम अलष गति जानको ॥ गुरु हर पद नेह गे
ह वसि भो विदेह अगुण सगुण प्रभु भजन सयान को ॥ कहनि रहनि
एक विरति विवेक नीति वेद बुध संमत पथीन निरवाण को ॥ गिनु गु
ण की कठिन गांठि जड चेतन की छोरि अनायास साधु सोधक अपान
को ॥ सुनि रघुवीर की वचन रचना की रीति भये मिथिलेश मानो दीप
क विहान को ॥ मिट्यौ महा मोह जी को छुट्यौ पोच सोच सी को जान्यो अ
वतार भयो पुरुष पुराण को ॥ सभा नृप गुरु नर नारि पुर नभ सुर सव-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चितवन मुख करुणा निधान को ॥ एकहि कहन एक प्रगट स प्रेम वस
तुलसी अनोरिहै अरासन ईशान को ॥ ८९ ॥ राग मारू ॥ सुनो भैया भूप
सकल दै कान ॥ वज्र रेख गज दशन जनक प्रण वेद विदित जग जान घो
र कठोर पुरारि शरासन नाम प्रसिद्ध पिनाक ॥ जो दशकण्ठ दियो ना
वों जेहि हर गिरि कियो मनाक ॥ भूलि भाल भ्राजत न चलत सो ज्यों वि
रञ्चि को आंक ॥ धनु तोरे सोइ वरै जानकी राउ होउ कि रंक ॥ सुनि
आमर्षि उठे अवनी पति लगे वचन जनु तीर ॥ टरै न चाप करै अप
नो सो महा महा वल वीर ॥ नमित शीश सोचहि सलज्ज सब श्रीहत
भये शरीर बोले जनक विलोकि सीय तन दुखित सरोष अधीर ॥ सप्त
दीप नव खण्ड भूमि के भूपति वृन्द जुरे ॥ वडो लाभ कन्या कीरति को
जहां तहं महिप मुरे ॥ डग्यो न धनु जनु वीर विगत महि किधौं कहुं सुभ
ट दुरे ॥ रोषे लखण विकट भृकुटी करि भुज अरु अधर फुरे ॥ सुनहु
भानु कुल कमल भानु जौं अव अनुशासन पावौं ॥ को वापुरो पिनाक मेलि
गुण मन्दर मेरु नवावौं ॥ देखो निज किङ्कर को कौतुक क्यों कोदंड चढावौं
लै धावौं भञ्जौं मृणाल ज्यौं तौ प्रभु अनुग कहावौं ॥ हर्षे पुर नर नारि स·
चिव नृप कुँअर कहे वर वयन ॥ मृदु मुसुकाइ राम वरज्यो प्रिय वन्धु नय
न की सयन ॥ कौशिक कह्यो उठो रघुनंदन जगवन्दन वल अयन ॥
तुलसीदास प्रभु चले मृगपति ज्यों निज भक्तन सुख दयन ॥ ९० ॥ जब
हि सव नृपति निराश भये ॥ गुरु पद कमल वन्दि रघुपति तव चाप समी
प गये ॥ श्याम तामरस दाम वरण वपु उर भुज नयन विशाल ॥ पीत व
सन कटि कलित कण्ठ सुन्दर सिन्धुर मणि माल ॥ कल कुण्डल पल्ल
व प्रसून शिर चारु चौतनी लाल ॥ कोटि मदन छवि सदन वदन विधु
तिलक मनोहर भाल ॥ रूप अनूप विलोकत सादर पुरजन राज समाज
लखण कह्यौ थिर हो हि धरणीधर धरणि धराधर धार ॥ कमठ
कोल दिग्दन्ति सकल अंग सजग करहु प्रभु काज ॥ चहत चपरि शिव

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चढु॰ चढावन दशरथको जुवराज ॥ गहि करतल मुनि पुलक सहि
कौतुकहि उठाइ लियो ॥ नृपगण मुखनि समेत नमित करि सजि सुख
सबहि दियो ॥ आकर्ष्यो सियमन समेत हरि हर्ष्यो जनक हियो ॥ भं
ज्यो भृगुपति गर्व सहित तिहु लोक विमोह कियो ॥ भयो कठिन कोद
ण्ड कोलाहल प्रलय पयोद समान ॥ चौके शिव विरञ्चि दिशिनायक
रहे मूंदि कर कान ॥ सावधान है चढे विमानन चले बजाइ निसान ॥ उ
मगि चले गे आनंद नगर नभ जय धुनि मंगल गान ॥ विप्र वचन सुनि
सखी सुआसिनि चली जानकिहि ल्याइ ॥ कुंअर निरखि जयमाल मे
लि उर कुंअरि रही सकुचाइ ॥ वर्षहिं सुमन अशीशहिं सुर मुनि प्रेम
न हृदय समाइ ॥ सीय राम की सुन्दरता पर तुलसिदास बलि जाइ ॥ ९१
रागमल्हार ॥ जब दोउ दशरथ कुंअर बिलोके ॥ जनक नगर नर नारि
मुदित मन निरखि नयन पल रोके ॥ वय किशोर घन तडित वरण तन नख
शिख अंग लोभारे ॥ है वै बूझै हित लै सब छवि बिबित विधि निज हाथ सं
वारे ॥ संकट नृपहि सोच अति सीतहि भूप सकुचि शिर नावे ॥ उठे रा
म रघुकुल कल केहरि गुरु अनुशासन पावे ॥ कौतुकही कोदण्ड
खण्डि प्रभु जय अरु जानकि पाई ॥ तुलसिदास कीरति रघुपति की मु
निन हिहूं पुर गाई ॥ ९२ ॥ रागटोडी ॥ मुनिपद रेणु रघुनाथ माथे धरी
है ॥ राम रुख निरखि लषन की रजाइ पाइ पाइ धरा धरणि सुसावधा
नी करी है ॥ सुमिरि गणेश गुरु गौरि हर भूमिसुर सोचत सकोचत सको
ची बानि खरी है ॥ दीनबन्धु कृपासिन्धु सभा को सकोच कुल हू की ला
ज परी है ॥ पेषि पुर धार रथ परिषि परण प्रेम नेम सिय हिय की विशेषि व
डी खर भरी है ॥ हाहि नो दियो पिनाकु सहमि भयो मनाकु महा व्याल
विकल विलोकि जनु जरी है ॥ सुर हरषत बरषत फूल बार २ सिद्ध मु
नि कहत सगुण सुभ घरी है ॥ राम बाहु विटप विशाल बौडि देखि अति
जनक मनोरथ कल पवेलि फरी है ॥ नरव्यान चढावत नतो नतन तोरत हू

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धारसुनिसुनि शिव की समाधि टरी है ॥ प्रभु के चरित बाहनु तुलसी तननमु
रवर कहीं सुलभ सबही को हानि हरी है ॥ ८३ ॥ राग सारङ्ग ॥ रामकाम



रिपु चाप चढ़ायो ॥ मुनिहीं सुलक आनन्द नगर नभ सुनि निसान
बजायो ॥ जेहि पिनाक बिनु नाक किये नृप सबहि बिषा बिद बढ़ा
यो ॥ सोई प्रभु कर परसत टूट्यो जनु हुतो सुरारि पढ़ायो ॥ पहि
राई जयमाल जानकी जुबतिन्ह मङ्गल गायो ॥ तुलसी सुमन बर्षि हर
र्षे सुर सुयश तिहुं पुर छायो ॥ ८४ ॥ राग टोडी ॥ जनक मुदित मन टूट
त पिनाक के ॥ बाजे हैं बधावने सुहावने मङ्गल गान भयो सुख एक के र
ररानी राजा रंक के ॥ दुन्दुभी बजाइ गाइ हर्षि बरषि फूल सुर गंध
र्ब नाचे नाच नाक नायक नाक के ॥ तुलसी महीस देखे दीन जर नाम जे सेम पु

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

न ममनो मिटाये शोक के ॥ ८५ ॥ लाजतोन साज साज साज राजा रघुरोषे
हु ॥ कहाभो चाप के चढाये व्याह है है बडे खाए बोले खोले सेलि सवि-
एन कत चोषे हैं ॥ जानि पुरजन त्रसे धीर दै लखन राहं से बलइ न कैपि
ककनी के नापे नरो पे हैं कुलहि लजावै बाल बाल से कजावै गाल कैधौं
कूर कालतन रतमावि वि शेषे हैं ॥ कुंअर चढाई भौहैं अब को विलोके
भोतौ तेहो भे अचेत खेलके से धोषे हैं ॥ देषे नर नारि कहैं सागर खाय-
कावे मापबाहु पीन पांवर नि पीना खाप पोषे हैं ॥ मुदित मन लोक को
कक्का कोक गरा राम के प्रताप रवि शोच सर सोषे हैं ॥ नव के देखै पा-
तो पे नवक भले लोगनि अब लोके सुनै या साधु तुलसीहू तोषे हैं ॥
। रंगानयमाल जानकी जलज कर लई है ॥ सुमनसु मंगल सगुण
वायनाई नजु नानहु मदन माली आपु निरमई है ॥ राज देखि लखि
तरु ससुर सु आसिनि नराम ये समाज की उवनि मली दई है ॥ चली गा
ने केरनि निसान बाजे गह गहे लह लहे लोपन सनेह सरसई है ॥ हने
दे वदुन्दु भी हरषे वर वन फूले फल मनोरथ मो सुख सुचिनई है ॥ पुर
ममपरिजन रानी राउ प्रमुदित मन सादर अनूप राम रूप रङ्ग रई है ॥
तनानन्द शिख सुनि पपपरि पहिराय मालसिय पिय हिय सोहत सोई
है ॥ नानस तेनि कसी विशाल सुनमाल पर मानहुं मराल पांतिवे भठ
रहगई है ॥ हितनि कीलाह कौ उछाह की विनोद मोद शोभा की अवधि
राम अब अधिकई है ॥ पौतें विपरीत अनहितन की जानि लियवि-
नातबडे प्रगट रघुनिस खांसीप ई है ॥ निज निज वेद की स प्रेम योगते
मा गादे मुदित अशीश विप्र विदुषन दई है ॥ छविते हि काल की कृपाल
भामाहू लह कीहु लसति हिये तुलसी के नित नई है ॥ ८७ ॥ रागके
दारा ॥ लंदुरी लोचन को लाहु ॥ कुंअर सुंदर सांवरो सखि सुमुखि
सादर लाहु ॥ खण्डि हर को दण्ड ठाढे जानु लम्बित बाहु ॥ रुचिर उ
रतय माल राजत देस मुखसब काहु ॥ चितै चित हित सहित नख शि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

त अङ्ग अङ्ग निबाहु ॥ सुकृत निज सिय राम रूप विरञ्चि मति त्रि (रा
हु मुदित मन वर बदन सो भा उदित अधिक उछाहु ॥ मनहु दूरि कल
ङ्क करि शशि समर सूधो राहु ॥ नयन सुखमा अयन हरत सरोज सुंद
रताहु ॥ बसन तुलसी दास उर पुर जानकी को नाहु ॥ ९८ ॥ राग सारंग
भूप के भाग की अधिकाई ॥ तूट्यो धनुष मनोरथ पूज्यो विधि सब बनि
तन नाई ॥ नवने दिन दिन उदय जनक को जब बर्ने जान की लाई ॥ आ
ने हि ब्याह सुफल भयो जीवन त्रिभुवन विदित बडाई ॥ बारा दे बार प
हुनई ऐहें राम लखण दोउ भाई ॥ येहि आनन्द मगन पुरवासिन देह
दसा विसराई ॥ सादर सकल विलोकत रामहि काम कोटि छवि छाई
॥ यह सुख समय समाज एक मुख क्यो तुलसी कहे गाई ॥ ९९ ॥ राग
सोरठ ॥ मेरे बालक कैसे धौं मग निरहहिंगे ॥ भूख पियास सीत श्र
म सकुचनि क्यों कौशिकहि कहहिंगे ॥ को भोरही उबटि अन्हवैहें का
ढि कलेऊ देहें ॥ को भूषण पहिराइ निछावरि करि लोचन सुख लेहें
॥ नयन निमेषन ज्यों जुगवें नित पितु परिजन महतारी ॥ ते पठये रि
षि साथ निसाचर मारण मख रखवारी ॥ सुंदर सुठि सुकुमार सुकोमल
काकपक्ष धर दोऊ ॥ तुलसी निरखि हरषि उर लैहों विधि ह्वै हैं दिन सो
ऊ ॥ १०० ॥ जद्यपि नृप शीश ठगोरी सी डारी ॥ कुलगुरु सचिव निपुन नो
वनि अवरेवन समुझि सुधारी ॥ सिरिस सुमन सुकुमार सुअन बिसुनार
संग असुरारी ॥ पठये विनहि सहाय पयादे हि केलि बाण धनु धारी ॥ अ
ति सनेह कातरि माता कहे लखि सखि वचन दुखारी ॥ बादि बीर जन
नी जीवन जग छत्रि जाति गति भारी ॥ जो कहिहे फिरे राम लखण घर
करि मुनि मख रखवारी ॥ सो तुलसी प्रिय मोहि लागिहे ज्यों सुभाय सु
तवारी ॥ १०१ ॥ राग सारङ्ग ॥ जबते लै मुनि सङ्ग सिधाये राम लखण के
समाचार सखि तबते कछु अन पाये ॥ बिनु पानहीं गवने फल भोर
न भूमि शयन तरु छाहीं सर सरितन जल पान शिशुन के साथ सु सेवक

वकजाही ॥ कौशिक परमकृपालु परमहित समरथ सुखद सुचाली
वालकसुठि सुकुमार सकोची समुझि सोच मोहि आली ॥ वचनसप्रे
मसुमित्रासुनि केसब सनेह घमरानो ॥ तुलसी आइ भरतनेहि अव
सर कही सुमङ्गलबानी ॥ ८२ ॥ सानुज भरत भवन उठि धाये ॥ पि-
तुसमीप सब समाचार सुनि मुदित मातु पहँ आये ॥ सजलनयनत
नपुलक अधर फरकत लखि प्रीति सुहाई ॥ कौशल्या लिये लाइ
हृदय वदलि कहो कछु है सुधि पाई ॥ सतानन्द उपरोहित अपने निर
हुतिनाथ पठाये ॥ छेमकुशल रघुवीर लषण की ललित पत्रिका ल्या
ये ॥ दलि ताडिका मारि निशचर मख राखि विप्रतिय तारी ॥ दै विद्या लै
गये जनक पुर है गुरुसंग सुखारी ॥ करि पिनाक पण सुता स्वयंवर सजि-
नृप कटक वटोरयो ॥ राज समाज रघुवर मृणाल ज्यौं शम्भु शरासन तोरयो ॥
यों कहि शिथिल सनेह बंधु दोउ अम्ब अङ्क भरि लीन्हे ॥ वार वार मुख चूमि
चारु मणि वसन निछावरि कीन्हे ॥ सुनत सुहावनि चाह अवध घर आ
नन्द वधाई ॥ तुलसिदास रनिवास रहस वश भयो सखिन सुमङ्गल गाई ॥ ८३
॥ राग कान्हरा ॥ राम लषण सुधि आई बाजै अवध बधाई ॥ ललित लगन
लिखि पत्रिका उपरोहित के कर जनक नरेश पठाई ॥ कन्या भूप विदेह-
की रूप की अधिकाई ॥ तासु स्वयम्वर सुनि सब आये देश देश के नृप
चतुरङ्ग बनाई ॥ पण पिनाक पवि मेरु ते गरु ताकहि नाई ॥ लोक
पाल महिपाल वाणकुल बाण दशानन शके न चाप चढ़ाई ॥ तेहि स
माज रघुराज के मृगराज जगाई ॥ भञ्जि शरासन शम्भु को जगज
यकल कीरति तिय मणि सिय राई ॥ पुर घर घर आनंद महा सुनि-
चाह सुहाई ॥ मातु मुदित मङ्गल सजे कहैं मुनि प्रसाद भये सकल सुम
ङ्गल माई ॥ गुरु आयसु मण्डप रच्यो सब साज सजाई ॥ तुलसिदास द
शरथ बरात सजि पूजि गणेशहिं चले निशान बजाई ॥ ८४ ॥ राग केदारा
नन मेम मञ्जु मनोरथ हारी सो हरचो गौरि प्रसाद एक ते कौशिक कृपा चौगुनी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मोरी ॥ परगपरितापचापचिन्तानिसि सोचसकोच तिमिर नहि थोरी रविकुलरवि अवलोकि सभासर हित चित वारिज वन विकसोरी ॥ कुंअर कुंअरि सब मङ्गलमूरति नृप दोउ धर्म धुरंधर धोरी ॥ राजसमाज भूरि भागी जिन लोचन लाहु लह्यौ एक ठोरी ॥ ब्याह उछाह रामसीताको सुकृत सकेलि विरंचि रच्योरी ॥ तुलसिदास जानै सोइ यह सुख जा उर बसति मनोहर जोरी ॥ १०५ ॥ राजति राम जानकी जोरी ॥ स्याम सरोज जलद सुंदर वर दुलहिनि तडित वरण तन गोरी ॥ ब्याह समय सोहत वितान तर उपमा कहुं न लहति मति मोरी ॥ मनहुं मदन मंजुल मरुख पमहं छवि सिंगार सोभा सौंज योरी ॥ मङ्गलमय दौ अङ्ग मनोहर ग्रथित चूनरी पीन पिछोरी ॥ कनक कलस कहं देत भांवरी निरखि रूप सारद भइ भोरी ॥ इत वसिष्ठ मुनि उतहि सतानंद वंस बषान करै दोउ ओरी ॥ इत अवधेस उतहि मिथिलापति भरत अङ्ग सुख सिन्धु हलोरी ॥ मुदित जनक रनिवास रहस बस चतुर नारि चितवहिं तृन तोरी ॥ गान निसान वेद धुनि सुनि सुर वरषत सुमन हरष कहं कोरी ॥ नयनन को फल पाइ प्रेम वस सकल असीसत ईस निहोरी ॥ तुलसी जेहि आनंद मगन मन क्यौं रसना वरनै सुख सोरी ॥ १०६ ॥ दूलह राम सीय दुलहीरी ॥ घन दामिनि वर वरण हरण मन सुन्दरता नख सिख निबहीरी ॥ ब्याह विभूषण वसन विभूषित सखि अवली लखि ठगि सी रहीरी ॥ जीवन जन्म लाहु लोचन फल है इतनो लह्यो आजु सहीरी ॥ सुखमा सुरभि सिंगार छीर दुहि मयन अमियमय कियो है दहीरी ॥ मथि माखन सिय राम संवारे सकल भुवन छवि मनहुं महीरी ॥ तुलसिदास जोरी देखत सुख सोभा अतुल न जाति कहीरी ॥ रूप रासि विरची बिरञ्चि मानो सिला लवनि रति काम लहीरी ॥ १०७ ॥ जैसे ललित लखन लाल लोने ॥ तैसिये ललित उर्मिला परस्पर लखत सुलोचन कोने ॥ सुखमा सार सिंगार सार करि कनक रचे तेहि सोने ॥ रूप प्रेम पर मिति न पु

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ति कहि बिथ किर हीमनि मोने ॥ शोभा शील सनेह सुहावन समय केलि गृह गोने ॥ देखवै आनि के नयन सुफल भय तुलसिदास के होने



॥ ५८ ॥ राग बिलावल ॥ जानकी बर सुंदर माई ॥ इन्द्रनील मणि श्याम सुभग अंग अङ्ग मनोजनि बहु छबि छाई ॥ अरुण चरण अंगुली मनोहर नख दुति वंत कछुक अरुणाई ॥ कञ्ज दलन पर मनहुं भौम दस बैठे अचल सुसदसि बनाई ॥ पीन जानु उर चारु जडित मणि नूपुर पद कल मुखर सुहाई ॥ पीत पराग भरे अलिगण जनु युगल जलज लखि रहे लोभाई ॥ किंकिनि कनक कञ्ज अवली मृदु मरकत शिखर मिलन जनु जाई ॥ गई न उपर सभीत निमित मुख बिकच शिखर हरि रहे लोनाई ॥ नाभि गम्भीर उदर रेखा सर उर भृगु बरणाव

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हसुखदाई ॥ भुजप्रलम्बभूषण अनेक युतवसन पीत शोभा अधि
काई ॥ जज्ञोपवीत विचित्र हेममय मुक्तामाल उरसि मोहि भाई ॥ कन्द
तडित बिच जनु सुरपति धनु निकट बलाक पांति चलि आई ॥ कम्बुक
ण्ठ चिबुक अधर सुन्दर क्यों कहों दशनन की रुचिराई ॥ पद्मकोश म
हं बसवज्रमानो निज संग तडित अरुणरुचि लाई ॥ नाशिक चारु ल
लित लोचन भ्रकुटिल कचन अनुपम छबि छाई ॥ रहे घेरि राजीव व
भयमानो चंचरीक कछु हृदय डराई ॥ भालतिलक कंचन किरीटशि
र कुण्डल लोल कपोल निकाई ॥ निरखहिं नारि निकर विदेहपुर नि
मि नृपकी मर्याद मिटाई ॥ शारद शेष शम्भु निशिवासर चिन्तन रू
प न हृदय समाई ॥ तुलसिदास शठ क्यों करिवरणै यह छबि निगम
नेति कहि गाई ॥ १०९ ॥ राग काह्नरा ॥ भूजानि पर जननि वारि फेरि डा
री क्यों तोरयो कोमल करकमलन शम्भुशरासन भारी ॥ क्यों मारीच सु
बाहु महा बल प्रबल ताडिका मारी ॥ मुनि प्रसाद मेरे राम लखण की वि
धि बडि करवर टारी ॥ चरणरेणु लै नयन लगावति क्यों मुनि वधू उ
धारी ॥ कहौधों तात क्यों जीति सकल नृप वरी विदेह कुमारी ॥ दुसह
रोष मूरति भृगुपति अति नृपति निकर खय कारी ॥ क्यों सौंप्यो सा
रङ्ग हारि हिय करिहै बहुत मनुहारी ॥ उमगि उमगि आनन्द विलोक
ति वधून सहित सुत चारी ॥ तुलसिदास आरती उतारति प्रेम मगन मह
तारी ॥ ११० ॥ राग विहागरा ॥ सुदिन सुमन आरती करें माता ॥ कनक व
सन मणि वारि वारि वर पुलक प्रफुल्लित गाता ॥ पालागन दुलहियन
सिखावति सासु आदि सत साता ॥ देहिं अशीश ते वरस कोटि लगि अ
चल होहु अहिवाता ॥ रामसीय छबि देखि युवति जन करहिं परस्प
र बाता ॥ अब जान्यो सांचे सुनहु सखि कोविद बडो विधाता ॥ मंगलगा
न निशान नगर नभ आनन्द कह्यो न जाता ॥ चिरंजीवहु अवधेश
सुअन सब तुलसिदास सुखदाता ॥ १११ ॥ इति श्री रामगीतावल्यां बाल

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कांडसमाप्तम् १ ॥ राग सोरठ ॥ नृपकरजोरि कह्यौ गुरुपाहीं तुम्हरी कृपा असीसनाथ मेरी सबै महेसनिबाहीं ॥ राम होहिं युवराज जियत मम यह लालसमनमाहीं ॥ बहुरि मोहि जियबे मरिबेकी चित चिन्ता कछुनाहीं ॥ महाराज भल काजविचारयौ बेगि लग्न कीजै ॥ विधिदहिनो होइ तबसब मिलिजन्मलाहु लुटि लीजै ॥ सुनत नगर आनन्द बधावन कैकेयी बिलषानी ॥ तुलसीदास देव मायावस कठिनकुटिलतारानी ॥ ११२ ॥ रागगौरी ॥ सुनहुरामभेरे प्राणपियारे ॥ बारे सत्य बचनश्रुतिसमातजातें हौं बिछुरत चरणनिहारे ॥ बिनुप्रयास सब धनकोफलप्रभु पायो सोतनदीसभारे ॥ हरितजि धर्मशील भये चाहत नृपतिनारिबस सरबसहारे ॥ रुचिरकांचुमणिदेखिमूढज्यौं करतलते चिन्तामणि डारे ॥ मुनि लोचन चकोर शशिराघव शिवजीवन धन सोन बिचारे ॥ यद्यपि नाथ तात मायावश सुखनिधान सुत तुमहि बिसारे ॥ तदपि हमहि त्यागहु जनि रघुपतिदीनबन्धु दयालु मेरे बारे अतिश्रपद्मनिविनीतबचनसुनिप्रभुकोमलचित चलन पारे ॥ तुलसिदासजौरहौमातुहित कोसुरविप्रभूमिभयटारे ॥ ११३ ॥ रहिचलिये सुन्दर रघुनायक ॥ जो सुतताततबचनपालनरत जननिउ तातमानिबेलायक ॥ वेदविदितयहवानतुम्हारीरघुपतिसदासन्त सुखदायक ॥ राखहुनिजमर्यादनिगमकीहौं वलिजाउँ धरहुधनुसायक ॥ शोककूपपरपरिहिमरिहैनृपसुनिसंदेशरघुनाथसिधायक ॥ यहदूषणविधिलोहिहोतअबरामचरणवियोगउपजायक ॥ मातबचनसुनिश्रवणनयनजलककुसुभायजनुनरतनुपायक ॥ तुलसिदासुरकाननसारौतौ तोदोषमोहिमहिआयक ॥ ११४ ॥ रागसोरठ ॥ राम हौं कौनयतनघररहिहौं ॥ बारबारभरि अंकगोदलैललन कौनसों कहिहौं ॥ यह आंगन विहरतमेरे बारे अनुजसंगप्रियतुलीन्हे ॥ कैसेहुं प्राणरहत सुमिरत सुततदविनोदतुमकीन्हे ॥ जिनश्रवनन कलकल

ननिहारे सुनिसुनिहों अनुरागी ॥ तिनअवधणनिवनगवनुसुननिहौं
मोते कवन अभागी ॥ युगसमनिमिषजांहिरघुनन्दनवदनकमलविं
नुदेखे ॥ जोतनुरहैवर्षवीतेंवलिकहाप्रीतियहलेखे ॥ तुलसिदासुप्रे
मवसश्रीहरिदेखिविकलमहतारी ॥ गद्गद कलठनयनजलफिरिपि
रिआवनकह्योमुरारी ॥ ११५ ॥ रागविलावल ॥ रहुभवनहमारेकहे
कामिनि ॥ सादरसासुचरणसेवहुनितजोतुमरेअतिहितगृहसा
मिनि ॥ सादरसासुचरणसेवहुनितजोतुमरेअतिहितगृहसामिनि
राजकुमारिकठिनकंटकमगक्यौंचलिहौमृदुपदगजगामिनिः
दुसहवातवरषाहिमआतपकससहिहौअगनितदिनयामिनि
हौंपुनिपितुअज्ञाप्रमानकरिऐहौंवेगिसुनहुद्दुतिदामिनि ॥ तु
लसिदासप्रभुविरहवचनसुनिसहिनसकहिंमुर्छितभइभामिनि ११६
कृपानिधानसुजानसुजानप्राणपतिसङ्ग ॥ विपिनहौंआवोंगी ॥ गृहतेंका
टिगुणितसुखमारगचलतसाथसुचपावोंगी ॥ थाके चरणकमलचा
पोंगी श्रमभयेवायडोलावौंगी ॥ नयनचकोरनिमुखमयंककछविसादर
पानकरावोंगी ॥ जौंहठिनाथराखिहौमोकहुंतौसंगप्राणपठावोंगी ॥
तुलसिदासप्रभुविनुजीवनरहिक्योंफिरिवदनदेखावोंगी ११७ ॥
कहातुमविनुगृहमेरोकौनकाजु ॥ विपिनकोटिसुरपुरसमानमो
कोंजोपैपियपरिहर्योसुराजु ॥ वलकलविमलदुकूलमनोहरक
न्दमूलफलअमीअनाजु ॥ प्रभुपदकमलविलोकिहौंविनुछिनुए
हितेअधिककहासुखसाजु ॥ होंरहिभवनभोगलोलपहूंपतिका
मनविगैगुनिकोसमाजु ॥ तुलसिदासअसविरहवचनसुनिकठिन
हियोविहरयोनआजु ॥ ११८ ॥ पियनिठुरवचनकहेकारणकवनजान
तिहौसवकेमनकीगतिमृदुचितपरमकृपालुरवन ॥ प्राणनाथसुन्द
रसुजानमणिदीनवन्धुजनिआरतिदवन ॥ तुलसिदासप्रभुप
दसरोजनजिरहिहौंकहाकरौंगीभवन ॥ ११९ ॥ मैंनमसोंसनभाय

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रही हौं ॥ बूरुति श्रौर भांति भामिनि कनत कठिन कलेसं सही है ॥ जौं बलि हौ तो चलो चलि कै बन सुनि सिय मन अवलम्ब लही है ॥ बूड़ति विरह वारिनिधि मानहुं नाह बचन मिस बाह गही है ॥ प्राणनाथ के साथ चली उठि अवध शोक सरि उमगि बही है ॥ तुलसी सुनी न कहुं काहूं कहत तनु परिहरि रह्यो रही है ॥ ११९ ॥ जबहिं रघुपति संग सीय चली विकल वियोग लोग पुर तियकहैं श्रति अन्याउ अली ॥ कोउ कह मनिगन तजत कांच लगि करत न भूप भली ॥ कोउ कह कुलकुवेलि कैकेयी दुखविष फलनि फली ॥ एक कहैं बन जोग जानकी विधि बड़ो विषम बली ॥ तुलसी कुलिशहु की कठोरता तेहि दिन दलकि दली ॥ १२१ ॥ राग बिलावल ॥ ठाढ़े हैं लखण कमल कर जोरे ॥ उर धकधकि न कहत कछु सकुचनि प्रभु परिहरत सबनि तृण तोरे ॥ कृपासिन्धु अवलोकि बन्धु तनु प्राण कृपाण बीर सी छोरे ॥ तात बिदा मांगि ये मातसों बनि है बात उपाइन औरे ॥ जाइ चरण गहि आयसु याच्यो जननि कहत बहु भांति निहोरे ॥ सिय रघुवर सेवा सुचि ह्वै हो तो जानि हौं सही सुत मेरे ॥ कीजहु इहै विचार निरंतर राम समीप सुकृत नहिं थोरे ॥ तुलसी सुनि शिष चले चकित उठ्यो मानो विहंग बधिक भय भोरै ॥ १२२ ॥ राग सोरठ ॥ मोको विधु बदन बिलोक न दीजे ॥ राम लखन मेरी इहै भेट बलि जाहुं जहां हित मित्र लीजे ॥ सुनि पितु बचन चरण गहे रघुपति भूप अंक भरि लीन्हे ॥ अजहुं अवनि बिहरति दरार मिसु सो अवसर सुधि कीन्हे ॥ पुनि शिर नाइ गवन कियो प्रभु मुर्छित भयो भूप न जाग्यो ॥ कर्म चोर नृप पथिक मारि मानो राम रतन ले भाग्यो ॥ तुलसी रघुकुलरवि रथ चढ़ि चले तकि दिशि दखिण सुहाई ॥ लोग मलिन भये मलिन अवधसर विरह दिए नहिं म्याई ॥ १२३ ॥ राग बिलावल ॥ कहो सो विपिन है धौं केतिक दूरि जहां गवन कियो कुंअर कौशलपति बूझति सिय पिय पतिहि बिसूरि ॥ प्राणनाथ परदेश पयादेहि चले सुख सकल तजे तृण तूरि ॥ करों बयारि बिलम्बिये बिटपतर दारौं चरण सरोरुह धूरि ॥ तुलसिदास प्रभु प्रियाव

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

चन सुनि निर्जन पन नीर आये पूरि ॥ कानन कहां अब हि सुनि सुन्दरि र
घुपति फिरि चितयो हित भूरि ॥ २२४ ॥ फिरि फिरि राम सिय तन हेरत त
षित जानि जल लेन लखण गये भुज उठाइ ऊंचे चढ़ि टेरत ॥ अवनि कुर
ङ्ग विहग द्रुम डारनि रूप निहारत पलक न प्रेरत ॥ मगन न डरत निरखि क
र कमल लनि सुभग शरासन फेरत ॥ अव लोकत मग लोग चहुं दिशि मन
हुं चकोर चन्द्र महि घेरत ॥ ते जन भूरि भाग भूतल पर तुलसी राम पथि
क पद जेरत ॥ २२५ ॥ राग विलावल ॥ नृपति कुंअर राजत मग जात ॥ सु
न्दर वदन सरोरुह लोचन मरकत कनक वरण मृदु गात ॥ अंसनि चा
प तूण कटि मुनि पट जटा मुकुट बिच नूतन पात ॥ फेरत पानि सरोज न
सायक चोरत चितै सहज मुसुकात ॥ सङ्ग नारि सुकुमारि सुभग सुठि राज
त विन भूषण नव सात ॥ सुखमा निरखि ग्राम बिनिता निके नलिन नयन
विग सत मानो प्रात ॥ अंग अंग अंगनित अनंग छवि उपमा कहत
सुकवि सकुचात ॥ सिय समेत नित तुलसिदास चित बसत कि सोर प
थिक दोउ भ्रात ॥ २२६ ॥ तू देखि देखि री पथिक वर सुंदर दोऊ ॥ मर
कत कलधौत वरण काम कोटि कान्ति हरण चरण कमल कोमल अ
ति राज कुंअर कोऊ ॥ कर शर धनु कटि निषङ्ग मुनि पट सोहें सुभग अ
ङ्ग संग चन्द्र वदनि वधू सुन्दरि सुठि सोऊ ॥ तापस वर भेष किये सो
भा सब लूटि लिये नित के चोर वय किशोर लोचन भरि जोऊ ॥ दिन
कर कुल मणि निहारि प्रेम मगन ग्राम नारि परस्पर कहैं सखि अनुराग
ताग पोऊ ॥ तुलसी यह ध्यान सुधन जानि मानि लाभ सघन कृपण
ज्यों सनेह सो हिये सुगेह गोऊ ॥ २२७ ॥ कुंअर सांवरो री सजनी सुन्द
र सब अंग ॥ रोम रोम छवि निहारि आलि वारि फेरि डारि कोटि भानु
सुअन शरद सोम कोटि अनंङ्ग ॥ वाम अंस लसत चाप मौलि मञ्जु
जट कलाप सुचि शर कर मुनि पट कटि तट कसे निषंग ॥ आयत उर बाहु
नयन मुख सुखमा को लहै उपमा अव लोकि लोक गिरा मति गति भंग ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

यौं कहि भई मगन बाल विय कौ सुनि सुबनि जाल चितवन चले जात·
संग मधुप मृग विहंग ॥ बरणौ किमि तिनकि दशा हि निगम अगम प्रे
मरसहि तुलसी मन बसन रंगे हरि चिर रूप रंग ॥ १२८ ॥ राग कल्याण ॥ दे
खु कोउ परम सुन्दर सखि बटोही ॥ चलत महि मृदु चरण अरुण बारिज
वरण भूप सुत रूप निधि निरखि हौं मोही ॥ अमल मरकत श्याम नील
सुखमा धाम गौर तनु सुभग शोभा सखि जो हौं ॥ जुगल विच नारि सुकुमा
रि सुठि सुंदरी इन्दिरा इन्दु हरि मध्य जनु सोही ॥ कर निवर धनु तीर
रुचिर कटि तूणीर धीर सुर सुखद मर्दन अवनि द्रोही ॥ अम्बुजायत
नयन वदन छवि बहु मयन चारु चितवनि चतुर लेत चित पोहीं ॥ वच
न प्रिय सुनि श्रवण राम करुणा भवन चितै सन अधिक हित मोहिं न·
मोही ॥ दास तुलसी नेह विवस विसरी देह जान नहिं आपु तेहि का
लौ वो ही ॥ १२९ ॥ राग केदारा ॥ सखि नीके कै निरखि कोउ सुठि सुन्दर ब
टोही ॥ मधुर मूरति मन मोहन जोहन योग वदन सरो भास दन देखि हे
मोही ॥ सांवरे गोरे किशोर सुर मुनि चित चोर उभय अन्तर येक नारि·
सोही ॥ मनहुं वारिद विधु बीच ललित अति राजति तडित निज सह
जनि छोही ॥ उर धीरज धरि जन्म सुफल करि सुनहि सुमुखि जिय विकल
न होही ॥ को जाने कौने सुकृत लह्यौ है लोचन लाहु ताहि ने बारहि बार कह
नि होनी ही ॥ सखिहि सुधि पद दई प्रेम मगन भई सुरति विसरि गई आपनी·
ओही ॥ तुलसी रही है ठाढी पाहन गढी सी काढी न जाने कहां ते आई कौन
कौ कोही ॥ १३० ॥ मोहै मन के मोहन जोहन जोग जोटी जोही ॥ थोरी ही वयस गो
र सांवरे सलोने लोचन ललित विधु वदन बटोही ॥ शिर निज दामु कुटम
भूता सुमन जनु नैति सिय लखि नव पल्लव वरवाही ॥ कि ये मुनि भेष नीर धरे धनु
तीर नीर सोहे मग को है लागि परै न मोही ॥ शोभा को सांचो संवारि रूप जात
रूप नारि नारि तिर धीविर छिसंग सो सोही ॥ राजन रुचिर तनु सुन्दर श्याम
के कबहु वाहे न कर्नों घीस लागे कहौं का तोही ॥ सनेह शिथिल सुनि वच

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नसकलसियचितई अधिक हित सों सोही ॥ तुलसी मानहुं प्रभु कृपा·
की मूरति फिरि हेरि कै हरषि हियो लियो है पोही ॥ १३१ ॥ सखि सरद वि
मल विधु बदन वधूटी ॥ ऐसी ललना सलोनी न भई न है न होनी रतीरची
विधि जो छोलत छवि छूटी ॥ सांवरे गोरे पथिक बीच सोहती अधिक ति
हुं त्रिभुवन शोभा मानहु लूटी ॥ तुलसी निरखि सिय प्रेमवश कहै तिय
लोचन शिशुहुं देह अमिय घूटी ॥ १३२ ॥ सोहैं सांवरो पथिक पाछे ल·
लना लोनी ॥ दामिनी बरन गोरी लखि सखि तृण तोरी बीती है वय
किशोरी जोबन होनी ॥ नीके कै निकाई देखि जनम सुफल लोखि हम
सी भूरि भागिनि न भसन सोनी ॥ तुलसी स्वामी स्वामिनि जोह मोही हैं
भामिनी शोभा सुधा पिये करि अखियां दोनी ॥ १३३ ॥ पथिक गोरे सां
वरे सुठि लोने ॥ सङ्ग सुतिय जाके तनु ते लहि है द्युति सुवर्ण सरोरुह सो
ने वय किशोर सरि पारि मनोहर वयस शिरोमणि होने ॥ शोभा सुधा
आलि अंचवहु करि नयन मञ्जु मृदु दोने ॥ हेरत हृदय हरत नहिं हेर
त चारु विलोचन कोने ॥ तुलसी प्रभु किधौं प्रभु के प्रेम पढे प्रगट कपट
बिनु टोने ॥ १३४ ॥ मनोहर ताके मानो चयन श्यामल गौर किशोर प
थिक दोउ सुमुखि निरखि भरि नयन ॥ बीच बधू विधु बदन विराजति
उपमा को कहुं कोउ हयन ॥ मानहुं रति ऋतुनाथ सहित मुनि वेस
बनायो है मयन ॥ किधौं सिंगार सुखमा सुप्रेम मिलि चले जग चित·
वित लयन ॥ अद्भुत त्रयी किधौं पठई है विधि मग लोगनि सुख दयन
सुनि सुचि सरल सनेह सुहावनि ग्राम बधुन्ह के वयन ॥ तुलसी प्रभु
तरुतर विलम्ब किये प्रेम कनौडे कयन ॥ १३५ ॥ वय किशोर गोरे सां
वरे धनु वाण धरे हैं ॥ सब अंग सहज सुहावने जीव जीते नयन निदर
नि विधु निदरे हैं ॥ तून सुमुनि पट कटि कसे जटा मुकुट करे हैं ॥
मंजु मधुर मृदु मूरति पान होन पायनि कैसे धौं पय विचरे हैं ॥ भय बीच
बनिता बनी लखि सोहि परे हैं ॥ मद[illegible] पियासा प्रिय सरवा मुनि विभेपव मावेलि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पे मन आनि हरे हैं ॥ सुनि जहं तहं देखन चले अनुराग भरे हैं ॥ रामपथि
कछवि निरखि के तुलसी मग लोगनि धाम काम बिसरे हैं ॥ १३६ ॥ कैसे पि
तु मातु कैसे ते प्रिय परिजन हैं ॥ जग जलधि ललाम लोने गोरे स्याम जिन प
ठये हैं ऐसे बालक न बन हैं ॥ रूप के न पारावार भूप के कुमार मुनि भे-
ष देखत लोनाई लघु लागत मदन हैं ॥ सुखमा की मूरति सी साथ नि
सिनाथ मुखी नख सिष अङ्ग सब सोभा के सदन हैं ॥ पङ्कज करनि-
चाप तीर तरकस कटि सरद सरोजहु ते सुन्दर चरन हैं ॥ सीता राम ल
षण निहारि ग्राम नारि कहैं हेरि हेरि हेरि हेली हिय के हरन हैं ॥ प्रा
नहु के प्रान से सुजीवन के जीवन से प्रेमहु के प्रेम रङ्क कृपन के धन
हैं ॥ तुलसी के लोचन चकोरनि के चन्द्रमा से आछे मन मोर चित चा-
तक के घन हैं ॥ १३७ ॥ राग भैरव ॥ देखि हौ पथिक गोरे सांवरे सुभग
हैं ॥ सुतिय सलोनी सङ्ग सहत सुगम हैं ॥ सोभा सिन्धु सम्भव से नी
के नग हैं ॥ मातु पितु भाग बस गये परि फग हैं ॥ पायन पनहीं न म
दु पंकज से पग हैं ॥ रूप की मोहनी मेलि मोहे अग जग हैं ॥ मुनि
भेष धरे धनु सायक सुलग हैं ॥ तुलसी हिये लसत लोने डग हैं ॥ १३८ ॥
पथिक पयादे जात पङ्कज से पाय हैं ॥ मारग कठिन कुस कण्टक निका
य हैं ॥ सखी भूखे प्यासे पै चलत चित चाय हैं ॥ इनके सुकृत सुर सङ्कर
सहाय हैं ॥ रूप सोभा प्रेम के से कमनीय काय हैं ॥ मुनि वेष किये कैधौं ब्र
ह्म जीव माय हैं ॥ बीर बरियार धीर धनुधर राय हैं ॥ दसचारि पुर पाल
आलि उरगाइ हैं ॥ मग लोग देखत करत हाहा हाय हैं ॥ बन इनको
बाम विधि बबनाय हैं ॥ धन्य ते जे मीन से अवधि अम्बु आय हैं ॥ तुलसी
सो प्रभु जिन्ह के भले भाय हैं ॥ १३९ ॥ राग आसावरी ॥ सजनी हैं कोउ राजकु
मार पंथ चलत मृदु पद कमलन दोउ रूप सील आगार ॥ राजिव नयन स्या
मतनु आगे सोभा अमित अपार ॥ डारों वारि अङ्ग अङ्गनि पर कोटि कोटि
सत मार ॥ पाछे गोर किसोर मनोहर लोचन ललित सुठार ॥ कटि तू

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तीरकसे कर सर धनु चले हरणछितिभार ॥ युगलबीचसुकुमारिनारिए
कराजतिविनहिंसिंगार ॥ इन्द्रनीलहाटकमुक्तामणिजनुपहिरेम
हिहार ॥ अवलोकहु भरिनयनविकलजनिहोहु करहुसुविचार ॥ मु
निकहँयहशोभाकहँ लोचन देह गेह संसार ॥ सुनिप्रियवचनचितैहि
तकैरघुनाथकृपासुखसार ॥ तुलसिदासप्रभुहरेसबनिकेमनतनरहो
नसँभार ॥ ४० ॥ रागटोडी ॥ देखिरी सखी पथिकनखशिखनीकेहैं ॥
नीलेपीलेकमलसेकोमलकलेवरनितापसहूभेषकियेकामकोटिफी
केहैं ॥ सुकृतसनेहशीलसुखमासकेलिसुखविरचे विरंचि किधौं अ
मितअमीकेहैं ॥ रूपकीसौदामिनीसोहतिसङ्ग उमहुं रमानें आछेस
ङ्ग अङ्ग तीकेहैं ॥ वनपटकसेकटितूणतीरधनुधरे धीरवीरपालक
कृपालसबहीकेहैं ॥ पानहीनचरणसरोजनिचलतमगकाननपठा
येपितुमातकैसेहीकेहैं ॥ आली अवलोकिलेहुनयननिकोफलयेहु
लाभकेसुलाभसुखजीवनसेजीकेहैं ॥ धन्यनरनारिजेनिहारिविनुग
हकहु आपने आपनेमनमोलविनुबीकेहैं ॥ विबुधवरषिफूलहरषि
हियेकहतयामलोगमगनसनेहसियपीकेहैं ॥ योगीजनअगमद
रशपायोपांवरनमुदितवचनसुनिसुरपतिसचीकेहैं ॥ प्रीतिकेसुपा
लकसेललितसुजनमुनिमगचारुचरितलषणरामसीकेहैं ॥ योग
नविरागयागनपनतीरथत्यागयेही अनुरागभागखुलेतुलसीकेहैं
॥ ४१ ॥ रीतिचलिवेकी चाहि प्रीतिपहिचानिकै अपनी अपनीकहै
प्रेमपरवशअहै मञ्जुमृदुवचनसनेहसुधासानिकै ॥ सांवरेकुअर
केचरणकेचराइचीहवधूपगुधरतिकहाधौंजियजानिकै ॥ युगल
कमलपद अङ्कयोगवतजानगोरेगातकुँअरमहिमामहानिकैगन
कीकहनिनीकीरहनिलहरणसीकीनिनकीगहनिजेपथिकउरआ
निकै ॥ लोचनसजलतनपुलकमगनमनहोतभूरिभागीयथातुलसी
बखानिकै ॥ ४२ ॥ रागकेदारा ॥ जेहिनेहिमगसियरामलषणगत

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नहँ नहँ नर नारि बिनु छर छरिगे ॥ निरखि निकाइ अधिक बिथकित भये बिधि निपन सरस्यो भाग्य भरिगे ॥ जोते बिनु बये बिनु निफल निरये बिनु सुकृत सुखेन सुरसालि फूलि फरिगे ॥ मुनिहुं मनोरथको अगम अलभ्य लाभ सुगम सो राम लघु लोगनि को करिगे ॥ लालची कौ नीके कूर पारस परहैं पालेजान तन कोहे कहाकी वैसी बिसरिगे ॥ बुधि न बिचारन बिचारन सुधार सुध देह गेह नेह नाते मनते निसरिगे ॥ बरषि सुमन सुर हरषि कहैं अनायास भवनिधि नीचनीके तरिगे ॥ सोस नेह समय सुमिरि तुलसीहु के से भली भांति भले पैन भले पांसे परिगे ॥ १७३ ॥ वोले राजदेन को रजाय सुभो कानन को आनन प्रसन्न मनमोद वडो काजु भो ॥ मातु पितु बन्धु हित आपनो परम हितु मोको बिस्वहू के ईश अनुकूल आजु भो ॥ असन अजीरन को समुझि तिलक तज्यो बिपिन गवन भले भूषे को सुनाजु भो ॥ धरमधुरीन धीर बीर रघुबीर जू को कोटिराज सरिस भरत जू को राजु भो ॥ ऐसी बातें कहत सुनत मग लोगन की चल जान आन दोऊ मुनि को सो साजु भो ॥ ध्याइवे को गाइवे को सेइवे को सुमिरिवे को तुलसी सब भांति सुख दसमाजु भो ॥ १७४ ॥ सिरिस सुमन सुकुमारि सुखमा की सी भव सियराम वडे हीस को बसडू लई है ॥ मोर्द्धा राम को सभान प्रिया हू के प्रारा प्राण जानि पानि प्रीति नीनी निकपाग्री लमई है ॥ आलवाल अवध सुकामतरु कामवेलि हरि करि कै कैपी बिपनि वेलि बई है ॥ आपु पति पूत गुरुजन प्रिय परिजन अजाहू को कुटिलता सह दया दई है ॥ पङ्कज से पग निनपानहो परूप पथ कैसे निवहै है ॥ नि ।है गैगति नई है ॥ एही सोच सङ्कट मगन मग नरनारि सबको सुमति राम रागरङ्ग रई ॥ एक कहैं बिधि दाहिनो हम को भयो उत कीन्ही पीठ रम को सुडी रिस भई है ॥ तुलसी सहित बन वासी मुनि हमरी औ अनायास अधिक अघाई बनि गई है ॥ १७५ ॥ राग गौरी ॥ नीके कै मैन बिलोकन पाये सखि पेहि मग पुग पथिक

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मनोहर वधू विधुवदन समेन सिधाये नपन सरोजकिसोर वय॰
सवर यीस जटा रवि सुकट वनाये ॥ कटिमुनि वसन तून धनुसर
कर स्यामल गौर सुभाय सुहाये ॥ सुन्दर वदन विशाल वाहु उर तनु
छवि कोटि मनोज लजाये ॥ चितवत मोहि लगी चौंधी सी जानो
न कौन कहाते आये ॥ मन गये संग सोच वश लोचन मोचत वारि
किनो समुझाये ॥ तुलसीदास लालसा दरसकी सोइ पूरवै जेहि आ
निदेखाये ॥ १४६ ॥ पुनि न फिरे दोउ वीर वटाऊ ॥ स्यामल गौर सह
ज सुन्दर सखि वारक बहुरि विलोकिवे काऊ ॥ कर कमलनि सर सुभ
ग सरासन कटि मुनि वसन निषङ्ग सुहाये ॥ भुज प्रलम्व सव अङ्ग मनो
हर धन्य सो जनक जननि जेहि जाये ॥ सरद विमल विधु वदन जटा सिर
मञ्जुल अरुण सरोरुह लोचन ॥ तुलसिदास मन मे मारग मे राजत को
टि मदन मद मोचन ॥ १४७ ॥ राग केदार ॥ आली काहु तौ बूझन पथि
कहा धौं सिधैहैं ॥ कहांतें आये हैं को हैं कहा नाम स्याम गोरे काज कै॰
कुसल फिरि एहि मग ऐहैं ॥ उठत वयस मन सभी जन सलोने सुठि सो॰
भा देखवैया विनु वित ही विकैहैं ॥ हिये हरि लेत लोनी ललना समेत
लोचन निलाहु देत जहां जहां जैहैं ॥ राम लखन सिय पथ की कथा पृ
थुल प्रेम विथकी कहतीं सुमुखी सवै हैं ॥ तुलसी तिन सरि ते ते भूरि
भाग जे कसुनि के सुचित ते हि समय समै हैं ॥ १४८ ॥ राग केदारा ॥ व
हुत दिन वीते सुधि कछु न लही ॥ गये जो पथिक गोरे सांवरे सलोने स॰
खि सङ्ग नारि सुकुमार रही ॥ जानि पहिचानि वितु आपु ते हू ते प्राणहू
ते प्यारे प्रियतम उपही ॥ सुधा के सनेह हू के सार ते सांवरे विधि जै से भा
यते हैं भांति जाति न कही ॥ वहुरि विलोकिवे कबहु कहत तनु पुलकि न
यन जलधार वही ॥ तुलसी प्रभु सुमिरि ग्राम युवती सिथिल विनु प्रया
स परी प्रेम सही ॥ १४९ ॥ राग गौरी ॥ आली री वे पथिक जे एहि पथ परौं
सिधाये ॥ ते तौ राम लखन अवध तें आये ॥ सङ्ग सिय सव अङ्ग सहज

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सुहाये ॥ रनिकाम बरतु पतिको लजाये ॥ राजा दशरथरानिको शिला
जाये ॥ कैकयी कुचालि करि कानन पठाये ॥ बचनकु भामिनिके भूप
हि क्यों मारे ॥ हाय हाय राय बाम बिधि भरमाये ॥ कुलगुरु सचिवन
काहू समुझाये ॥ कांचु मणि लै अमोल मणि कगंवाये ॥ भागमग लोग
निके देरवन पाये ॥ तुलसी सहित जिन गुणगण गाये ॥ ५० ॥ ॥



सखी जब नें सीता समेत देखे द्वौ भाई ॥ तबतें परै न कल ककुन सोहाई
नरवशिषनी के नीके निरषिनि काई ॥ तनु सुधि गई मन अनन नजाई
हेरनि बिहसनि हियलिये हैं चोराई ॥ पावन प्रेम बिबश भई हौं पराई ॥
कै सो पितु मान प्रिय परिजन माई ॥ जीवत जीव के जीवन हि पगाई ॥ स
मुझ सो चित करि हित अधिकाई ॥ प्रीति ग्राम बधुन की तुलसी गाई ॥
५१ ॥ जब तें सिधाये येहि मारग लषण राम जानकी सहित तब तें न सुधि
लही है अबध गये हों फिरिकै धौं चढि बिन्धु गिरिकै घों कहूं रहे सो ककुन काहू

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

२६२७
हिन्दी काव्य
१२०

कहीहै ॥ एक कहैं चित्रकूटनिकटनदीकेनीरपरणकुटीरकरिवेसे
वातसहीहै ॥ सुनियत भरतमनाइवेको आवतहैं होइगीपैसोईजोबि
धातावित चहीहै ॥ सत्यसिन्धुधरमधुरीणरघुनाथजूके आपनी
निवाहिवेन्नृपकीनिरवहीहै ॥ दश चारिवरषविहारवनपदचारकरि
वेपुनीतशैलसरसरिमहीहै ॥ मुनिसुरसुजनसमाजकेसुधारिका
जविगरि २ जहां २ जाकीरहीहै ॥ पुरपाउधारिहैं तुलसीहूसेजननि
नजानिकैगरीवागाढगहीहै ॥ १५२ ॥ रागसारङ्ग ॥ एउपहीकोऊकुं
अरअहेरी ॥ श्यामगौरधनुवाणतूणधरिचित्रकूट अब आइरहेरी
इनहिबहुत आदरत महामुनिसमाचार मेरेनाहकहेरी ॥ वनितावंधु
समेतवसतवनपितुहितकठिनकलेशसहेरी वचनपरस्परकहतिकि
रातिनिपुलकिगातजलनयनवहेरी ॥ तुलसीप्रभुहिविलोकतएकर
कलोचनजनुविनुपलकरहेरी ॥ १५३ ॥ चित्रकूट अतिविचित्र
सुन्दरवनमहिपवित्रपावनिपयसरितसकलमलनिकन्दनी ॥ सा
नुजजहांवसतराम लोकलोचनाभिरामवाम अङ्गवामावरविश्वव
न्दिनी ॥ ऋषिवर तहांछन्दवासुगावतकलिकोकिलासुकीरतनउन
मायकायक्रोधकन्दनी ॥ वरविधानकरतगानवारतधनमानप्राण
झरनाझरझिगझिगजलतरङ्गनी ॥ वरविहारचरणचारुपाडर
चम्पकचनारुकरनहारुवारुपारुपुरपुरन्धनी ॥ येवननवटरसा
रङ्गनमनमृगमरालमञ्जुगुंजनहे अलिअलिङ्गनी ॥ चितवतमुनि
गणचकोरबैठेनिजठौरठौर ॥ अक्षयअकलङ्कशरदचन्द्रचन्द्रनीउदित
सदावन ॥ प्रकाशमुदितवदततुलसिदास जयरघुनन्दनजयजनकनन्द
नी १५४ ॥ फटिकशिलामृदुविशालसंकुलसुरतरुतमाललालितल
ताजालहरतिछविवितानकी ॥ मन्दाकिनीतटिनितीरमञ्जुमृगविह
ङ्ग भीरधीरमुनिगिरागंभीरसामगानकी मधुकरपिकवरहिमुख
सुन्दरगिरिनिर्झरझरजलकनघनछांह क्षणप्रभाभानकी सन

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तुसततुषलिप्रभाउसन्तनवहविविधिचाउजनुविहारकलितअवनिप
त्रवाणकी ॥ विरचिनतहँपरणशालअतिविचित्रलषणलालनिव
सतहंनितकृपालरामजानकी ॥ निजकरराजीवनयनपल्लवदलर
चितसयनप्यासपरसपरपियूषप्रेमपानकी ॥ सियअङ्ग लिखेधातुराग
सुमननिभूषणविभागतिलककरनिक्योंकहोंकलानिधानकी ॥ मा
धुरीविलासहासगावतयसतुलसिदासवसतिहृदयजोरीप्रियपर
मप्राणकी ॥ ५५ ॥ रागकेदारा ॥ लोनेलाललषणसलोनेरामलोनी
सियचारुचित्रकूटबैठेसुरतरुतरहैं ॥ गौरेसांवरेशरीरपीतनीलनीर
जसेप्रेमरूपसुखमाकेमनसिजसरहैं ॥ लोनेलोनेलोचनजटनिकेमु
कुटलोनेलोनेवदननिजीतेकोटिसुधकरहैं ॥ लोनेलोनेधनुषविशि
षकरकमलनिलोनेमुनिपटकटिलोनेसरघरहैं ॥ प्रियाप्रियबन्धुको
देखावतविटपवेलिमञ्जुकञ्जशिलातलदलफलकरहैं ॥ ऋषिनके
आश्रमसराहेमृगनामकहेलागेमधुसरितझरतनिर्झरहैं ॥ नाचतबरही
बौकैगावतमधुपपिकबोलतविहगनभजलथलचरहैं ॥ प्रभुहिविलो
कमुनिगणपुलकेकहतभूरिभागभयेसबनीचनारिनरहैं ॥ तुलसी
सोसुखलाहुलूटतकिरातकोलजाकोसिसिकनसुरविधिहरिहरहैं ॥
५६ ॥ रागसारङ्ग ॥ आपरहेजबतेदोभाई ॥ तबतेचित्रकूटकानन
कीविदिनदिनअधिकअधिकअधिकाई ॥ सीतारामलषणपदअ
ङ्कितअवनिसुहावनिवरणिनजाई ॥ मन्दाकिनिमज्जतअवलोकत
त्रिविधपापत्रयतापनसाई ॥ उकठेउहरितभयेजलथलरुहनितनू
ततनवसुहाई ॥ फूलनफलतपल्लवतपलुहततविटवेलिअभिमत
सुमनकाई ॥ सरितसरनिसरसीरुहसंकुलसदनसवांरिरमाजनुलाई ॥ कु
जतविहगमञ्जुगुञ्जतअलिजातपथिकजनुलेनबोलाई ॥ विविधस
रीरचारफलमूलनिजहंवहंबसिरहेकुटीबनाई ॥ सीलसुभगसिस
अचरआपसबकरतजोगजपतपमनलाई ॥ भएसबसाधुकिरातकि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रानिनिरामहरहरथापिरि गइ कलुषाई खगमृग मुदित एक संग
विहरत सहज विषम बड़ बयर विहाई काम केलि वाटिका विब
धुवन लघु उपमा कवि कहत लजाई सकल भुवन शोभा सकेलि
मनोराम विपिन विधि आनि बसाई ः वनमिस मुनि निय मुनि वार
ल करत रघुवर विमल बडाई ः पुलकि शिथिल तन सजल
विलोचन प्रमुदित मन जीवन फल पाई ः क्यों कहौं चित्रकूट गिरि
सम्पति महिमा मोद मनोरनाई ः तुलसी जहं बसि लखन राम सिय
आनन्द अवधि अवध बिसराई ॥ १५७ ः राग गौरी ः देखत चित्रकूट वन
मन अति होत हुलास ः सीता राम लखण प्रिय तापस वृन्द निवास सरित
सुहावनि पावनि पापहरणि पय नाम ः सिद्ध साधु सुर सेवित देति सकल म
नकाम ः विटप बेलि नव किशलय कुसुमित सघन सुजाति ः कन्द मूल ज
ल थल रुह अमित अनवन भांति ः मंजुल मञ्जु बकुल कुल सुरतरु ताल तमा
ल ः कदलि कदम्ब सुचम्पक पाटल पनस रसाल ः भूरुह भूरि भरे ज
नु छवि अनुराग सुभाग वन विलोकि लघु लागहि विपुल विबुध वन
बाग ः जाइ न बरणि राम वन चितवत चित हरि लेत ः ललित लता
द्रुम संकुल मनहु मनोज निकेत ः सरित सर नि सर सीरुह फूले नाना
रङ्ग· गुञ्जत मंजु मधुप गण कूजत विविध विहङ्ग· ः लषण कहेउ र·
घुनंदन देखिय विपिन समाज ः मानहुं चयन मयन पुर आयउ प्रिय
ऋतुराज ः चित्रकूट पर राउर जानि अधिक अनुरागु ः सखा सहित ज
नु रतिपति आये खेलन फागु ः झिल्लि झांझि झरना डफ पनव मृदंग निसा
न ः भेरि उपङ्ग· सुभृङ्ग· रवताल कीर कल गान ः हंस कपोत कबूतर बो
लत चक्र चकोर ः गावत मनहु नारि नर मुदित नगर चहु ओर ः चि
त्र विचित्र विविध मृग डोलत डोंगर डाङ्ग· ः जनु पुर बीथिन्ह विहरत छ
यल संवारे स्वांग वर· हिन रहहि मोर पक गावहि सुस्वर सुराग बंधान ः वि
लज नरुण तरुणी जनु खेलहि समय समान ः भरि भरि सूण्ड करनि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

करि जहँतहँ डारहिं वारि भरतपरसरपिचकनि मनहुमुदितनरना
रि चींठि चढाइ खिसुनकपिकूदतडारहिं डार जनुमुहलाइलाइगे
हमसि भरसरनि असवार ः लिये परागसुमनरसडोलत मलयसमी
र ः मनहुं असर गजाविरकतभरतगुलाल अबीर ः कामकौतुकीरहिवि
धिप्रभुहितकौतुकीह ः रीझिरामरतिनाथहिजगविजईवरदीह ः दुस
वहुदासमोरजनिमानहुमोरिरजाइ ः भलेहिनाथमाथेधरिआपतुच
लेउवजाई ः मुदितकिरातकिरातिनीरघुवरभूपनिहारि ः प्रभुगुनगावन
नाचनचलेजोहारिजोहारि ः देहिअसीसप्रसंसहिं मुनिसुरवरषहिंफू
ल ः गवनेभवनरामविउरमूरतिमङ्गमूल ः चित्रकूटकाननछविकोकै
विवरनैपार ः जहंसियलखनसहितनितरघुवरकरहिंविहार ः तुल
सिदासचांचरिमिसकहेरामगुनग्राम ः गावहिंसुनहिंनारिनरपाव
हिं पद अभिराम ः १५८ ः रागवसन्त ॥ आजुवन्यौहै विपिनदेखोसम
धीर ः मानोखेलतफागुमुदितमदनवीर ः वटवकुलकदम्वपनसर
साल ः कुसुमिततरुनिकरकुरवतमाल ः मानोविविधभेषधरेछयल
यूथविचवीचलताललनावरूथ ः पनवानकनिर्झर अलिउपंगबो
लतपरावनमजुडफमृदंग ः गायकसुखकोकिलिझिल्लिताल ः नाच
तवहुभांतिरहीमराल ः मलपानिसीतलसुरभिमन्द ः वहसहित
सुमनरसरेनुवृन्द ः मानोछिरकतफिरतसबनिसुरङ्ग ः भ्राजतउदा
रलीलाअनङ्ग ः कौतुकजेनेसुरनरअसुरराग ः हरिसिद्धमुनिनकेप
गहिलाग ः कहतुलसिदासतेहिछाडमयन ः जेहिराखरामराजीवन
यन ः १५९ ः ऋतुपतिआयेभलोवन्योसमाज ः मानोभयेहैमदनम
हराज आज ः मानोप्रथमफागुमिसकरिअनीति ः होरीमिसअरिपुर
जारिजीति ः मारुतमिसपवप्रजाउजारि नगरनगरवसारविपिनझारि
सिंहासनसैलसिलासुरङ्ग ः काननछविरतिपरिजनकुरङ्ग ः सितछ
त्रसुमनवल्लीवितान ः चामरसमीरनिर्झरनिसान ः मधुमाधव

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हौ अनिपधीर ⁘ वरविपुल विटपवानेत वीर मधुकर सुककोकि
लवृन्दिवृन्द ⁘ वरणहिं विशुद्ध पशविविधछन्द ⁘ महिपरतसुमनर
सफलपराग ⁘ जनु देत इतर नृपकरविभाग कलिसचिवसहितनय
निपुनमार ⁘ कियोविश्वविवशचारिहु प्रकार ⁘ विरहिनपरनितनई
परइमारि ⁘ डांढियहि सिद्धसाधकप्रचारि ⁘ तिनकीनकामअवैचा
पिछांह ⁘ तुलसीजेवसहिंरघुवीरवांह ⁘ १६० ⁘ रागमल्लार ⁘ सबदि
नचित्रकूटनीकोलागत ⁘ वरषाऋतु प्रवेशविशेषगिरिदेखतमन ⁘ अ
नुरागत ⁘ चहुंदिसिवनसम्पन्नविहगमृगबोलतसोभापावतजन
सुनरेशदेशपुर प्रमुदितप्रजासकलसुखछावत ⁘ सोहतश्यामजल
दमृदुघोरतधातुरंगमगेशृंगनि ⁘ मनहुं आदिअम्भोजविराजत
सेवितसुरमुनिभृङ्गनि ⁘ शिषरपरहि घनहिंमिलतिवगपांतिसोछ
विकविवरणी ⁘ आदिवराहविहरिवारिधिमानोउठ्योहैदशनध
रिधरणी ⁘ जलयुतविमलशिलनिझलकतनभवनप्रतिविम्बतरङ्ग
मानहुंजगरचनाविचित्रविलसतिविराटअंगअङ्ग ⁘ मन्दाकिनिहिं
मिलतझरनाझरिझरिभरिभरिजलआछे ⁘ तुलसीसकलसुकृतसु
खलगेमनोरामभक्तिकेपाछे ⁘ १६१ ⁘ आजुकोभोरुऔरसोमाई ⁘
सनोनहरिविदवन्दीधुनिगुणिगणगिरासुहाई ⁘ निजनिजपतिसुन्द
रसदननितेंरूपशीलछविछाई ⁘ लेनअशीशसीयआगेकरिमोपै
सुतवधूनआई ⁘ वूझीहोंनविहसिमेरेरघुवरकहांरीसुमित्रामाता ⁘
तुलसीमनुहुमहासुखमेरेदेखिनभयोविधाता ⁘ १६२ ⁘ जननीनि
रषतिवाणधनुहिंयां ⁘ वारवारउरनयननिलावतिप्रभुजीकीललित
पनहियां ⁘ कवहुंप्रथमज्योंजाइजगावतिकहिप्रियवचनसवारे ⁘ उ
ठहुतातवलिमातवदनपरअनुजसखासबद्वारे ⁘ कवहुंकहतियोंव
डीवारभईजाहुभूपपहिंभैया ⁘ वन्धुवोलिजेंइयजोभावैगईनिछावरिमैं
या ⁘ कवहुसमुझिवनगवनरामकोरहिचकिचित्रलिखीसी ⁘ तुलसीरामप

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हसमयकहैं तेलागति प्रीति सखीसी ॥ ६३ ॥ माई री मोहिनकोउसमुझ
वैरामगवनसांचोकिधौंसपनोमनपरतीतिनआवै ॥ लगेरहतमेरेन
यननिआगेरामलखनअरुसीता ॥ तदपिनमिटतदाहयाउरकोवि
धिजोभयोविपरीता ॥ दुखनरहैरघुपतिहिविलोकततनुनरहैबि
नुदेखे ॥ करतनप्राणपयानसुनहुसखिअरुझिपरीयहिलेखे ॥ कौ
सल्याकेविरहवचनसुनिरोइउठींसवरानी ॥ तुलसिदासरघुवीरवि
रहकीपीरनजातिवखानी ॥ ६४ ॥ जवजवभवनविलोकतिसूनो
तवतवविकलहोतिकौसल्यादिनप्रतिदुखदूनो ॥ सुमिरतिवालवि
नोदरामकेसुन्दरमुनिमनहारी ॥ होतिहृदयअतिसूलसमुझिपद
पङ्कजअजिरविहारी ॥ कोअवप्रातकलेऊमांगतरूठिचलैगो माई
स्यामतामरसनयनस्रवतजलकाहिलेउंउरलाई ॥ जियेंतोविपतिस
हौंनिशिवासरमरौंमनपछितायो ॥ चलतविपिनभरिनयनरामको
वदननहेरनपायो ॥ तुलसिदासयहदुसहदसाअतिदारुणविरहघ
नेरो ॥ दूरिकरैकोभूरिकृपाविनुसोकजनितरुजमेरो ॥ ६५ ॥ मेरोयहअ
भिलाषविधाता ॥ कवपुरवैसखिसानुकूलह्वैहरिसेवकसुखदाता ॥
सीतासहितकुशलकोसलपुरआवतहैंसुतदोऊ ॥ श्रवणसुधासमव
चनसखीकवआइकहैगो कोऊ ॥ सुनिसन्देशप्रेमपरिपूरणहौंसम्र
मउठिधावौंगी ॥ वदनविलोकिरोकिलोचनजलहरषिहियेमहला
वौंगी ॥ जनकसुताकवसासुकहैमोहिरामलखणकहैमैया ॥ वाहुजो
रिकवअजिरचलाइहौंस्यामगौरदोउभैया ॥ तुलसिदासयहिभांतिमने
रथकरतिप्रीतिअतिवाढी ॥ थकितभईउरआनिरामछविमनहुंचित्रलि
पिकाढी ॥ ६६ ॥ सुन्योजवफिरिसुमन्तपुरआयो ॥ कहिहैकेहाप्राणप
तिकीगतिनृपतिविकलउठिधायो ॥ पायपरतमंत्रीअतिव्याकुलनृपउ
ठाइउरलायो ॥ दशरथदसादेखिनकह्योकछुहरिजोसंदेशपठायो ॥
बूझिनसकतकुशलप्रियजनकीहृदययहैपछितायो ॥ सांचेहुसुनवि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पोगसुनिवे कहुं चिगविधि मोहि नियायो ॥ तुलसिदासप्रभुजानि निठुरहों न्यायनायविसरायो ॥ हारघुपनिकहिपरयो अवनिजनुनीरमीनविलगायो ॥ ६७ ॥ सुरहनमिरे गोमेरोमान सिकपछिताउ ॥ नारिवसनविचारिकीह्नौं काजसोचनराउ ॥ तिलककाजहुलाइ दैवन चौगुणोचिनचाउ ॥ हृदयदारिनज्योंनविहरयो समुझिशीलसुभाउ ॥ सीयरघुवरलखणविनुभयभभरिभाग्यौन आउ ॥ मोहि वूझिनपरत पातैंकौनकठिनकुघाउ ॥ सुनिसुमन्तकिआनिसुन्दरसुवनसहितजिपाउ ॥ दासतुलसीननहमोकहुमरण अमियपियाउ ॥ ६८ ॥ अवधविलोकिहौं जीवनरामभद्रविहीन ॥ कहाकरिहै आइसानुजभरतधरमधुरीन रामशोकसनेह संकुलतनविकलमनलीन ॥ टूटितारोगयनमगज्यौंहोतसरणसरणसीन ॥ हृदयससुकिसनेहसादरप्रेमपावनमीन ॥ करीतुलसीदासदशरथप्रीतिपरमितिपीन ॥ ६९ ॥ राग गौरी ॥ करतरायमनमोहनुमान ॥ शोकविकलसुखवचननआवैविछुरेकृपानिधान ॥ राजदेनकहुवोलिनारिवसमौजोकह्यौंवनजान ॥ आयसुशिरधरिचलेहरषिहियकाननभवनसमान ॥ ऐसेसुतकेविरहअवधिलौंजोराखौंयहप्राण ॥ तोमिटिजाइप्रीतिकीपरमितिअयशसुनौनिजकानरामगयेअजहूंहौंजीवनससुरतहींअकुलान ॥ तुलसिदासतनुतजिरघुपतिहितकियोप्रेमपरवान ॥ ७० ॥ राग सोरह ॥ असतैंकौंकहुवचनकह्योरी ॥ रामजाहुकाननकठोरतेरोकसधोंहृदयरह्योरी ॥ दिनकरवंशपितादशरथसोरामलखणसेमाई ॥ जननीतूंजननीतोकहाकहौंविधिकेहिखोरिनलाई ॥ होंलहिहौसुखराजमातहैसुतशिरछत्रधरैगो ॥ कुलकलङ्कमलमूलमनोरयतूविनुकोनकरैगो ॥ ऐहेंरामसुखीसवह्वै हैंईशअयशममहरिहै ॥ तुलसिदाससमोहिवडोसोचहै जन्मकोनविधिभरिहै ॥ ७१ ॥ तातेहौंदेननदूषणतोहूरामविरोधीउरकठोरतेंप्रगटकियोविधिमोहूं ॥ सुंदरसुखदसुशील

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सुधानिधिजरणिजाइजेहिजोये॥विषवारुणीवन्धुकहियत विधु-
नातेमिटतन चोये॥होनेजोनसुजानशिरोमणिरामसवकेमनहारो
तौनेरी करतूति मातसुनिप्रीतिप्रतीतिकहारो॥मृदु मञ्जुलसांचोस
नेहसुचिसुनन भरतवरवाणी॥तुलसीसाधुसाधुसुरनरमुनिकहत
प्रेमपहिचानी॥१७२॥जौपैहोंमातुमतेमहह्वै हों॥तौजननीजगमेया
मुखकीकहाकालिमाध्वैहों॥कोोंहों-याजुहौंतसुविसपयनिकोनुमा
निहैसांचीमहिमामगिकेहिसुकृतीकोखलवचनविशिखतेंवा॥
॥गहिनजानिरसनाकाहूकीकहोजाहिजोसूझै॥दीनवन्धुका
रुरुणसिंधुविनुकोउनहियेकीवूझै॥तुलसीरामवियोगविषमविषवि
कलनारिनरभारी भरतसनेहसुधासींचेसवभयेतेहिसमयसुखारी
७३॥काहेकोखोरिकैकपिहिलावौ घरहुधीरवलिजांउतातमोहिआ
जुविधनावाँवो॥सुनिवेयोगदियोगरएमकोहोंनहोहुंमोरेप्यारे॥
मेरेनयननिश्रागेतेंरघुपतिवनहिसिधारे॥तुलसिदाससमुझा
इभरतकहश्रांसुपोछिउरलाये॥उपजीप्रीतिजानिप्रभुकेहितम
नहुरामफिरिआये१७४मेरोअवधधौंकहहुकहाहै करहुराजरघुरा
जचरणतजिलैलटिलोगरहाहै॥धन्यमातहौंधन्यलागिजेहिरा
जसमाजढहाहैतापरमोसोप्रभुकरिचाहतसवविनुदहनिदहाहै॥
समसपथकोउकछूकहोजिनिमैदुखदुसहसहाहै॥चित्रकूटचलि
हौंचलियेकलिसमियैमोहिहहाहै॥योकहिभोरभरतगिरिवरकोमा
रगवूझिगहाहै सकलसराहतएकभरतजगजनमिसुलाहुलहाहै
जानिहिसियरघुनाथभरतकोशीलसहेमहाहै॥कैतुलसीजाकोरा
मनामसोंप्रेमनेमनिवहाहै१७५भाईहोंअवधकहारहिहौंरा-
मलखणसियचरणविलोकनकालिकाननिहिंजैहौं यद्यपिमोते
कैकुमातनेह्वै-पति-पाईपोचीसनमुखगयेसरोरोखहिंगेरघुप
तिपरमसकोचीतुलसीयोंकहिचलेभोरहोलोगसकलसंगलागेज

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नुवनजरतदेखिदारुणदवनिकसिविहगमृगभागे १७६ सुकसीग
हवरहियकहप्यारो॰॰ वीरकीरसियराम लखणविनु लागतजग
अंधियारो॰॰ पापिनिचेरिअयानिनृपहितसुअपनहितनतिचारो
कुलगुरुसचिवसाधुशोचतविधिकोनवसाइउजारो अवलोकेन
चलतभरिलोचननगरकोलाहलभारो सुनेनवचनकरुणाकरदे
जवपुरपरिवारसंभारों भैयाभरतभावतेकेसङ्गनतसवलोगसिधा
रो॰॰ हमपरपाइपिञ्जरानेतरसतअधिकअभागहमारो॰॰ सुनिख
गकहतअम्व औगीरहिरामुरुषिमपयन्यारो॰॰ रोतेप्रभुहिपहुँचा
इफिरेपुनिकरतकर्म्मगुणगारो॰॰ जीवनजगजानकीलखणको
रमरणमहीपसवारो तुलसीऔरप्रीतिकीचरचाकरतकहांकृत
चारो १७७ कहेसुकसुनहिसिषावनहारो विधिकरतवविपरीत
वामगतिरामप्रेमपयन्यारो॰॰ कोनरनारिअवधखगमृगजेहि
जीवरामतेप्यारो॰॰ विद्यमानसवकेगवनेवनवदनकरसकोका
रो॰॰ अम्वअनुजप्रियसखासुसेवकदेखिविसादनिसारो पक्षी
परवशपरेपीञ्जरनिलेखोकोनहमारो॰॰ रहीनृपकीछिगहिरा
वकीअवरउवसवारनिहारो॰॰ तुलसीप्रभुनिजचरणपीठमिसि
भरतप्राणरखवारो १७८ तादिनश्रृंगवेरपुरआयो॰॰ राउमरणतेस
माचारसुनिवारविलोचनछायो कुसमसाथरीदेखिरघुपतिकोहेतु
अपनपोजानी कहतकथासियरामलखणकीवैठहिरैनिविहानी
भोरहिभरद्वाजआश्रमह्वैकरिनिषादपतिआगे चलेजमुनकी
तडागनृषितगजघोरघामकेलागे तृकूलचित्रकूटकहजेहिने
हिमुनिवालकनिवताये तुलसीमनहुफणीमणिहूढतनिरखि
हरखिहियधाये १७९॥ रागकेदारा॰॰ बिलोकेदूरितेद्वौवीर उरआ
यतआजानसुभगभुजस्यामलगोरशरीर सीसजटासरसीरुहलो
चनवनेमुनिपरिधनचीर कटनिषङ्गसङ्गसियशोभितकरनिघ

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रे धनुतीर मन ॰ अगहु डोलतनुपुलक सिथिलभयोनलिननयनभ
रे नीर ॥ गडतगे ॰ मानो सकुचपङ्क महु कढतप्रेमवलधीर तु
लसिदासदशादेखिभरतकीउठिधाये ॰ अतिहिं ॰ अधीर लियउठा
इउरलाइकृपानिधिविरहजनितहरिपीर २८० भरतभयेठाढे



करजोरि हैं नसकतसामुहसकुचवससमुझिमातकृतखोरि फि
रिहैं किधौंफिरराककहिहैं प्रभुकलिकुटिलतामोरि हृदयशोच
जलभरेविलोचनदेहनेहभइमोरि वनवासीपुरलोगमहामुनि
किये हैं काठकेसे कोरि दै दै ॰ श्रवण सुन नकोंजहंतहंरहेप्रेममन
वोरि ॥ तुलसीरामसुभाउसुमिरिउरधरिधीरजहि वहोरि वोले
वचनविनीतउचितहितकरुणारससाहिनिचोरि २८१ जानतहोस
वहीकेमनकी जदपिकृपालुकरौंविनतीसोइसादरसुन ॥ दीन
हितजनकी एसेवकसतत ॰ अनन्य ॰ अतिज्यों चातकहियकगतिघ
नकी यहविचारिगवनहुपुनीतपुरहरहुदुसह ॰ आरतपरिजनकी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मेरोपुनिजीवनजानियअसजियजस अहिजासुगईमणिफन
कीमेटहुकुलकलङ्ककोसलपतिअचारे रुनाथमोहिवनकीमो
कोजोइजोइलाईयलगेसोइसोजोउत्पत्तिकुमातपातनकीतुल
सिदाससवदोषदूरिकरिप्रभु अवलाजकरहुनिजपणकी१८२ता
तविचारोधोंहोंकोंआवों तुमसुचिसुहृदसुजानसकलविधिवहुत
कहाकहिकहिसमुझावों निजकरखालखैंचिपाननुतेंजौपितुपग
पानहीवनावों होंउनउरिरिणिपितादशरथतेकसताकोवचनमेटि
पतियावों तुलसीजाकोसुयशतिहुंपुरक्योंतेहिकुलहिकालिम
लावों प्रभुरुखनिरषिनिरास भरतभएजान्योसवहिभांतिविधि
वावों१८३रागसोरठ ॥ वहुरोभरतकह्योकछुचहैं सकुचसिन्धु
वोहितविवेककरिवुधिवलवचननिवाहैं छोटेहुतेछोहुकरिआ
येमैसामुहेनहेरो एकहिवार आजुविधिमेरोशीलसनेहनिवेरो
तुलसीजोफिरिवोनवनैप्रभुतोंहौंआपसुपावों वरफेरियेलक्ष्मण
लरिकाईनाथसाथहौंआवौं१८४॥ रघुपतिमोहिसङ्गकिनलीजे
वारवारपुरजाहुंनाथकेहिकारणआयसुदीजे यद्यपिहौंअति
अधमकुटिलमतिअपराधिनकोजायो प्रणतपालकोमलसु
भावजियजानिशरणतकिआयो जौमेरेतजिचरणआनगतिक
हहुंकछुराखी तौपरिहरहुदयालदीनहितप्रभुअभिअंतरसा
खी नातेनाथकहौंमैपुनिपुनिप्रभुपितुमातुगोसांई भजनहीनन
रदेहवृथाखरस्वानफेरुकीनाई वन्धुवचनसुनिश्रवणनयनराजी
वनीरभरिआयेतुलसिदासप्रभुपरमकृपागहिवांहभरतउरलायेश्र
काहेकोमाननहानिहियेहो प्रीतिनीतिगुणशीलधर्मकहुतुमअ
वलम्वदियेहो तातजातजानिवेनएदिनकरिप्रमानपितुवानी
ऐहोवेगिधरहुधीरजउरकठिनकालगतिजानी तुलसिदास
अनुजहिंप्रवोधिप्रभुचरणपीठनिजदीन्हे मनहुसवनिकेप्राण॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पाहरू भरतआसधरि लीहै १८६ विनती भरत करजोरे दी
नबंधु दीनता दीनकी कबहु परैजनि भोरे तुमसे तुमहि नाथहो
मोकोमोसेजन तुमकोबहुतेरे इहै जानि पहिचानि प्रीतिछमामेबे अ
घ औगुणमेरे यों कहिसीयराम पायन परिलषण लाइउरलीहे
पुलकशरीरनीरभरिलोचन वहतप्रेमप्रणकीहे तुलसीबीते
अवधिप्रथमदिनजौरघुबीरन ऐहौ तौप्रभुचरणसरोजसपथ
जीवतपरिजनहि नपैहौ १८७ रागसोरठ अवसिहौं आयसुपा
इहौंमो जनिमेके कथाकोबिकृपानिधि कैयाकुचपरिकहौंगो भरत
भूपसियरामलषणवनसुनिसानन्दसर ऽ पुरवासिजन अवलोकि
मातसब सुखसंतोषलहौंगो प्रभुजानतजाहिभांति अवधिलौं वन
पालिनिवहौंगो आगेकी विनतीतुलसीतबजबफिरिचरणगहौंगो
१८८ रागसोरठ प्रभुसोंमैं ढीठौ बहुतकईहै कीजैछमानाथआरतलै व
हीकछुकिनईहै यों कहिंबारबार पायनपरिपावरपुलकिलईहै
अपनोदिनदेखिहौंउपनजेहिं विषवेलिबईहै आपोसदासुधारि
गोसांईयोजनतेंबिगारिगईहै यकेवचनपैरतसनेहसरिपरयोमानो
घोरघईहै चित्रकूटतेहिसमयसबनिकीबुद्धिविषादहईहै तुल
सीरामभरतकेविछुरतशिलासप्रेमभईहै १८६ जबतेचित्रकूटतेआ
ये नन्दिग्रामखनिअवनिडासिकुशपर्णकुटीकरिछापे अजिनवस
नफलअसनजटाधरे रहतअवधिचितदीहे प्रभुपदप्रेमनेमब्रतनिर
तमुनिनानिमितमुखकीहे सिंहासनपरपूजिपादुकावारहिंवारजोहा
रे प्रभुअनुरागमागिआयसुपुरजनसबकाजसम्हारे तुलसीज्योंज्यों
घटततेजतनुत्योंत्योंप्रीतिअधिकाई भयेनहैनहोंहिंगेकहूंभुव
नभरतसेभाई १६० रागरामकली राखिभक्तिभलिभलाईभलीभा
तिभरत स्वारथपरमारथपथीजयजयजगकारत जोब्रतमुनिव
रनिकठिनमानस आचरतसोब्रतलियोचातकज्योंसुनतपातक

रत सिंहासनपरसु भगराम चरणपीठिधरत चालत सब राजका
ज आयसु अनुसरत आतु अवधविपिनकब्हु सोचजरणिजरत
तुलसीसमविषमसुमम अगमलखिनपरत ९१ मोहिभावतिकहि
अवतिनहिभरतजूकीरहनि सजलनयनसिथिलवयनप्रभुगुण
गणकहनि असनवसनसयनधरमगुरुअगहनि दिनदिनपण
प्रेमनेमनिरुपाधिनिरवहनि सीतारघुनाथलखणविरहपीर सह
नि तुलसीतजिउभयलोकरामचरणचहनि ९२ जानीहैं शङ्करह
नुमानभरतलखणरामभगति कहतसुगमकरतअगमसुनतमी
ठीलगति लहतसकलचहतसकलयुगयुगजगमगति रामप्रेम
पथतेंकबहुंडोलतिनाहिडगति अधिसिधिविधिचारिसुगति
जाविनुगतिअगति तुलसीतेहिसनमुखविनुविषयठगनिठग
ति ९३ रागगौरी कैकेयी करीधौंचतुरईकौन रामलखणसियव
नहिपठाएपतिपठयोसुरभौन कहाभलोधौंभयोभरतकोलगेत
रुणतदौन पुरवासिनकेनयननीरविनुकबहुनेदेखतिहौंनकोय
त्यादिनरातिविसूरतिवैठिमनहिमनमौन तुलसीउचितनहाइ
रोइवोप्राणगएसंगजौन ९४ हायमीजिवोहायरह्यो लगीन
सङ्ग चित्रकूटहुतेंह्यौं कहाजातवह्यो पतिसुरपुरसियरामलख
णवनमुनिव्रतभरतगह्यो होंरहिघरमसानपावकज्योंमरिवोईमृत
कदह्यो मेरोहियोकठोरकरिवेकहंविधिकहुंकुलिशलह्यो तुल
सीवनपहुंचाइफिरीसुतक्योंकछुपरतकह्यो ९५ होंतोसरिरही
अपनोसो रामलखणसियकोसुखमोकहंभयोसखीसपनोसोजि
नकेविरहविषादवंटावहुखगमृगजीवदुखारी मोहिकहासजनी
समुझावनिहौतिनकीमहतारी भरतदशासुनिसुमिरिभूपगतिदे
खिदीनपुरवासी तुलसीरामकहतहौंसकुचनिह्वैहैजगउपहासी
९६ आलीहौंइन्हहिंवुझावौकैसें लेनहियेभरिभरिपतिकेहि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नमातहेतसुतजैसें वारवारहिहिनातहेरिउतजोवोलतेकोउहारे
अङ्गलगाइलिपेवारेतें करुणामयसुतप्यारे लोचनसजलस
दारोवतसेखानपानविसराये चितवतचौंकिनामसुनिसोच
नरामसुरतिउरआये तुलसीप्रभुकेविरहवधिकहठिराजहंस
सेजोरे ऐसेउदुखितदेखिहोंजीवतिरामलखणकेघोरे ९७ राग
सोरठ राघौ एकवारफिरिआवो एवरवाजिविलोकिआपनेहुवन
हुरोवनहिसिधावो जेपयप्यापपोषिकरपङ्कजवारवारचुचु
कारे कोजीवहिमेरेरामलाडिलेतेअववनिपटविसारे भरतसोयु
णीसुसारकरतहै अतिप्रियजानितिहारे तदपिदिनहुदिनहोततभ
वरेमनहुकमलहिमगमारे सुनहुपथिकजोराममिलाहिकनकहि
योमातसंदेसो तुलसीमोहिऔरसवहिनतेइनकोवडोअन्देशो
१९८ रागकेदारा काहूसोंकाहूसमाचारऐसेपाये चित्रकूटतेरामल
खणसियसुनियतअनतसिधाये शैलसरितानिर्झरवनमुनिथ
लदेखदेखिसवआए कहतसुनतसुमिरतसुखदायकमानसखु
गमसुहाए वडेअवलम्ववामविधिघटितविषमविषादवढाये
शिरसैंसुमनसुकुमारमनोहरवालकविंध्यचढाये अवधसकल
नरनारिविकलअतिअकनिवचनअनभाये तुलसीरामवियो
गशोगवशसमुझतनहिसमुझाये १९९ सुनीमैंसखीमङ्गलचा
हसुहाई शुभपत्रिकानिखादराजकीआजभरतकहआई कुशल
सोकुशलक्षेमअतिनेहिपललैगुरुपहपहुचाई गुरुकृपालसंभ्रमपु
रघर सारदसवहिंसुनाई वधिविराधसुरसाधुसुखीकरिऋषिसि
खआशिषपाई कुम्भजशिष्यसमेतसङ्गसियमुदितचलेदोभाई
रेवाविंध्यवीचसुपासथलवसेहैंपर्णगृहछाई पंथकथारघुनाथ
पथिककी तुलसिदाससुनिगाई २०० इतिश्रीरामगीतावल्यांअयो
ध्याकाण्डसमाप्तम् रागमलार देखरामपथिकनाचतमुदितमोर

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मानतमनुशनतडितललितघनधनुसुरधनगुरजनिटंकोर कम्मैकल पवरवरवरहिफिरावतगावतकलकोकिलकिशोर जहंजहंप्रभुविचर तरेतहंतहंसुखदएडकवनकौतुकनथोरे सघनछाहतमरुचिररज जनिभ्रमवदनचंद्रचितवतचकोर तुलसीमुनिखगमृगनिसराह तभयेहैंसुकृतसवइनकीश्रोर २०१रागकल्याण सुभगशरासन सायकजोरे खेलतराम फिरतमृगयावनवसतिसोमृदुमूरतिमन मोरे पीतवसनकटिचारुचारिशरचलतकोटिनटसोतृणतोरे स्य मलतनुश्रमकणराजतज्यौंनव घनसुधासरोवरखोरे ललितकं धवरभुजविशालउरलेहिहिकंठरेखैंचितचोरे अवलोकतमुष देतपरमसुखलेतशरदशशिकीछविछोरे जटामुकुटसरसीरुह नयननिगीहैंतकतसुभौहसकोरे शोभाअमितसमातनकानन उमगिचलीवहुदिशिमिनिफोरे चितवतचकितकुरङ्गकुरङ्गनिस वभयेमगनमदनकेभोरे तुलसीदासप्रभुवाणनचावतसहजसुभा यप्रेमवशथोरे २०२रागसोरठ भेटेहैरामलषनअरुसीता पञ्च वटीवरपर्णकुटीतरकहैंकछुकथापुनीता कपटकुरङ्गकनकम णिमयलखिपियसोंकहतिहंसिवाला पाइपालिवेयोगमञ्जुमृग मारेहुमञ्जुलछाला प्रियावचनसुनिविहंसिप्रेमवशगंवहिंचा पशरलीहैं चल्योसोभाजिफिरिफिरिहेरतमुनिमखरखवारेची हे सोहतिमधुरमनोहरमूरतिहेमहरिणकेपाछे धावनिनवनि विलोकनिविथकतिवसेतुलसीउरआछे २०३ रागकल्याण क रशरधनुषकटिरुचिरनिखङ्ग प्रियाप्रीतिप्रेरितवनवीथिनवि चरतकपटकनकमृगसङ्ग भुजविशालकमनीयकंधउरश्रमसी करसोहैंसावरअङ्ग मानोमुक्तामणिमरकतगिरिपरलसतललि तरविकिरणप्रसङ्ग नलिननयनशिरजटामुकुटविचसुमनमालम नुशिवशिरगङ्ग तुलसिदासअसमूरतिकीवलिछविविलोकिलजेअमित

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अनङ्ग २०४ रागकेदारा राघोभावतिमोहिविपिनकीवीथिन्हध्व
नि अरुणाकञ्जवरणचरणञ्सोकहरणअंकुशकुलिशादेकतुअं
त पवनि सुंदरश्यामलअङ्गवसनपीतसुरङ्ग कटिनिखङ्ग परिक
रनिखनि कनङ्क कुरङ्ग सङ्ग साजे करवर चापराजिवनमनदुल
उनचितवनि सोहतशिरमुकुटजटापटलनिकर सुमनलतास
हितरचीवनवनि लैसेद्धश्रमसीकररुचिरराजनसुखलैसिथैल
लितभृकुटिनकीनवति देखतखगनिकरमृगखनिनअनथकित
बिसारिजहं तहंकी भवति हरिदरशनफलपायोहैज्ञानविमलजा
चतभक्तिमुनिचाहतजवनि जिनकेमनमगनभयेहैंरसअगुण
निकेलेखेअगुणमुक्तिकवनिश्चिचरणसुखकरणिभवसरितात
रणिगावततुलसीदासकीरतिपवनि २०५रागसोरठरघुवरदूरिज
इमृगमारयो लखणपुकारिरामहरुवेंकाहेमरतहु वैपरसंभा
र्यो सुनहु तातकोउतुमहिपुकारतप्राणनाथकीनाईकह्यो
लखणहत्योहरिणकोपिसियहठिपठयेवरआई बन्धुविलोकि
कहततुलसीप्रभुभाईभलीनकीन्ही मेरेजानजानकीकाहूखल
छलकरिहरिलीन्ही२०६ आरतवचनिकहतिवैदेही बिलपति
भूरिविसूरिदूरिगएमृगसंगपरमसनेही कहेकटुवचनरेखनाघी
मैनालसमासोकीजे देखिवधिकवशराजमरालिनिलखणलाल
छिनिलीजेवनदेवनिसियकहनकहतियोंछलकरिनीचहरीहैं
गोमरकरसुरधेनुनाथज्योंत्योंपरहाथपरीहों तुलसिदासरघुनाथ
नामसुनिअकनिगृद्धधुकिधायो पुत्रिपुत्रिजिनिडरहिनजैहैनीच
मीचहौंआयो २०७ फिरतनवारहिवारप्रचारयो चपरिचोंचपुलह
नहनिरथपरढ धरडकरिडारयो विरथविकलकियोछीनिलीनी
लिसियघनधायनिअकुल्यो तबअसिकाढिपरपांवरलेप्रभुप्रि
यापराज्यो राम काजखगराज आज लरयोबिपतनजानकिजागी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तुलसिदाससुरसिद्धसराहतधन्यविहगवडभागी २०८ रागगौरी
हेमकोहरिणहनिफिरेरघुकुलमणिलखणललितकारनिये
मृगछाल॥ आश्रमआवतचलेसगुणनभयेभलफरकोनामवाहु
लोचनविशाल सरितजलमलिनसरनिसूखिनलिनगुञ्जनक
लकूजेनमराल कोलिनिकोलकिरातजहंतहंविलषातवननविले
किजातखगमृगमाल तरुजेजानकीलायेजायेहरिकपिहेरेनहं
करिरूरेफलनरसाल जेसुकशारिकापालेमातज्योंल लाकेला
लैनेकेनपढतनपढावैमुनिबाल समुझिसहमेसुठिप्रयातोनः प
ईउठि तुलसीविवरणपरणतृणशाल॥ औरेसोसबसमाजुकुस
लनदेखौं आजुगहबरिहियकहैकोशलपाल २०९ आश्रमनिर
खिभूलेद्रुमनफलेफूले॥ अलिखगमृगमानोकबहुंनहेमुनिन
मुनिबधूटीउजरीपरीणकुटीपञ्चवटीपहिचानिठाढेहीरहे॥ नैन
सलिललियेप्रेमप्रमुदितहियेधियानपुलकिप्रियवचनकहे ऐसेव
चालनहेरीप्राणवल्लभानटेरीविरहविथाकिनखिलखगणगहेरहे
रघुपतिगतिविबुधविकल॥ अतितुलसीगहनिचितरहनदैहै॥ मन
जदियोभरोसोतोलोंहैसोचखरोसोसियसमाचारप्रभुजोलोंनलहे
२१० रागसोरठ जबहिसियसुधिसबसुरनिसुनाई भयेसुनिसजग
विरहसरिपैरनथकेरागयाहसीपाई कसिनूपणीरतीरघुनुधरधुरधी
रवीरदोउभाई पञ्चवटीमोदहिप्रणामकरिकुटीदाहिनीलाई चले
बूझतवनबेलिविटपखगमृगअलिअवलिसुहाई प्रभुकीदशासो
समोकहिवेकोकविउरआहनआई रटनिअकनिपहिचानिगहनि
फिरेकरुणामयरघुराई तुलसीरामहिप्रियाविसरिगईसुमिरि
सनेहसगाई २११ मेरेएकोहाथनलगीगयोवपुवीतिवादिकान
नज्योंकल्पलतादववागी दशरथसोनप्रेमप्रतिपाल्योहुतोस
कलजगसाखी वैरवशहरनिशाचरपतिसोहठिनजाम॰

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कीरखी भरतनमैरघुवीरविलोकेतापसभेषवनाये चाहतचलन
प्राणपांवरविनुसियसुधिप्रभुहिसुनाये वार वार कर मीजिशीस
धुनिगद्धराजपछिताई तुलसीप्रभुकृपालतेहिऔसर आइ गये
द्वौभाई ॥ २१२ ॥ राचोगद्धगोद करिलीन्हो नयनसरोजसनेह स॰



लिल भुविमनहुं भई जलदी न्हो सुनहुं लषणखगपतिहि मि
लेवनमैं पितुमरणनजान्यो सहिनशको सो कठिन विधातापे
स्योपसस्म जुभान्यो वहुविधिराम कह्यो तन राखनपरमधीरन
हिडोल्यो रोकि प्रेम अवलोकिवदन विधुवचनमनोहरवोल्यो
तुलसीप्रभुझूठेजीवन लगिसमयनधोखलेहों जाकोनाममर
नमुनिदुर्लभतुमहि कहांपुनिपैहों २१३ नीकेकै जानत रामहि
योहों प्रणतपालसेवक कृपाल चितपितु पटतरहि दियोहों ॥
तजगयोनिगत गद्धजन मभरिखाई कुजंतु जियोहों महाराज

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सुकृतीसमाजसकल परखानकियोहों श्रवण वचन मुखनामरूपच
सुरामउछङ्ग-लियोहों ॥ तुलसीसोसमानवडभागीको कहिसं॰
के वियोहों २१४ मेरे जानतात कछु दिन जीजे देखिय आपुसु॰
अनसेवासुखमोहिपितकोसुखदीजे दिव्य देह इच्छाजीवनज
गविधिमनाइ माङ्गि लीजे हरिहरसुयशसुनाइ दरशदे लोगकृ
तारथ कीजे देखिवदनसुनिवचन अमियतनरामनयनजलभी
जे वोल्यो विहंग विहंसिरघुवरवलिक हौसुभायतीजे मेरे
मरिवेसमनचारिफलहोंहिंतोकोनकहीजे तुलसीप्रभुदियोउ
तरु मोवही परिमानो प्रेमसहीजे २१५ मेरोसुनियेतात सन्दे॰
शो सीयहरणजनिकहहुपितासोंह्वैहै अधिक अन्देशो रावरे
पुण्य प्रताप अनलमह अल्प दिन निरिपुदहिहै कुलसमेतसु
रसभादशाननसमाचारसवकहिहै सुनिप्रभुवचनआनिउरसू
रति चरणकमलशिरनाई चल्यो नभसुनतरामकलकीरति अप
निजभागवडाई पितुज्योंगद्धक्रियाकरिरघुपति अपनेधामपठा
यो ऐसे प्रभुविचारि तुलसीशठतू चाहतसुखपायो २१६ रागसूहा
विलावल सेवरीसोइउठीफरकतवामविलोचन वाहु सगुनसु
हावनेसूचतसुनिमनअगमउछाहु छन्द मुनिअगमउर आनन्द
लोचनसजलतनुपुलकावली तृणपर्णशालवनाइजलभरिक
लशफलचाहतचली मञ्जुलमनोरथकरतिसुमिरतिविप्रवरवा॰
णीभली ज्यौकल्पवेलिसकेलिसुकृतसुफलफूलीसुखकली १
प्राणप्रियापहुने ऐहैं रामलषणमोरे आजु जानतजनजियकीमृ
दुचितरामगरीवनेवाजु छन्द मृदुचितगरीवनेवाजु आजुविराजि
हैं गृहआइके ब्रह्मादिशंकरगौरि पूजितपूजिहों अवजाइ कैल
हिनाथहोंरघुनाथवानोपतितपावनपाइ कै दुहुओर लाहुअ
घाइहुलसीतीसरेहु गुणगाइके २ दोनारुचिररचे पूरण कं॰

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

र फल फूल अनुपम अमिय हू तें अम्बक अवलोकत अनुकूल
छन्द अनु कूल अम्बक अम्ब ज्यौं निज डिम्भहित सब आनि
कै छण भवन छण बाहिर विलोकति पुन्य भूपर पाणि के द्वौ भाइ आ
ये सवरिका के प्रेम प्रण पहिचानि कै श्रवणहि सुनत चली आव
त देखि लखण रघुराउ शिथिल सनेह कहै है सपनो विधि कै धौ
रत भाउ छन्द सत भाउ कै सपनौं निहारि कुमार कोशलराय के
गहे चरण जे अघहरण निज जन वचन मानस काय के लघुभाग भा
जन उदधिन मग्यौ लाभ सुख चित चाय के सो जननि ज्यौं आदरी
सानुज राम सूवे भाय के ४ प्रेम पट पावडे देत सु अर्घ विलोचनका
रि आ लै जो दिये आसन पङ्कज पाय पखारि छन्द पद पङ्कजा
त पखारि पूजे पन्थ श्रम विरहित भये फल फूल अंकुर मूल धरे
सुधारि भरि दोना नये प्रभु खात पुलकित गात स्वाद सराहि सादर ज
नुज ये फल चारि हू फल चारि दहि पर चारि फल शबरी दये ५ सुमन
वर्षि सुर मुनि मुदित सराहि सिहात कहि रुचि कहि सुधा सानुज मो
गि मागि प्रभु खात छन्द प्रभु खात मांगत देत शबरी राम भोगी जा
के बालक सुमित्रा कौशिल्ल के पाहुने फल साग के पुलकत प्रशंस
मिद्ध शिव शनकादि भाजन भाग के सुनि समुझि तुलसी जान राम
हि वश अमल अनुराग के ६ रघुवर अंचइ उठे शबरी करि प्रणाम
कर जोरि हौं बलि बलि जो गई मञ्जु मनोरथ मोरि छन्द पुरई मनोरथ
स्वारथहु परमारथहुं पूरण करी अघ औगुणन कि कोठरी करि कृपा
मुद मङ्गल भारी तापस किरातन कोल मृदु मूरति मनोहर चित धा
री शिर नाइ आयसु पाइ गवनी परम निधि पाले परी ७ सिय सुधि सव
जु कहीन खग शिष निरखि निरखि हौं भाई दै दै प्रदक्षिणा करति प्रण
मन प्रेम अघाई छन्द अति प्रेम मानस राखि रामहि रामधाम
हि सागई तोहि भाँत ज्यौं रघुनाथ अपने हाथ जल अंजुलि दइ

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तुलसीभनतसेवरीप्रणतिरघुवरप्रकृतिकरुणामईगावनसुनतस
सुरुतभगतिहियहोईप्रभुपदनितनई२१७इतिश्रीरामगीतावल्यां
आरण्यकाण्डकांडसमाप्तम्॥रागकेदारा॥भूषणवसनविलो·
कतसियके प्रेमविवशमनकंपपुलकतननीरजनयननीरभरे
पियके सकुचतकहतसमुझिउरउमगतिशील सनेहसगुणगण
तियके स्वामिदशा लखिलखणसखाकपिपथिलेहैमांटआंच·
मानोधियकेशोचतहानिमनगुणिगुणिगयेनिघटफलसकल·
सुकियके वरणियामवन्तनेहिअवसरवचनविलोकवीररसवि
यके धीरवीरसुनिसमुझिपरस्परवलउपायउडकतनिजाहियके
तुलसिदाससहसमउकहेकविलागतनिपटनिठुरजड़जिय
के२१८रागकेदारा प्रभुकपिनायकवोलिकह्यौहै वरषागईश
रदऋतुआईअवलौनहिसियसोधुलह्यौहै जाकारणतजिलो
कलाजतनुराखिवियोगसह्यौहै ताकोतौकपिराजुआजुलगि
कहनकाजुनिवह्यौहै सुनिसुग्रीवसभीतनमितमुखउत्तरदेन
चह्यौहैआइगयेहरिजूथदेखिउरपूरिप्रमोदरह्यौहैपठयेवदि
आधेदशहुदिशिचलेवलभवनिकह्यौहै तुलसीसियलगिभव
दधिनिधिमानोफिरिहरिचहतमह्यौहै२१ इतिश्रीरामगीतावल्यां·
किष्किन्दकांडसमाप्तम्॥रागकेदारा॥रजायसुरामकोजवपायोगा
लमेलिमुद्रिकामुदितमनपवनतनयशिरनायोभालुनाथनल
नीलसाथचलेवलीवालिकोजायोफरकिसुअङ्गभयेसगुणकह
तमानोमगमुदमङ्गलछायोदेखिविवरसुधिपाइगृहसोंभवनि
अपनुवलुमायोसुमिरिरामतकितरकितोपनिधिलङ्कलूकसो
आयोखोजतघरघरजनुदरिद्रमनुफिरतलागिधनुपायोतुलसी
सियविलोकिपुलकौतनुभूरिभागभयोभायो२२० देखीजानकीज
वपाइपरमधीरसगीरसुनकेप्रेमउरनसमाइरतरणशरीरसुभायशेषदे

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तलगीउडिउडिधूलि मनहुंमनसिजमोहनीमरिगयोभोरेभू॰
लिरटनिनिशवासरनिरंतरराम राजिवनयन जानिकटनवि
रहिनीअरिअकनितानेवचननायकेगुणगायकहि कपिदईमुद्रि
काडारिकथासुनिउठिलईकरवर रुचिरनामनिहारिहृदय
हर्षविषादअतिपतिमुद्रिकापहिचानि दासतुलसीदशासोकेहि
भांतिकहैवखानि२२१रागसोरठ बोलिबलिमुद्रीसानुजकुश
लकोशलपाल अमियवचनसुनाइमेटहिविरहज्वालाजालु
कहतहितअपमानमैयोहोलहियसोइसालु रोषक्षमिसुधिकरत
कवहुंललितलषणलालु परस्परपतिदेवरहिकाहोतिचरचाच
लु देविकवहुंकेहिहेतुवोलेविपुलवानभालु शीलनिधिसमर
थसुसाहिवदीनवन्धुदयालु दासतुलसीप्रभुहिकाहुनकह्यौ
मेरोहालु २२२सदलसलषणहैंकुशलकृपालुकोशलराउशी
लसदनसनेहसागरसहजसरलसुभाउ नींदभूषनदेवरहिप
रिहरेकोपछिनाउ धीरधुररघुवीरकोंनहिसपनेहुंचितचाउसे
धविनुअनुरोधऋतुकोवोधविहितउपाउ करतहैंसोइसमय॰
साधनफलतिवनतवनाउ पठैकपिदिशिदशहुंजेप्रभुकाजकु
ठिलनकाउ वोलिलिपहनुमानकियसनमानजानिसमाउद॰
ईहांसंकेतकहिकुशलातसियहिसुनाउ देखिदुर्गविशेषजा
नकिजानरिपुगतिआउ कियोसीयप्रवोधमुदरीदियोकपिहि
लखाउ पाइअवसरनाइशिरतुलसीशगुणगणगाउ २२३सुष
नसमीरकोधीरधुरीसावीरवडोइ देखिगतिसियमुद्रिकाकी॰
वालज्योंदियोरोइ अकनिकटुवाणीकुटिलकीक्रोधविंध्यव
ढोइसकुचिरामभयोईशआयसुकलशमवजियजोइवुद्धिव
लसाहसपराक्रमअछतराखोगोइ सकलसाजसमाजसाधकस
मयकहसवकोइउतरिरुतेनमनतपदसकुचातसोचतसोईचुके

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अवसरमन्दहुसुजनहि सुजनसनमुखहोइ कहेवचनविनीतश्रीनिप्र
तीतिनीतिनिचोइ सीयसुनिहनुमानज्यान्यों भलीभांति भलोइदे
विविनकरतूतिकहिवोजानिहै लघुलोइ कहेगोमुखकीसमर
सरिकालिकारिखधोइ करतकछुनहिवचनलहरिहियहरष
शोककसमोइ कहतमनतुलसीसिलङ्कृ करौसघनसमोइ २२४
रागकेदारा होरघुवंशमणिकोदूतमानमातुप्रतीतिजानकि
जानुमारुतपूत मैसुनीवातें अशैलीकहिजेनिश्चर नीच क्यों
नमारेगालवैठेकालडाढनिवीच निदरिअरिरघुवीर खललै
जाउंजौहठि आजु डरौं आयसुभंगतें अरुविगरिहैसुरकाजवां
धिवारिधसाधिरिपुदिन चारिमेंद्वौवीर मिलहिंगेकपिभालुद
लसंगजननिउरधरुधीर चित्रकूटकथाकुशलकहिशीसना
योकीश सुहृदसेवकनाथकोसखिदई अवलअशीश भयेशी
तलश्रवणतनमनसनेवचनपियूष दासतुलसीरहीनयननि
दरशहीकीभूष २२५ तातत्तोहिसोंकहतहोत्तिहियोगलानि
मनकोप्रथमप्रणसमुझिअछुनतनलखिनइगतिभइमातमल
नि प्रियकोवचनपरिहरोजियकेभरोसे सङ्गचलीचनवडोलाभ
जानिप्रियतमविरहतोसनेहसरवससुत औसरकोचूकिवोसरि
षनहानि आरजसुअनकेतोदयाद्युअनहुपरमोहिशोचमोत्तेस
वविधिनसानिअपनीभलाईभलोकियोनाथसवहीकोमेरेहीअ
दिनवसविसरीवानि नेमतोपपीहाहीकेप्रेमप्यारीमीनहीकेतुल
सीकहीहै नीकेहृदयआनिइतनाकहीसोकहीसियज्योंहीत्योंही
रहीप्रीतिपरसहीविधिसोनवसानि२२६ मातकाहेकों कहति
अतिवचनदीन तवकीतुहींजानतिअवकीहोंही कहन सवके
जियकीजाननप्रभुप्रवीन औसेतोशोचहिंन्यायनिठुरनायकरत
पलमखगकुरङ्गकमलमीन करुणानिधानकोनोज्योंज्योंतनुसी

ण भयोत्यों त्यों मन भयो तेरे प्रेम पीन सिय को सनेह रघुवर की दशा सु
मिरि पवन पूत देख्यो प्रीति लीन तुलसी जन को जननि हिं प्रबोध
कियो समुझि तात जग विधि आधीन २२७ राग जयतिश्री कहो क
पिकवर रघुनाथ कृपा करि हरि हैं निज वियोग संभ्रम दुख राजिव
नयन मयन अनेक छवि रवि कुल कुमुद सुखद मयंक मुख विरह
अव लसहाय समीर निज तन जरिवे कहर हीन कछू शोक अति
वलजल नर षत द्वौ लोचन दिन अरु रयनि रहत एकहि तकसु
दृढ ज्ञान अवलम्बि सुनहु सुत राखति पण विचारि दहन मतस
गुण रूप लीला विलास सुमिरण करत रहत अन्तगत सुनहु नुमन्त
अनन्त कंत करुणा सुभाव सुशील कोमल अति तुलसिदास रघुहि
आस जानि जियव रुदुख सही प्रगट न कहि सकति २२८ राग केदार
कवहु कपि राघो आवहिंगे मेरे नयन चकोर प्रीति वश राकाशशि
मुख देखरावहिंगे मधुप मराल मोर चातक है लोचन वहु प्रकार धाव
हिंगे अंग अंग छवि भिन्न भिन्न सुख निरखि निरखि तहं तहं छावहिंगे
विरह अग्नि जरि रही लता ज्यों कृपा दृष्टि जल पलुहावहिंगे निज वि
योग दुख जानि दयानिधि मधुर वचन कहि समुझावहिंगे लोकपा
लु सुर नाग मनुज सव परे वन्दि कव मुकुतावहिंगे रावण वध रघुना
थ विमल यश नारदादि मुनिजन गावहिंगे यह अभिलाष रइनि
दिन मेरो राज विभीषण कव पावहिंगे तुलसिदास प्रभु मोह जनित
भ्रम भेद वुद्धि कव विसरावहिंगे २२९ सत्य वचन सुन मातु जान
की जन के दुख रघुनाथ दुखित अति सहज प्रकृति करुणानिधि
न की तव वियोग संभव दारुण दुख विसरि गई महिमा सुवाण की
नत कहु कहं रघुपति सायक रवि तम अनीक कह जातु धान की वर
हम पशु शाखा मृग चल वात कहेंगे विद्यमान वरकहं हम शिरल
प जपुञ्ज ज्ञान घन महि सिखर नित आपने कहत वट्टग एव रे

देशसुनिहरिकोवहुत भईअवलम्ब प्राणकीतुलसिदासगुणसुमिर
रामके प्रेम मगन नहिं सुधिअपानकी २३०॥ राग केदारा॥ रावण
जो पै राम रणरोषे को सहिसकै सुरासुर समरथ विशिष कालदशा
निते चोपेत पवल भुज वलके सनेह वलाशव विरश्चिनीकीविधि
नषि सोफल राज समाज सुअन जन आपुन नास अपने पोषेतुला
पिनाकुसाहु नृपत्रिभुवनभटवटोरसवकेवलजोषेपरसुरामसेशूरि
शिरोमणि पल मे भये षेत के ओषे कालिकि वात वालिकी सुधिकरिस
मुरुहि ताहित खोलि मरोषे कह्यौ कु मंत्रिनकोन मानियेवडी हानिजि
यजानि विदोषे जासु प्रसाद जन्मि जगपुरुष निसागर सृजेखने अरु
पोषे तुलसिदाससोस्वामिन सूझ्यौ नयन वीसमंन्दिरकेसेमोषे२३१
रागमारू॥ जोहौं प्रभु आयसुलै चलतौ तौ येहिरिसि जोहिसहित
दशानन जातुधानदल दलतौ रावण सोरसराज सुभटरससहितल
ङ्क खलखलतौ करिपुटपाक नाथ नायकहित घनेघर घलतौवडे
समाज लाजभाजन भयो वडो काजविनु छलतौ लङ्कनाथरघुनाथ
वयर नरु आजु फैलि फुलिफलतौ कालकर्म्मदिकुपालसकलज
गजालजासु करतलतौ नारिपुंसोंपर भूमिरारिरण जीवनमरणसु
यलतौ देखौं मैं दशकरठ सभासव मोते कोउनसवलतौ तुलसीअ
रिउर आनि एक अवरणी गलामिनलगतौ २३२ तौ लौं मात आपुनी
केरहिवो जौं लौं हौं ल्यावौं रघुवीरहि दिन है और दुसह दुखसहिवो
सोषि खेनकै वांधि सेतु करि उतरिवो उदधिन वोहिन चहिवो
प्रवलनुजदलदलित पलआधमे जीवत दुरित दशानन गहिवो
वोरे वन्द विधवावनिवनिको देखिवो वारिविलोचनचहिवोसानु
जसैनसमेत स्वामिपदनिरषिपरमसुदमङ्गलला हिवा लकदाह
उर आनिमानेवो सांचराम सेवक को कहिवो तुलसीप्रभुसुरसुयश
गाइहैं मिटिहैसवकोशोचदौ दहिवो २३३ कपिके चलत सियको मनगहवरि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ऽआयो पुलकशिथिलभयोशरीरनीरनयनन्ह छायो कहनच
हह्यो संदेशनहि कह्यो पियकेजिपकीजानिहृदयसुदुसहदुस
रायोदेखिदशाव्याकुलसुग्रीषमकेपथिकज्यौं धरणितरणितपा
यो मीचतेनीच लगीऽअमरताछलकोनबलकोयलनिरषिपरू
पप्रेमपायो कैप्रबोधमानप्रीतिसोमनऽअशीसदीह्रीहैहैतिहारे
ईभायोकरुणाकोपलाजभयभर्यौकियोगौनमौनहीनचरण
कमलशीसनायो यहसनेहसरबसुसमौतुलसीरसनारूखीत
हितेपरलगायो२३४रागबसन्तरघुपतिदेखोऽआयोऽआयोहनु
मन लंकेशनगरखेल्योबसन्त श्रीरामराजहितसुदिनसोधिस
खीप्रबोधिलाय्योप्रयोधि सियपायपूजिऽआशिषपायफलऽअ
भियसरिसखायेधायकाननदरनिहोरेरचिबनाय हठितैलबसन
बारनधिबंधायदियठोलचलेसंगलोगलागि बरजोरदई चहुंओ
रऽआगि ऽअसतऽआहुतिकियेजातुधान लखिलपटऽभभरिभागे
बिमान नभलखकौतुकलंकाबिलाय परिनामपचहिपातकीप
यहनुमानहांक सुनिबरषिफूलसुरबारबारबरषहिंलंगूल भरिभु
अनसकलकल्याणधूमघुरजारिबारिनिधिबोरि लूम जानकी
तोषिपोषेप्रताप जयपवनसुअनदलिदुऽअनदाप नाचहिंकूदहिं
कपिकरिबिनोद पिवतमधुमधुबनमगनमोद योंकहतलषणाग
हेपायआयमणिसहितसुदितभेछौउठाय लगेसेनसजनभयो
हियहुलास जयजयभगावततुलसिदास २३५ रागजयतिश्री
सुनहुरामबिश्रामधामहरिजनकसुताऽअतिबिपतिसहतिहैसो
मित्रबन्धुकरुणानिधिमनमहुरटतिप्रगटहुनहिकहति निजप
रजलजाविलोकशोकरतनयननिवारिरहतनएकक्षण मनहुंनी
लनीरजशशिसंभवरविबियोगहौअवनसुधाकण वहुराक्षसी
सहितनरूकेतरतुम्हरेबिरहनिजजन्मबिगोवति मनहुंदुष्टइन्द्रियस ८

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कट महं वुद्धि विवेक उदय मग जो वतिसुनि कपिवचन विचारि हर्दै पहरि सपन पाइ नींसद सो एक मन तुलसिदास दुखसुख ती तहरि सोच करत मानहुं प्राकृत जन २३६ रागकदारा रघुकुल तिलक वियोग तिहारे मैं देखी जब जाइ जानकी मनहुं विरह मूरति मन मारे चित्रसे नयन अरु गढे से चरण कर मढे से श्रवण नहिं सुनति पुकारे रसना रटति नाम कर शिर रुचि रह नित निज पदकमल निहारे दरशन आस लालसा मन महं राखे ध्यान प्राणरखवारे तुलसिदास पूजति त्रिजटा नीके रवरे गुणगण सुमन संवारे १३७ अतिहिं अधिक दरशन की आरति रामवियोग असोगविटप तरसीय निमेष कल्पसम टारति वारवार वर वारिज लोचन भरभरि वरनवारि उरढारति मनहुं विरह के सद्य घाय हियें लखि तकि तकि धरिधी रतनारति तुलसिदास यद्यपि निशिवासर छिरण छिरण प्रभुमूरति हिनिहारति मिटति न दुसह तापतउ तनुकी यह विचारि अन्तरगति हारति २३८ तुम्हरे विरह भई गति जौन चितदै सुनहु राम करुणानिधि जानौं कछु पैसकोकहि हौन लोचन नीर कृपण के धन ज्यौ रहत निरन्तर लोचन कौन हाधुनि खगी लाज पिंजरे महं राखि हियें वडवधिक हठौन जेहि वाटिका वसति तहं खग मृगतजि तजि भजे पुरातन भौन स्वास समीर भेट भई भोरेहु तेहि मग पगु न धयौ तिहु पौन तुलसिदास प्रभु दशा सीय की मुखकरि कहत होति अति गौन दीजे दरश दूरि कीजे दुख हो तुम आरत आरत दौन २३९ कपिके सुनि कलकोमल वचन प्रेम पुलकि सब गात शिथिल भये भरे सलिल सरसीरुह नयन सियवियोग सागर नागर मन बूडन लग्यो सहित चित चयन लही नाव पवनज प्रसन्नता वरवस तहां गह्यो गुण मयन सकत न वूझि कुशल वूझेविनु गिरा विपुल व्याकुल उर अयन ज्यौं कुलीन सुचि सुमति वियोगिनि सन्मुख सहै विरह शर पयन धरि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धरिवीरकौशलपतिकिपेयत्वशकेउतरुनदयन तुलसिदासप्रभुस
खाअनुजसोंसयनहिकह्यौ चलहुसजिसयन २४०रागमारूज
वरघुवीरपयानोकीह्नो क्षुभितसिंधुडगमगतमहीधरसजिसारं
गकरलीह्नो सुनिकठोरटंकोरघोरअतिचौंकेविधित्रिपुरारिजटा
पटलतेचलीसुरसरीशकेनसंभुसंभारि भयेविकलदिकपालस
कलभयभरेभुअनदशचारि खरभरलङ्कसशङ्कदशाननगर्भस्र
वहिअरिनारिकटकटातभटभालुविकटमर्कटकरिकेहरिनाद कूदत
करिरघुनाथसपथउपराविवाद गिरितरुधरनखमुखकरालरदवलह
करतविषाद चलेदशादिशिरिसभरिधरुधरुकहिकोवराकेमनु
जाद पवनपंगुपावकपतंगशशिदुरिगएथकेविमान पावतसुर
निमिषसुरनायकनयनभारअकुलान गयेपूरिसरधूरिभूरिभय
अगथलजलधिसमान नभनिशानहनुमानहांकसुनिसमुझत
कोउनअपान दिग्गजकमठकोराहसाननधरतधरणिनवीरवा
रहिवारअमरषतकरधतकरकैपरीशरीर चलीचमूचहुओरसोर
कछुवनैनवरणतभीर किलकिलातकसमसतकोलाहलहोतनी
रनिधितीरजातुधानपतिजानिकालवशमिलेविभीषणआईसर
णागतपालककृपालुकियोतिलकलियोअपनाइ कौतुकहीवारिधि
वंधाइउतरेसुवेलतटजाइ तुलसिदासगढदेखिफिरेकपिप्रभुआ
गमनसुनाइ ३४१रागअसावरी आयेदूतदेखिसुनिशोचवशटमन
मेवाहिरवजावैगालभालुकपिकालवशमोसेवीरशोचहतजीत्यै
एरणमेरामकामलरिकालसरणवालिवालकहिघालिकोगणत
नटसजलअोंनघनकाजकौनकपिराजकायरकपीसमाजमेरेअनु
मानहनुमानुहरिगणमेसमय सयानीरानीमृदुवानीकहैपियपावत
नहोंहिजातुधानवेगुवनमे तुलसीजानकीदियेस्वामीसोसनेहकिंवे
कुशलननरुसवहैहैवारसरणमे ३४२अापनीअापनीभांतिसवको

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हूंकहींहै मन्दोदरीमहोदरमालिवानमहामतिराजनीतिपहुंचजा
हांलौंजाकीरहींहै महामदअन्धदशकन्धनकरतकानमींवुध
शनीवहुढङ्कगहनिगहींहै हंसिकहैं सचिवसयानेनमोसोकहतच
हतमेरुउडगनवडीवयारवहींहै भालुनरवानरअहारनिश्चरनि
कोसोउनृपवालकनिभागीधारिलहीहै देखोकालकौतुकपपील
कनिपखलागेभागमेरेलोगनिकेभईचितचहींहै तोसोनतिलोक
आजुसाहससमाजुसाजुमहाराजुआयसुभोजोईसोईसहींहै तुल
सीप्रणामकैविभीषणविनीतिकहै ख्यालवधेतालकपिकालल्लू
टहींहै २४३ दूसरोनदेखतसाहिवसमरामे वेदऊपुराणकविकोवि
दविरतरतजाकोयशसुनतगावतगुणगाने मायाजीवजगजालसु
भावकरमकालसवकोशासकसवमेंसवुझामे विधिसेकरणहार
हरिसेपालनहारहरसेहरणहारजपहिंजाकेनामे सोईनरवेषजा
निजनकीविपतिमानिमोनोनाथसोईजानेंभलोंपरिनामे सुभटसि
रोमणिकुठारपाणिसारिखेहुं लखीअंपा लखाई इहांकियेशुभसामे
वचनविभूषणविभीषणवचनसुनिलागेदुखदूषणसेदाहिनेउवा
मेतुलसीहमकिहियेहन्योलातभलेतानचल्यौसुरतरुताकितजि
घोरघांमे २४४ जायमायपायपरिकथासोसुनाईहै समाधानुकरत
विभीषणकोवारवारकहाभयोनाततातमारेवडेभाईहै साहिवपि
तुसमानजातुधानकोतिलकताकेअपमानतेरीवडीयैवडाईहै गर
तगलानिजानिसनमानिशिखदेतिरोषकियेदोषसहेसमुझेभलाई
है इहांतेविमुखभयेरामकीशरणगयेभलोनेकुलोकुराखेनिपटनि
काईहै मातपगशीसनाइतुलसीअशीसपाइचलेभलेसगुणकह
तमनभाईहै २४५ धाईकोसोकरोंउरोकठिनकुफिरेसुकृतसङ्कट
सोजालगतोनहिंगहौकृपानिधिकोमिलौपैमिलिकेकुवेरजाय
हपापअपयशनवरदारमेरोपीसमाचारपायपोचशोचतसुमरेरहि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ईमिलेमहेशादिरनेहलउपदेशरामकीशरणजाहिसुदिननहेरेजा·
कोनामकुंभजकलेशसिंधुसोषिवेकोमेरोकह्योमानितातबांधेजानि
वेरे तुलसीसुदिनचलेपायेहेंशगुणभलेरङ्कलूटिवेकोंमानोंमणिगण
टेरे २४६ रागकेदारा शङ्करशेषआशिषपाईकें चलेमनहिमनकह·
तविभीषणसीसमहेशहिनाइकें गयेशोचभयेशगुणसुमंङ्गलदश
दिशिदेतदेखाइकें सजलनयनसानन्दहृदयतनप्रेमपुलकअधि
काइकें अन्तहुभागलोभाईकीकियोअतभलोमनाइकेंभइकुवेरकी
लानविधानाराखीवातवनाइकें नहितोकोंकुवेरघरमिलिहरहित
कहतेचितलाइकें जोसुनिसगुणरामताकेनिजवामताविहाइकें अ
नाआसअनुकूलमूलधरमगमुदमूलजनाइकें कृपासिंधुसनमा·
निजानिजनदीनलियोअपनाइकें स्वारथपरमारथकरतलगतश्रम
पथगयोसिराईकें सपनोकैसोदुखसुखआशिशुरसीचनदेतनिराइ
कें गुणौ------ रीशसोंदसीतापतिहितहनुमानहिजाइकें मिलिहौं
मोहिकहाकीवेअबअभिमतअवधिअघाइकें मरतोकहांजाइकें
जौनैलटिलालचीललाइकें तुलसिदासभजिहौंरघुवीरहिअभय
निसानबजाइकें २४७ पद्यरागगरीवनिवाजकें देखिहोंजाइपाइलो
चनफलहितसुरसाधुसमाजकें गईवहोरओरनिर्वाहकसाजक
विगरेसाजकें शवरीसुखदगृद्धगतिदायकसमनशोककपिराजकें
नाहिनमोहिऔरकतहूंकछुजैसेंकागजहाजकें आयोशरणसुख
दपदपङ्कजचौथेरावणराजेकआरतिहरणशरणसमरथसवदि
नअपनेकीलाजकें तुलसीपाहिकहतननपालकमोसेनिपटनि
काजकें २४८ महाराजरामपाहिंजाउंगोसुखस्वारथपरिहरिकरि
होसोइज्योंसाहिवहिसोहांउगोशरणगतसुनिवेगिबोलिहैहौं
निपटहिसकुचाउंगो। रामगरीवनिवाजनिवाजिहैंजानिहैठा
कुरठांउगोंघारहैंनाथहाथमाथेएगहितेकेहिलाभअघाउगोस

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पनोसो अपनोकळू लखिलघुलोचन लोभाउंगो कहिहों वलिसे
टिहाएवरोविनमोलही विकाउंगो तुलसी पटऊतरे ओढि हौंउ
वरिजूठनिखाउंगो २४९ आइसचिवविभीषणके कही कृपासिं
धुदशकंधवन्दुलघुचरणशरणआयोसही विषमविषादवारिनि
धिवूडतथाहकपीशकथालही गयेदुखदोषदेखिपदपङ्कजअव
लसाधसकोरही शिथिलसनेहसराहतनखशिखनीकीनिकाई
निरखही तुलसी मुदितदूतभयेमनमें अमियलाहुमांगतमही
२५०विनतीसुनिप्रभुमुदितभये ऋक्षराजकपिराजनीलनलवो
लिवालिनन्दनलयेवूझियकहारजाइपाइनयधर्मीसाहिलउनर
येवलीवन्धुताकोविमोहवश्यवयरलीजवरवसवथे वांहपगारह्वर
तेरेसमयनकवहुफिरिगयेतुलसी अशरणस्वामि के विरद वि
राजतनितनये २५१हियविहसिकहतहनुमानसों सुमतिसाधु
सुचिसुहृदविभीषणवूझिपरत अनुमानसों होंवलिजाउं औरको
जानैकाहिकपिकृपानिधानसों कुलीनहोइस्वामीसन्मुखज्यों
तिमिरसंतिहैभानसों खोटोखरोसभीतपालिये सोसनेहसनमा
नसोंतुलसीप्रभुकीवोजोभलोसोइवूझिसराससनवाणसों २५२शगवे
दारसांचेहुविभीषणआइहै वूरूतिविहंसिकृपालुलखणसुनि
कहतसकुचिशिरनाइहै ऐहै कहानाथ आयो ह्यांकोकहिजात
वनाइहै एवणरिपुहिराखिरघुवरविनुको त्रिभुवनपतिपाइहैप्रभु
प्रसन्नसवसभासराहतिदूतवचनमनभाइहै तुलसीवोलियेवेगि
लषणसोभईमहाराजरजाइहै २५३ चलेलेनलसनहनुमानहैं
मिलेमुदितवूझिकुशलपरसपरसकुचतकरसनमानहैं भयोरजाय
सुपाइधारियेवोलतकृपानिधानहै दूरितेंदीनवन्धुदेखेजनदेत
अभयवरदानहैं शीलसहसहिमवानतेजशतकोटिभानुहुकेभानहैं
भक्तनिकोहितकोटिमातुपितुअरिहकोकोटिकृशानहैं जनगुणर

जगिरिगणसकुचत निजगुणगिरिलरपरवानहै वौहयगारवोल
कोऽअविचलुवेदकहतगुणगानहैं चरचा चलनि विभीषणकीसो
इसुनतसुचितदैकानहैं चारु चापतूणीरनामरसकरनि सुधारत
वाणहैं हरषनसुरवर्षतप्रसूनसुभसगुणकहत कल्याणहैं तु
लसीतेकनककत्यजेसुमिरतसमयसुभावनध्यानहै २४२रामैकर



त प्रणामनिहारिकै उठेउमगिआनंदप्रेमपरिपूरणविचारिकै
भये विदेह विभीषणउतइतप्रभुअपनपोविसारिकै भलीभां
तिभावते भरतज्यों भेट्योभुजापसारिकै सादरसवहि मिलाइसम
जहि निपटनिकरवैठारिकै बूझतकुशलक्षेमसप्रेमअपनाइभरोसे
भारिकै नाथकुशलकल्याणसुमङ्गलविधिसुखसकलसुधारिकै
देतलेनजेनामरावरोविनयकरतसुखचारिकै जोमूरतिसपनेन
विलोकतमुनिमहेशमनमारिकै तुलसीतेहिंहांलियोअङ्कभरिकहस.

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कछुनसवारिके २५५ करुणाकरकीकरुणाभई मिटीमीचुलहि
लङ्कशङ्कगईकाहूसोंनखुनिसखई दशमुखनज्यौंदूध मासोज्यौं
आपुकाढिसाढीलई भवभूषणसोइकियो विभीषणमुदमङ्गल
महिमामई विधिहरिहरमुनिसिद्धसराहतमुदितदेवदुंदुभिदई
वारहिंवारसुमनवरषतहियहरषनकहिजयजयजई कौशिकशि
लाजनकशंकटहरभृगुपतिकीटारीटई षगमृगसवरनिशाचरस
वकीपूजीविनुवाढीसई युगयुगकोटिकोटिकरतवमितकररीनक
कुवररीनई रामभजनमहिमाहुलसीहियतुलसीहूकीवनिगई॥
५६ मंजुलमूरतिमङ्गलमईभयोविलोकिविशोकविभीषणनेहदेहसुधि
सीनगईउठिदाहिनीओरतेंसन्मुखसुखदमागिवैठलई नखशिषनिर
षिनिरषिसुरदपावतभावतकछुकछुक्षभईवारकोटिशिरकाटिसाटिल
टिरावणशंकरपैलई सोईलंकालखिअतिथअनवसररामतृणासम
ज्योंदई प्रीतिप्रतिनिरीतिशोभासरियाहतजहंनहंथई वाहुवली
वानैतवोलकोवीरविश्वविजईनई कोदयालुदूसरोदुनीजेहिंजरानि
दीनहियकीहई तुलसीकाकोनामजपतजगजगतीजामतिविनुव
ई २५७ सवभांतिविभीषणकीवनी कियोअपभयकालहुंतेगईसंसृति
सासनिघनीसषालषणहनुमानशंभुगुरुधनीरामकोशलधनीहि
यहिओरओरकीहीविधिरामकृपाओरेठनीकलुषकलङ्ककले॰
शकोशभयोजोपदपाईरावणरणीसोईपदपाइविभीषणभोभव
भूषणदलनदूषणअनीबांहपगारउदारशिरोमणिप्रतपालकपावनप॰
णीसुमनवरषिरघुवरगुणवरणतहरषिदेवदुन्दुभिहनीरङ्कनि॰
वाजरङ्कराजकियेगयेगर्वगिरिगिरिगनीराम प्रणाममहामहिमा
करसकलसुमङ्गलमणिजनीहोइभलोऐसेहिअजहुंगयरामशरण
परिहरिमणीभुजाउठाइसासिशंकरकरिकसमरवाइतुलसीभनी२५
६ कौनविभीषणाकावनेगयोछाडिछलशरणरामकीजो। १

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

फलचारिचारसौजनैमङ्गलमूलप्रणामजासुजगमूलअमंगल
केखवैनेहिरघुनाथहाथमाथेदियोके।ताकीमहिमाभनैनामप्रता
पपतितपावनकियजेनअपानेअघनिअपनेकोउउतरतटोकोऊस
धोजपिभयेहंसवापसतनैहुतोललातकृषगातखातखरिमोदु
पाइकोदृकौ।सोतुलसीवानकभयोजाचतरामश्यामसुन्दरखै
२५८ अपतिभागविभीषणकेभलेएकप्रणामप्रसन्नरामभयेदुरित
दोषदारिददलेरावणकुम्भकरणवरमागतशिवविरञ्चिवाचा
छलेरामदरशपायोअविचलपदसुदिनसगुणानीकेचलेमि
लनिविरनोकिस्वामिसेवककीउकठतरुफूलेफलेतुलसीसुनि
सनमानवन्धुकोदशकन्धरहंसिहियजले २६० गरणरामशरणस
वकोभलोगनीगरीववडोछोटोवुधमूढहीनवलअतिवलोपङ्गु
अन्धनिरगैरणीनिसम्बलजोनलहैयाचेचलोसोनिवह्योनीकेज
नमिजगरामराजमारगचलोरामप्रतापदिवाकरकरखेंगरततु
हिनज्योंकलिमलोसुनहितनामलेतभवनिधितरिगयोअजामि
लसोंखलोप्रभुपदप्रेमप्रणामकामतरुसद्यविभीषणकोफलोतुल
सीसुमिरतनामसवनिकोमङ्गलमयनभजलथलो २६१ सुयशसुनि
श्रवणहीनाथआयोशरणउपलकेवटगृद्धसवरीससृतिशमनशो
कश्रमसींचसुग्रीवआरतिहरणरामराजीवलोचनविमोचनविप
तिश्यामनवनामरससदामवारिदवरणलसतजटाजूटशिरचारुमुनि
चीरकटिधीररघुवीरतूणीरसरधनुधरणजातुधानेशभ्राताविभीषण
नामवन्धुअपमानगुरुग्लानिचाहतगरणपतितपावनप्रणतपाल
करुणासिंधुराखिएशरणसौमित्रिसेवितचरणदीनताप्रीतिसंकुलि
तमृदुवचनसुनिपुलकतनप्रेमजलनयनलागेभरण बोलिलङ्के
शकहिअङ्कभरिभेटिप्रभुतिलकदियोदीनदुखदोषदारिदहरणम्
निवरजातिआसनिसवभांतिगनकियोकल्याणभाजनसुमङ्गल

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

द रगा दासतुलसीसदयहृदरगर पाँ शमनरुपाहि कहेकाहि कीहोन
तारणा २६२ दीनहितविरदपुराण निगुगोआरतबन्धु कृपालुमृदु
लचितजानिशरणहों आयोतवरिपुकोहों अनुज विभीषणवंशमनि
शाचरजायो सुनिगुणशीलसुभावनाथकोंमैंचरणनिचितलायो
जानत प्रभुदुखसुख दासनिकोतातेकहिनसुनायो करिकरुणाभ
रि नयनविलोकहुतबजानौअपनायो वचन विनीत सुनतरघु
नायकहँसिकरिनिकटबोलायो भेंट्योहरिभरिअङ्कभरतज्यौंल
ङ्कापतिमनभायो करपङ्कजशिरपरसिअभयकियोजनपरहेतुदे
खायो तुलसिदासरघुवीरभजनकरिकोनपरमपदपायो२६३राग
धनाश्री सत्यकहौंमेरोसहजसुभाउ सुनहुसखाकपिपतिलङ्का
पतितुमसोकोनदुराउ सबविधिहीनदीनअतिजडमतिजाकोक
तहुँनठाउँ आयेशरणभजोनतजोंतेहियहजानतऋषिराउ तिनके
होहिंनसबप्रकारचिंतनाहिंनऔरउपाउ तिनहिलागिधरिदेहक
रौंसबडरोंनसुयशनसाउ पुनिपुनिभुजाउठाइकहतहौंसकलसभ
पतिआउ नाहिंनकोउप्रियमोहिदाससमकपटप्रीतिबहिजान सु
निरघुपतिकेवचनविभीषणप्रेममगनमनचाउ तुलसिदासतजि
आसत्रासअैसेप्रभुकहँगाउ२६४ नाहिनभजिबेयोगवियोश्रीर
घुवीरसमानआनकोपूरणकृपाहियो कहहुकौनसुरशिलातारि
पुनिकेवटमीतकियोकौनेगृद्धअधमकोपितुज्योंनिजकरपिंड
दियोकौनदेवसबरीकेफलकरिभोजनसलिलपियो बालित्रासबा
रिधिबूडतकपिकेहिगहिबाहलियो भजनप्रभाउविभीषणभाष्यो
सुनिकपिकटकजियो तुलसिदासकोपतिकोशलपतिसबप्रकारब
रियो२६५रागजयतिश्री कबदेखोंगीनयनवहमधुरमूरति राजी
वदलनयनकोमलकृपाअयनमयननिबहुछविअङ्गनिदूरनि
शिरसिजटाकलापपाणिसायकचापउरसिरुचिरबनमाललूरनि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तुलसिदासरघुवीरकीसोभासुमिरिभईहैमगन नहितनु कीसूरति २
६ रागकेदारा कहू कबहु देखिहौं आलीहों आरजसुअन सानुजसु
भगतन जबतें बिछुरे बन तबते दवसी लागी तीनहु भुअन मूरति सु.
रति किये प्रगट प्रियतम हिये मन के करन चाहे चरण छुअन चित
वाढे मो वियोगदशा कहिबे योग पुलक गात लागे लोचन चुअनतु
लसी त्रिजटा जानि सीय अति अकुलानी मृदु बानी कह्यो ऐहैं दे
वनदुअन नमीचरनमहारी सुरकुञ्जसुखकारी रविकुलरवि अब
चाहत नअअन २८७ अब लौमैंतो सौंन कहेरी सुनु त्रिजटा प्रियप्राणना
थ विनु वासर निशदुरद्वु सहसहेरी विरहविषमविषवेलिवढी उर
गुरुसकलसभायदहेरी सोइ सीचिवे लागि मनसिजकेरहटनय
ननिनरहतनहेरी स शरीरसुखप्राणवारि चर जिवन आसतजि
चलनचहेरी तेप्रभुसुयशसुधासीतल करिराखत दपिनलअल
हेरी रिपुरिसिघोरनदीविवेकवलधीरसहितहुते जानवहेरी दैमु
द्रिकाटकितेहि औसरसुधिसमीरसुतपैरिगहेरी तुलसिदाससव
सोचपोचमगमन काननभरिपूरिरहेरी अवसखिसियसंदेहपरिह
रुहियआइगयेहौं वीरअहेरी २८८ रागविलावल सोदिनसोनेको.
कहुकबऐहै जादिनवन्ध्योसिंधुत्रिजटासोतूसम्भ्रममोहिआ
निसुनैहै विभ्र देवनसुरसाधुसतावनरावण कियोआपनोपैहै क
नकपुरीभयोभूपविभीषणविबुधसमाजविलोकनधैहै दिविदु
न्दभीप्रसंसिहै मुनिगण नभतलविमलविमाननिचैहै परषिहै
कुसुममानुकुलमणिपर तवमोहिपवनपूतलैजैहै अनुजसहित
रघु भेंहै कोगिनमदतनुछविकोटिमनोजहितैहै इननयननयेभांति
प्राणपतिनिरषि हृदयआनन्दसमैहै वहरौसरलसनाथसलखण
कुशलकुशलविधि अवधदेखिहै गुरुपुरलोगसासुदौ देवरमित्त
तनुसहउननतपतविनैहै मङ्गलकलशबधावनघरपैहैमांगनजो। १

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

जेहि भैहैं विजयराम राजाधिराज कौ तुलसिदास गानन यश गैहैं ६९
सियजियधीरजधरि रावव अब ऐहैं पवनपूत [illegible] जो रिसुधि
सहज कृपालु विलम्ब न लैहैं सेनसाजि कपि भालु काल समकौ तुक
हीपायो धिव धैहैं घेरोइ देखि बोल लंकगढ किकल जातुधानी पछितै
हैं निघर शलभकृशानु राम शरछुडि छुडि परतजरत जडजैहैं रावण
करि परिवार अगमनो पमसुरजान वहुत सकु चैहैं तिलक सारि
अपनाइ विभीषण अभय बांह दैअमर वसैहैं जय धुनि मुनिवर्षि
हैं सुमनसुरव्योम विमान निसाने बजैहैं वन्धु समेत प्राणवल्लभपद प
रसि सकल परितापनसैहैं राम वाम दिशि देखि तुमहिं सब नयनवचन
लोचन फल पैहैं तुम अपनि हित चितइ होनाय तनुवार वार प्रभु तुमहि
चितैहैं येह शोभासुख समय विलोकन काहु तो पलकै नहि लैहैं
कपिकुल लखन सुयश जय जानकि सहित कुशल निज नगर वसै
हैं प्रेम पुलकि आनन्द मगनमन तुलसिदास कल कीरति गैहैं ७०
इति श्रीरामगीतावल्यां सुन्दरकाण्ड समाप्तम् ॥ रागमारू मानुअ
जहुं शिवपरिहरि कोध पियपूरो आयो न काहि कहु करि रघुवीर
विरोध जेहि नाडिका सुवाहु मारि मखराखि जनायो आपु कौतुक
ही मारीच मीच मिस प्रग ट्यो विशिष प्रतापु सकल भूपवल गर्वस
हित तोरयो कठोर शिवचापु व्याहीजेहि जानकी जीति जग हरयो प
रसुधरदापु कपट काक सासति प्रसाद करि विनुश्रम वध्यो विरा
धु खरदूषण त्रिशिरकवन्ध हति कियेसुखी सुरसाधु एकहि वा
ण बालि मारयो जेहि जो वल उदधि अगाधु कहु धों कन्तु कुशल वी
ती केहि किये राम अपराधु लांघि न सके लोक विजई तुम जासु अनु
ज कृत रेषु उतरि सिन्धु जारयो प्रचारि पुर जाके दूत विशेषु कृपासि
न्धु खल वचन क्षमा सुसमय अजहुं न शुनि शेषु सोइ विरदै त वीर कोश
लपति नाथ समुझि जियदेषु मुनि पुलस्ति के पश मयडू मंडुकन

कलहू॰हठिहोहिऽऔरप्रकारउउवारनहीकहुंमैदेष्यौजगटोहिच
लुमिलिवेगिकुशलसादरसियसहितऽग्यकरिमोहितुलसि
दासप्रभुशरणशब्दसुनिऽअभयकरैंगेतो २७ रागकान्हरा नूदस्यकं



२ भलेकुलजायो गामहु शिवसेवाविरञ्चिवरभुजबलवि॰
पुलजगतयशपायो खरदूषण त्रिशिरकबन्धरिपुजेहिवालि
यम लोकपठायोताकोदूतपुनीतचरितहरिसुभसंदेशकहनहौं
आयोश्रीमदन्धपदअभिमानमोहवशजानतअनजानतहरल्यायो
तजिव्यलीकभजिकारुणीकप्रभुदैजानकिहिसमुझायोवोनेतव
हितहोंहिकुशलअचलराजचलिहैनचलायोनाहितरामप्रतापअ
नलमहु ह्वैपतंगपरिहैशठधायोयद्यपिअङ्गदनीतिपरमहितक
हौतथापिनकछुमनभायोतुलसिदाससुनिवचनक्रोधअतिपाव॰
कजरतमनहुघृतनायो २८ नै मेरोमरम कछु कनाहिं पा पो रे ॰॰॰

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कपि कुटिल ढीठ पसु पांवर मोहि दास ज्यौं डांटन ऽआयो भ्राता कुम्भ
करण रिपु घात कसुन सुर पतिहिं बंध करि ल्यायो निज भुज बल ऽअति
ऽअतुल कहौं क्यौं कन्दुक ज्यों कैलाश उठायो सुर नर ऽअसुर नाग खग कि
न्नर सकल करत मेरो मन भायो निश्चर रुचिर ऽअहार मनुज तनु जाको प
शखल मोहि सुनायो कहा भयो वानर सहाय मिलि करि उपाय जो सिंधु
बँधायो जो तरि है भुजवीश घोरनिधि ऽऐसो को त्रिभुवन में जायो सु
नि दशशीस वचन कपि कुञ्जर विहँसि ईश माय हि शिर नायो तुलसि
दास लङ्केश काल वश गणत न कोटि यतन समुझायो २०३ राग काह्नरा
सुन खल मैं तोहि बहुत बुझायो ऐते मान शठ भये मोह वश जानत हू
चाहत विष खायो जगत विदित ऽअति वीर बल जानत हौं किधौं ऽअब
बिसरायो बिनु प्रयास सोउ हत्यो एक शर शरणागत पर प्रेम देखायो ·
पावहुगे निज कर्म जनित फल भले ठौर हठि बयर बढायो वानर ऽभा
लु चपेटनि मारत तव ह्वै है पछितायो हौं ही दशन तोरिबे लायक क
हा करौं जो न ऽआयसु पायो ऽअब रघुवीर बाण विदलित उर सोवहि गो
रणभूमि सुहायो ऽअवि चलराज विभीषण को सब जेहि रघुनाथ चर
णचित लायो तुलसिदास एहि भांति वचन कहि गरजत चल्यौ बालि
नृप जायो २०४ राग केदारा राम लषण उर लाइ लए हैं भरे नीर राजी
व नयन सब ऽअङ्ग परितापन ये हैं कहत ससोक बिलोक बन्धु सुख
वचन प्रीति गुथये हैं सेवक सखा भक्ति भायप गुण चाहत ऽअब ऽअपये
हैं निज कीरति करतूति तात तुम सुकृती सकल जये हैं मैं तुम बिनु
तनु राखि लोक ऽअपने ऽअवलोक लये हैं मेरे प्रण की लाज इहां लौं ह·
ठि प्रिय प्राण दये हैं लागत सांग विभीषण ही पर सीपर ऽआपु भये
हैं सुनि प्रभु बचन भालु कपि गण सुर सोच सुखाय गये हैं तुलसी
ऽआइ पवन सुत विधि मनो फिरि निरमये नये हैं ॐ २०५ राग सोरठ
मोपै तो न कछू ह्वै ऽआई ऽओर निबाहि भली विधि भायप चल्यो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लषणसेभाई परपितुमातुसकलसुखपरिहरिजेहिवनविपतिवँटाई नाथ कहाँ कुर लोक गोकतनिम्यकोनप्राणपठाईआनतहौंपाउरकठैरौकुलिशकठिनतापाई सुमिरिसनेहसुमित्रासुतकोदरकिदरारनजाई तातमरणतियहरणगृद्धवधभुजदाहिनीगंवाई तुलसीमैसबभांतिआपनेकुलहिकालिमालाई २७६ मेरोसबपुरुषारथथाकोविपतिबटावनबन्धुवाहुविनुकरौंभरोसोकाकोसुनुसुग्रीवसांचेहूंमोपरफेरयौवदनविधाता ऐसेसमयसमरसंकटहौंतज्योंलषणसेभ्राता गिरिकाननजैहैंसाखामृगहौंपुनिअनुजसंघाती ह्वैहैकहाविभीषणकीगतिरहीसोचभरिछाती तुलसीसुनिप्रभुवचनभालुकपिसकलविकलहियहारे जामवंतहनुमन्तवोलितवऔसरजानिप्रचारे २७७ रणमारूजोहौंअबअनुसासनपावौंतौचन्द्रमहिनिचोरिचैलज्यौंआनिसुधाशिरनावौं केपातालदलौंव्यालावलिअमृतकुण्डमहिल्यावौंभेदिभुवनकरिभानुवाहिरोतुरतराहुदैतावौं विबुधवैद्यपर्वरआनौधरितौप्रभुअनुगकहावौंपरकौंमीचुनीचमूखज्यौंसबहिकोपापबहावौं तुम्हरेहिकृपाप्रतापनेहारेहिनेकुविलम्बनलावौंदीजेसोईआयसुतुलसीप्रभुजेहितुम्हरेमनभावौ २७८ सुनिहनुमन्तवचनरघुबीरसत्यसमीरसुअनसबलायककह्योरामधरिधीरचाहियवैद्यईशआयसुधरिशीशकीशवलअयनआन्योसदनसहितसोवतहीजौलौंपलकपरयनजियेंकुअरनिशिमिलेमूलिकाकीहीविनयसुख अनजह्योकपीशसुमिरिसीतापतिचल्योसजीवनलषनकालनेमिदलिवेगिविलोक्योद्रोणाचलजिपजानिरखीदिव्यौषधीजहांतहंजरीनपरिपहिचानि लियोउठाइकधरकन्दुकज्योंवेगनजाइवखानि ज्योंधायेगजराजउधारणसपदिसुदरशनपाणि आनिपहारजोहारप्रभुकियोवैद्यराजउपचा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

र करुणासिंधुबन्धुउठि भेट्योमिट्योसकलदुषभारमुदितभालुकपि
कटकलह्यौ जनुसमरपयोनिधिपार बहुरिठौरहींराखिमहीधरल्या
यौपवन कुमार सेन सहितसेवकहि सराहत पुनि पुनिरामसुजान
बरषिसुमनहियहरषप्रशंसनविबुधबजाइनिशान तुलसिदास
सुधिपाइनिशाचरभयोमनहुबिनुप्राण परीभोरहीरारिलङ्कगढद
ईहांकहनुमान २७९ रागकेदारा कौतुकहीकपिकंधरालयोहै
चल्यौनभनाइमाथरघुनाथहिसरिसनवेगिवियोहै देख्यौआन
जानिनिशिचरबिनुफेरसरहन्योहियोहै परयोकहिराम पवनराख्यो
गिरिपुरतेहिनेजपियोहै जाइभरतभरिअङ्कभेटिनिजजीवनदा
नदियोहै दुखलघुलखणमरमघायलसुनिसुखबडोकीशजि
योहै आयसुइलेस्वामिशङ्कठउतपरलनकछूकियोहै तुलसिदास
विहस्यौअकाशसोंकैसेकेजातसियोहै २८० भरतशत्रुसूदनबि॰
लोकिकपिचकितभयोहै राम लखणरणजीतिअवधआयेकै
धोंमोहिभ्रमकैधौंकाहूं कपटठयोहै प्रेमपुलकिपहिचानिजानि॰
कैपदपद्मनियोहै कह्यौनपरतजेहिभांतिदुहुभाइनसनेहसोंसो
उरलाइलयोहै समाचार कपिगहरुभोतेहिलापतयोहै कुधर
सहित चल्योविशेषवेगिपठयोसुनिहरिहियगर्वगूढपयोहै तीर
तेउतरि रामकह्यौ चहैगुणगणनिजयोहै धन्यभरतधन्यभरतभयो
मगनमौनरह्योमन अनुरागरयोहै यह जलनिधिखन्योमथ्योलं
घ्योबंध्यौ अंचयोहै तुलसिदासरघुबीरबन्धुमहिमाकोसिन्धुत
रिकोकपिपारगयोहै २८१ होतोनहिंजौजगतजनमभरतकोतो
कपिकहु । कृपाराधारमगचलिआचरतवरतकोधीरजधर्मधरणि
धरहुंतेगुरुधरुधरणिधरतकोसबसद्गुणसनमानिआनिउरअ
घअघौगुणनिदरतकोशिवहुनसुगमसनेहरामपदसुजननिसुल
भकरनकोसरजिनिजयश्सुरतरुतुलसीकहुंअभिमतफरनिफरनकोअ

सुनि रण घायल लखण परे हैं स्वामि काज संग्राम सुभट सों लोहे ल
लकारि लरे हैं सुअन शोक सन्तोष सुमित्रहि रघुपति भक्ति वरे हैं छि
ण छिण गात सुखात छिणहि छिण हुलसत होत हरे हैं कपि सों कह
ति सुभाय अम्ब के अम्बक अम्बु भरे हैं रघुनन्दन विनु बंधु कुऔस
र यद्यपि धनु दुसरे हैं तात जाहु कपि संग रिपुसूदन उठि कर जोरि
खरे हैं प्रमुदित पुलकि पैंत पूरे जनु विधि वश सुढर ढरे हैं अम्ब अ
नुज गति लखि पवनज भरतादि गलानि गरे हैं तुलसी सब समुझा
इ मात तेहि समय सचेत करे हैं २८३ राग केदारा विनय सुनाय वीर
परिपाय कहो काह कपीश शुचि सुमति सुहृद सुभाय स्वामि सङ्क
ट हेतु हों जड़ जननि जन्मो जाय समीपाइ कहाइ सेवक घट्यो
तोन सहाय कहत शिथिल सनेह भो जनु धीर घायल धाय भरत ग
ति लखि मात सब रहि ज्यों गुडी विनु वायु भेटहिं कहिं वो कह्यो यों क
ठिन मान समाय लाल लोने लखण सहित सुललित लागत नाय
देखिव स्वसु सनेह अम्ब सुभाउ लहाण कुठाय न पत तुलसी तर
शि त्रास कुपेहि न ये तिहु ताप २८४ हृदय घाउ मेरे पीर रघुवीरे
पाइ सचिवनि जागि कहत यों प्रेम पुलकि विसरे शरीरे मोहि कह्य
पूछत पुनि पुनि जैसे पाठ अपरय चरचा कीरे शोभा सुख क्षति लाहु
भूप कहं केवल कांति मोल हीरे तुलसी सुनि सौमित्रि वचन सब ध
रि न शकत धीरे धीरे उपमा राम लखण की प्रीति की क्यों दीजै हीरे
नीरे २८५ राग काहरा राजत राम काम शत सुंदर रिपु रण जीति अनु
ज संग शोभित फेरत चांप विशिष वनरुह कर श्याम शरीर रुचिर श्र
म सीकर शोणित कण विच वीच मनोहर जनु खद्योत निकर हर हित
गण भ्राजत मरकत शैल शिखर पर घायल वीर विराजत चहुं दि
शि हरषित सकल ऋक्ष अरु वनचर कुसुमित किंसुक तरु समूह
महं तरुण तमाल विशाल विटप वर राजिवनयन विलोकि कृपा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कारिये अभयमुनिनागविवुधवर तुलसिदासपद रूप अनूपम हृद-
यसरोजवसि दुसह विपति हर २९६ राग असावरी अवधि आज
किधौं औरो दिन द्वैहै चढिधवरहरविलोकिदखिणदिशिवूझधौं
पथिककहांते आयेवैहैं वहुरिविचारिहारिहियशोचत पुलकगात
लागे लोचन च्वैहै निजवासरनिवरषपुर वैग्यो विधिमेरे तहं करम
कठिनकत द्वैहै वनरघुवीरमातुगृह जीवति निलजप्राणसुनि-
सुख लैवैहै तुलसिदासमोसो कठोरचितकुलिशशालभंजीको है
है २९७ आली अवरामलषणकितह्वैहैं चित्रकूटतज्यों तवतेन
लहीसुधिवधूसमेतकुशलसुतद्वैहै वारिवयारिविषम आतप
सहिविनुवसनभूमितलस्वैहैं कन्दमूलफलफूलअसनवनभो
जनसेहिनमिलतकसवैहैं जिनहिंविलोकिसोचिहैं लताद्रुम
खगमृगमुनिलोचनजलच्वैहै तुलसिदासतिनकीजननीहौं-
मीसीनिठुर और कहुंकोहै २९८ रागसोरठ वैठीसगुनविचारतिमा
ता कव ऐहैं मेरेवालकुशलघर कहहुकागफुरिवाता दूधभात
कीदोनीदैहौं सोनेचोचमढैहौं जवसियसहितविलोकिनयनभ
रिरामलषणउरलैहौं अवधिसमीपजानिजननीजिय अतिआतु
र अकुलानी गणकवुलायपायपरि पूछतिप्रेममगनमृदुवाणीते
हि औसरकोउभरतनिकटतेंसमाचार लैआयो प्रभुआगमनसुसुन
ततुलसीमानोमीनभरतजलपायो २९९ रागगौरी खेमकरीवलि
वोलिसुवाणी कुशलक्षेमसियरामलषणकव ऐहैं अवध अवध
रजधानी ससिमुखिकुङ्कुमवरणिसुलोचनिमोचनिशोचनिवेदव-
खानी देविदयाकरिदेहि दरशफलजोरिपाणिविनवहिसवरा
नीसुनिसनेहमयवचननिकटह्वै मञ्जुलमण्डलकैमडरानीसु
भमङ्गल आनन्दगगनधुनि अकनि अकनिउरजरनिजुडानी
फरकनलागे सुअङ्गविदिशिदिशि मनप्रसन्नदुखदशासिरानीक

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

उपहारलिये सीयसहित आसीन सिंहासन निरषिजो हारतरषिहि
ये मङ्गलगान वेद धुनि जयधुनि मुनि आशीसधुनि भुअनभरे वर
षि सुमन सुर सिद्ध प्रशंसत सब के सब सन्ताप हरे राम राज भइ काम
धेनु महि सुख सम्पदा लोक छाये जन्म जन्म जानकीनाथ के गुणग
ण तुलसिदास गाये २९३ इति श्री रामगीतावल्यां लङ्का काण्ड समा
प्तम् ६ वनते आइ के राजा राम भये भुआल मुदित चौदहु भवन सब
सुखी सब सब काल मिटे कलुष कलेश कुलक्षण कपट कुपंथ
कुचाल गये दारिद दोष दारुण दम्भ दुरित दुकाल कामधुक महि
कामतरु उपल मणिगण लाल नारि नर तेहि समय सोहति भरे भाग सु
भाल वरण आश्रम धर्म्मरत मन वचन भेष मराल रामसिसेवक स
नेही साधु सुसुख रसाल रामराज समाज वरणत सिद्धि सुर दिगपाल
सुमिरि सो तुलसी अजहु हिय हर्ष होत विशाल २९४ राग ललित
भोर जानकी जीवन जागे सूत मागध प्रवीण वेणु वीणा धुनि द्वारे गा
यक सरस रागे श्यामल सलोने गात आलस वस जभात प्रिया प्रेमर
स पागे उनीदे लोचन चारु मुख सुखमा शिंगारु हेरि हारे मारु भूरि
भागे सहज सहाई छवि उपमा नले हे कवि मुदित विलोकन ला
गे तुलसिदास निशिवासर अनूप रूप रहत प्रेम अनुरागे २९५ रा
ग कल्याण रघुपति राजीव नयन शोभा तनु कोटि मयन करुणार
स अयन चयन रूप भूप माई देखो सखि अतुलित छवि सन्त क
ञ्ज कानन रवि गावत कल कीरति कवि कोविद समुदाई मज्जन करि
सरजु तीर ठाढे रघुवंश वीर सेवत पदकमल धीर निर्मल चित लाई
ब्रह्म मण्डली मुनिन्द वृन्द मध्य इन्दुवदन राजत सुख सदन लो
क लोचन सुखदाई विथुरित शिर रुह वरुथ कुंचित विच सुमन जू
थ मणियुत शिशु फणि अनीक शशि समीप आई जनु सभीत दै अङ्को
र देखेयु गरु चिर मोर कुण्डल छवि निरखि चोर सकुचत अधिकाई ल

लत भृकुटि तिलक भाल चिबुक अधर द्विज रसाल हास चारु तर
कपोल नासिका सुहाई मधुकर युग पङ्कज बिच शुक बिलोकि नी
रज पर लरत मधुप अवनि मनो बीच कियो जाई सुंदर पट पीत बिश
द भ्राजत बनमाल उरसि तुलसिका प्रसून रचित बिबिध बिधि बनाई
तरु तमाल अधबिच जनु त्रिविध कीर पांति रुचिर हेम जाल अन्त
र परि तातें न उड़ाई शङ्कर हृद पुण्डरीक निवसत हरि चञ्चरीक
निर्व्यलीक मानस गृह सन्तत रह छाई अतिशय आनन्द मूल तु
लसिदास सानुकूल हरण सकल शूल अवध मण्डन रघुराई २६
६ राजत रघुवीर धीर भञ्जन भव भीर पीर हरण सकल सरजु तीर
निरखहु सखि सोहैं अनुज मनुज निकर सङ्ग करण दनुज बल बि
भङ्ग अङ्ग अङ्ग छबि अनंग अगनित मन मोहैं सुखमा सुख शील
अयन नयन निरखि निरखि नील कुंचित कच कुण्डल कल नासिका
चीत पोहैं मनहुं इन्दु बिम्ब मध्य कञ्ज मीन खंजन लखि मधुप मक
र कीर आयत किन किनिज गौहैं ललित गण्ड मण्डल सुविशाल
भाल तिलक झलकत मञ्जु रमय ङ्क अङ्क रुचिर बङ्क गौहैं अरुण अ
धर मधुर बोल दशन दमक दामिनि द्विति हुलसनि हिय हंसन चा
रु चितवनि तिरछौहैं कम्बु कण्ठ भुज बिशाल उरसि तरुण तुलसि
माल मञ्जुल मुक्तावलि युत जागति जिय जो हैं जनु कलिन्द नन्द
नी मणि इन्द्रनील शिखर परसि धसति लसति हंस सेनि संकुल अ
धिको हैं दिव्यतर दुकूल भव्य नव्य रुचिर चम्पक चय चम्प लाक
लायक नकि निकर अलिकि धो हैं सज्जन चष पुरुषनि केत भूषण
मणिगण समेत रूप जलधि बपुष लेत मन गयन्द बोहैं अकनि
बचन चातुरी तुरीय पेम पेषि मगन पगन परत इत उत सब चकि
तते हि समोहैं तुलसिदास यह सुधि नाहि कौन की कहां ते आइ को
नकाज काके ढिग कौन ठांउ को हैं २६७ देखु सखि आजु रघुनाथ

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मयूरगिहारु चारु चंदन मनहुं मरकत शिखर लसत निहारु रु॰
चिरजउपवीत राजत पदिक गजमणिहारु मनहुं सुर धनुन॰
क्षत्रगण विच तिमिरगंजनिहारु विमलपीत दुकूल दामिनि द्युति
विनिंदनिहारु वदन सुखमा सदन शोभित मदन मोह निहारु
सकल अङ्ग अनूपनहिकोउ सुकविवरणनिहारु दास तुलसी निर
षतेहिं सुख लहत निरषिनिहारु ॥३०१॥ सखिरघुवीर मुख छवि दे॰
खु चित्तभीत सुप्रीतिरङ्ग स्वरूपता अवरेखु नयनसुष मा निरषिन
गरिसुफल जोवन लेखु मनहुं विधि युगजलजविरचे शसि सुपूर
णमेखु भृकुटिभाल विशाल राजित रुचिर कुङ्कुमरेखु भ्रमर द्वै
विकिरणल्याये करणा जनु उनमेखु सुमुख केश सुदेश सुन्दर सुम
नसंयुत पेखु मनहुं उडगण वाहु आयो मिलन तमतजि देखु श्र॰
वण कुण्डल मनहुं गुरु कवि करत वाद विशेखु नासिका द्विज अ
धर जनु रह्यो मदन करि वहु वेषु रूप वरणि न सकत नारद शंभु शा
रद शेषु कहैं तुलसिदास कौं मति मंद सकल नरेषु ३०२ राग जयति
श्री देखो राघो वदन विराजत चारु आनन वरणि विलोक तहीं सु॰
खसुख किधों छवि वरनारि शिंगारु ॥ रुचिर चिवक रद ज्योति अनू
पम अधर अरुण सित हास निहारु मानो शशिकर वश्यो चहत क
मल महुं प्रगटत दुरत न वजत विचारु नासिक सुभग मनहुं शुक
सुन्दर चितवत चकित तार्थ्य अपारु कलकपोल मृदुवोल मनोह
रनीकि चिन चतुर मयन पावारु नयन सरोज कुटिल कच कुण्डल भ्र
कुटि सुभाल तिलक शोभासारु मनहुं केतु के मकर चाप शर गे वि
सरिमे मोहित मारु निगम शेष शारद शुक शंकर वरणत रूप न पा
वत पारु तुलसिदास कह कहौं कवन विधि अति लघु मति जड॰
कूर गंवारु ॥३०३॥ राग ललित आजु रघुपति मुख देखन लागन
सुख सेवक निरषि शोभा शारद शशि सिहार रद्यान वदन लाल

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

विशद हास सरसाल मानो हिमकर कर राखे राजीव मनाइ अरुण नय-
न विशाल ललित भृकुटि भाल तिलक चारु कपोल चिबुक नाशा सुह-
इ बिथुरे कुटिल कच मानहुं मधु लाल च अलिन नलिन युगल ऊपर
रहे लोभाई श्रवण सुन्दर सम कुण्डल कल युग मतुलसिदास अनूप उ
पमा कहीन जाइ माना मरकत सीय सुन्दर शशि समीप कनक मकर यु
न विधि विरचे बनाइ १०४ ॥ राग भैरो ॥ प्रात काल रघुवीर वदन छ
बि चितय चतुर चित मेरे होंहिं विवेक विलोचन निर्मल सफल सुशी-
तल तेरे भाल विशाल विकट भृकुटी बिच तिलक रेख रुचि राजै मन
हुं मदन तम तकि मरकत धनु युगल कनक शर साजै रुचिर पल-
क लोचन युग तारक श्याम अरुण सित कोये जनु अलि नलिन कोश
महु बंधुक सुमन सेज सजि सोये बिलुलित ललित कपोलनि पर
कच मेचक कुटिल सुहाये मानो विधु महं वनरुह विलोकि अ
लि विपुल सकौतुक आये शोभित श्रवण कनक कुण्डल क
ल अवलंबित भुज मूले मनहु केकि नकि गहन चहत युग
उरग इन्दु प्रमि कूले अधर अरुणतर दशन पांति बर मधुर मनोह
र हासा मनहुं शोन सरसिज महं कुलिश नि नडित सहित कृत
वासा चारु चिबुक शुक तुण्ड विनिन्दक सुभग सुउन्नत नाशा तु
लसिदास छवि धाम राम मुख सुखद शमन भव त्रासा १०५ ॥
राग केदारा ॥ सुमिरन श्री रघुवीर की बाहैं होत सुगम भव उद
धि अगम अति कोउ लांघत कोउ उतरत थाहैं ॥ सुन्दर श्याम श
रीर शैल तें धसि जनु दैय सुना अवगाहें अमित अमल जल परि
पूरण जनु जनमीं शिङ्गार सविना हैं धारैं वाण कूल धनु भूषण
जल चर भमर सुभग सब धाहैं विलसति वीचि विजय विरदाव-
लि कर सरोज शोहन सुखमाहैं सकल भुवन मङ्गल मन्दिर के
द्वार विशाल सुहाई शाहैं जे पूजी कौशिक मख ऋषियनि जनक गण

तायशङ्कर गिरिजा है भव धनु दलि जानकी विवाही भये विहाललन पालत पाहे परसुपाणि जिन किये महामुनि जे चितये कतहू न कृ पाहे जातुधान तियजानि दियो गिनि दुखई लीप सुनाह कु चाहे ति नरिपु मारि सुरारि नारि तेइ शीस उघारि देवाई धाहे दश मुख विव शति लोक लोक पति विकल विनाये नाक चनाहे सुव सव सेगावत जिनको यश अमर नाग नर सुमुख सनाहे जे भुज वेद पुराण नवा हैं करि आई करिहैं करती है तुलसिदास दासनि पर क्षाहे ३०६ ॥ राग भैरो राम चन्द्र कर कञ्ज काम तरु वाम देव हित कारी सियसने ह वर षेलि वलित वर वन्धु प्रेम वर वारी मञ्जुल मङ्गल मूल मूलत रु कदम नो कुर साखा रोम पर सान रसमुमन सुफल सव काल सुज न अभिलाखा अविचल अमल अनामय अविरल ललित रहित छल छाया शमन सकल सन्ताप पाप रुज मोह मान मद माया सेव हि शुचि मुनि भृङ्ग विहग मन मुदित मनोरथ पाये सुमिरत हिय हु लास तुलसी अनराग उमगि गुण गाये ३०७ राम चरण अभिराम का मप्रद तीरथ राज विराजे शङ्कर हृदै भक्ति भूतल पर प्रेम अक्षय वट भ्राजे श्याम वरण पद पीठ अरुण तल लसति विशद नख श्रेणी जनु रवि सुता शारदा सुरसरि मिलि चलि ललित त्रिवेणी अङ्कुश कु लिश कमल ध्वज सुन्दर भ्रमर तरङ्ग विलाशा मज्जहिं सुर सज्जन मुनि जन मन मुदित मनोहर वासा विनु विराग जप याग योग व्रत विनु तीरथ तनु त्यागे सव सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभु पद प्रयाग अनुरागे ३०८ राग विलावल रघुवर रूप विलोकु नेकु मन सकल लोक लोचन सुख दायक नख शिख सुभग श्याम सुन्दर तन चारु चरण तल चिह्न चारि फल चारि देत परचारि जानि जन राजत नख ज नु कमल दल नि पर अरुण प्रभा रञ्जित तुषार कण जंघा जानु आनु उर उरु कटि किङ्किणि मणि परपीत सुहावन रुचिर निषङ्ग नाभि रोमा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वलितविवलिवलितउपमाकछुश्पावन भृगुपद्चिह्नपदिकउर
शोभितमुक्तामालकुङ्कुमअनुलेपन मनहुपरस्परमिलि पङ्कज
विपुगरोनिज अनुराग सुयशघन वाहुविशाललललिनशायक
धनुकर कङ्कनके पूरमहा धन विमलदुलदलनदामिनि द्विनिय
ज्ञोपवीत लसत अतिपावन कम्बुग्रीव छविसीव चिवुकद्विजअध
रकपोल वोलभयमोचन नासिकसुभगकृपाकरि पूरणतरुणअ
रुणराजीवविलोचन कुटिलभकुटिवरभालतिलक रुचिशुचि
सुन्दरतरश्रवणविभूषन मनहुमारिमनसिजपुरारिदियेशशिहि
चापशरमकरअदूषण कुञ्चितकचकञ्चन किरीटशिरजटित
जोतिमयवहुविधिमणिगण तुलसिदासरविकुलरविछवि कवि
कहिनशकतशुकशम्भुसहसफण ३०६ रागकाहरा देखोरघुप
तिछवि अतुलित अति जनु तिलोक सुखमासकेलि विधिराखी
रुचिरअङ्ग अङ्ग निप्रति पद्मरागरुचिमृदु पदतलध्वज अङ्कुश
कुलिशकमलएहिमूरति रही आनि वहुविधिभकन की जनु अ
नुरागभरी अन्तरगति सकलसु चिह्न सुजनसुखदायक ऊरधरेख
विशेषविरजति मनहुं भानुमण्डलहिं संवारतधस्योसुतविधिसु
तविचित्रमाति सुभगअंगुष्ट अङ्गुली अविरल कछुक अरुणनख
जोति जगमगति चरण पीठ उन्नत नतपालकगूढ गुल्फ जंघाकद
ली जति काम तूणतलसरिस जानुयुग उरु करि कर करभहिविल
खावति रसनारचितरत्नचामी कर पीतवसन कटिकसे सरवसति नाभि
सरसि त्रिवली नश्रेणिकारोमराजिसे वाल छविपावति उर मुक्ता॥
मणिमाल मनो हर मनहु हंस अवली उड़ि आवति हृदय पदि
क भृगु चरण चिन्ह वर वाहु विशाल जानुलगि पहुंचति कलके।
यूर पूर कंजन मणि पहुंची मञ्जु कञ्जुकर शोहति सुजन सुरेखसु
नखअङ्गुलिप्रसुतसुंदरपाणिमुद्रिकाराजति अङ्गुलिवाणकमान

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

वाण छबि सुरनि सुखद असुरनि उर शालनि श्यामशरीर सु चन्द
न चर्चित पीत दुकूल अधिक छबि छाजति नील जलद पर निर
षि चन्द्रिका दुरनि त्यागि दामिनि जनु दमकति यज्ञोपवीत पुनी
ति विराजत गूढ़ यंत्र वनि पीन अंसतति सुगरु पृष्ट उन्नत रुका
ढिका कम्बु कण्ठ शोभा मन मानति शरद समय सरसीरुह निन्द
क मुख सुखमा कछु कहत नहि वनति निरषत ही नयननि निरु
पम सुख रवि सुत मदन सोम द्युति निदरति अरुण अधर द्विज
पांति अनूपम ललित हंसनि जन मन आकरषति विद्रुम रचित
विमान मध्य मानो सुरमण्डली सुमन चय वरषति मञ्जुल चिबुक
मनोहर हनु युग कल कपोल नासा मन मोहति पंकज मान वि·
मोचन लोचन चितवनि चारु अमृत जल सींचति केश सुदर्शन भी
र वचन वर श्रुति कुण्डल डोल निजिय जागति लखिन ल नील प·
योदर रसित सुनि रुचित मोर जोरी जनु नाचति भौहैं वंक मयङ्क अङ्क
चि कुङ्कुम रेख भाल भलि भ्राजति शिर सिहै मही रकमाणिक मय मु
कुट प्रभा सब भुवन प्रकाशति वरणत रूप पार नहि पावत निगम
शेष सुक शङ्कर भारति तुलसिदास केहि विधि बखानि कहै यह
मन वचन अगोचर मूरति ३०१ राग मल्लार आली री राघव के रु
चिर हिंडोरना झूलन जैये टेक फटिक भीती सुचारु चहुं दिशि म
ञ्जु मणि मय पौरि गच काच लखि मन नाच सखि जनु पाच सर सु
फ ढौरि तोरण वितान पताक चामर ध्वज सुमन फल घौरि प्र
तिछांह छबि कवि कवि सारिखि दै प्रति सौं कहै डरु औरि १ मदन जय के
खम्भ रोर वे खम्भ रत्न विशाल पाटी रपाट विचित्र भंवरा वलित वे
ल नाला लाल डांराडी कनक कुंकुम तिलक रे खैसि मन सिजमा न
प डुली मदि करति हृदय जनु कलधौत कोमल माल २ उनये स
घन घन घोर मृदु झरि सुखद सावण लाग वम पांति सुर ध १

नुद्रुम कदम्बनि हरित भूमि विभाग दादुर मुदित भरे सरित सर महि
उमग जनु अनुराग पिक मोर मधुप चकोर चातक सोर उपवन
ग ३ सो समो देखि सुहावनो नवसत संवारि संवारि गुण रूप यौवन
सींव सुन्दरि चली झूलन निकारि हिंडोल साल विलोकि सब अञ्चल
पसारि पसारि लागी असीसन राम सीनहि सुख समाज निहारि ४
झूलहि झुलावहि ओसरि न्ह गावहि सुघ गुण्ड मलार मञ्जीर नूपुर
वलय धुनि जनु काम करतल तार अनिमचत श्रम कण मुख
नि विथुरे चिकुर विलुलित हार नमत डित उडगण अरुण विधु
जनु करत व्योम विहार ५ हिय हरषि वरषि प्रसून निरषनि वि
बुधतिय तृण तूरि आनन्द जल लोचन मुदित मन पुलक तन
भरि पूरि सब कहहिं अविचल रजानित कल्याण मङ्गल भूरि चि
रजियो जानकी नाथ जग तुलसी सजीवनि मूरि ६ ॥ २११ ॥ राग
सुहो ॥ कौशलपुरी सुहावनि सरि सरजू के तीर भूपावली सुकु
ट मणि नृपति जहां रघुवीर पुर नर नारि चतुर अति धर्म्मनिपुन र
त नीति सहज सुभाय सकल उर श्रीरघुवर पद प्रीति छन्द ॥
श्री राम पद जल जात सब के प्रीति अविरल पावनी जो चहत शु
क शनकादि शम्भु विरञ्चि मुनि मन भावनी सबही के सुन्दर म
न्दिर अजिर राउ रङ्क न लखि परे नाकेश दुर्लभ भोग लोग करहिं न
मन विषय निहरे १ सब ऋतु सुखप्रद सो पुरी पावस अति कमनीय
निरषत मन हि हरति हठि हरित अवनि रमनीय वीर बहूटि विरा
जहिं दादुर धुनि चहुं ओर मधुर गरजि घन वरषहिं सुनि बोलन
मोर ॥ छन्द ॥ बोलन जो चातक मोर कोकिल कीर पारावत घने
खग विपुल पाले बालकन्हि कूजत उडात सुहावने वक राजि रा
जति गगन हीं सुरधनु तडित दिशि सोहहीं नभ नगर की शोभा
अतुल अवलोकि मुनि मन मोहहीं २ गृह गृह रचे हिंडोर नाम

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हिंग चकांच सुढार चित्र विचित्र वहु दिशि परस्फटिकपगा
र सरल विशाल विराजहिं विद्रु मखम्भ सुजोर चारु पाटिप
ट पुरट की मर कत मर कत भौर छन्द मरकत भवर डारा डोंक
नक मणि जटित हि ति जगमगरही पटुली मनहु विधिनिपुन
ता निज प्रगट करि राखी सही वहु रङ्ग लसन वितान मुक्तादा
म सहित मनोहरा नव सुमन माल सुगंध लोभे मञ्जु तमधु
करा ३ सुरड सुरड फूलन लगीं गजगामिनि वर नारि कुसुभि
चीर तनु सोह हीं भूषण विविधि संवारि पिकवयनी मृगलो
चनी सारद शशि सम तुरड राम सुयश सब गावहीं सुस्वर
सुसारंग गुरड छन्द सारङ्ग गुरड मल्लार सोरठ सुहव सु घर
निराजहीं वहु भांति तान तरङ्ग सुनि गंधर्व किन्नर लाजहीं
अतिमचत छूटत कुटिल कच छवि अधिक सुन्दरि पावहीं
पट उड़त भूषण खसत हंसि हंसि अपर सखी झुलावहीं ४
फिरि फिरि झूलहि भावनि अपनी अपनी वार विबुध विमा
नथकित भये देखत चरित अपार वरषि सुमन हरषहिं सुर
वरणहिं हरिगुण गाय पुनि पुनि प्रभुहिं प्रशंसाहि जय जय
जानकिनाथ छन्द जय जानकी पति विशद कीरति सकल
लोक मलापहा सुर वधू देहि अशीस जीवहु राम सुख सम्प-
तिमहा पावस समय कछु अवध वरणत सुनि अघौघ नसाव
हीं रघुवीर के गुण गण नवल नित दास तुलसी गावहीं ५॥
३१२॥ राग असावरी॥ सांझ समय रघुवीर पुरी की शोभा आजु व
नी ललित दीप मालिका विलोकहिं हित करी अवध धनी फ
टिक भीति शिखरनि पर राजति कञ्चन दीप अनी जनु अहि
नाथ मिलन आयो मणि शोभित सहस फणी प्रति मन्दिर क
लशनि पर भ्राजहिं मणिगण द्युति अपनी मानहु प्रगटि वि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पुल लोहित पुर पटइ दिये अवनी घर घर मङ्गल चार ये करहिं
हरषि नरङ्ग गणी तुलसिदास कल कीरति गावहिं जो कलिमल
समनी ३१ राग गौरी अवधनगर अति सुन्दर वर सरिता के तीर ॥
नीति निपुन नर तिय वसहिं धर्म्म धुरंधर धीर सकल ऋतु सुख
दायक तामहं अधिक वसन्त भूपमौलि मणि जहं वसें नृपति जान
की कन्त वन उपवन नव किशलय कुसुमित नाना रङ्ग बोलत म
धुर मुखर खग पिक वर गुञ्जत भृङ्ग समय विचारि कृपानिधि द्वार दे
खि अति भीर खेलहु मुदित नारि नर विहंसि कह्यौ रघुवीर नगर ना
रि नर हरषित सब चले खेलन फाग देखि राम छवि अतुलित उमगत
उर अनुराग श्याम तमाल जलद तनु निर्मल पीत दुकूल अरुण कञ्ज
दल लोचन सदा दास अनुकूल शिर किरीट श्रुति कुण्डल तिलक
मनोहर भाल कुञ्चित केश कुटिल भ्रू चितव निभक्त कृपाल कपोल चु
क नासिक ललित अधर द्विज जोति अरुण कञ्ज महुं जनु युग पांति
रुचिर गज मोति दर दर ग्रीव अमित बल बाहु सुपीन विशाल कङ्कन
हार मनोहर उरसि लसति वनमाल उर भृगु चरण विराजत द्विजप्रि
य चरित पुनीत भक्त हेतु नर विग्रह सुर वर गुणगोतीत उदर त्रिरे
ख मनोहर नाभी अति गम्भीर हाटक घटित जटित मणि कटि तट
रत मञ्जीर उरु अरु जानु पीन मृदु मरकत खंभ समान नूपुर मुनि
मन मोहन करत सुकोमल गान अरुण वरण पद पङ्कज नख द्युति
इन्दु प्रकाश जनक सुता कर पल्लव लालित विपुल विलास कञ्ज कु
लिश ध्वज अंकुश रेख चलन शुभ चारि जन मन मीन हरण कह
वन सीर चीसंवारि अङ्ग अङ्ग प्रति अतुलित सुखमा वरणि न जाइ
चहि सुख मगण होहिं मन फिरि नहि अनत लोभाइ खेलन फागु अ
वधपति अनुज सखा सब सङ्ग वरषि सुमन सुर निरषहिं शोभा अमि
त अनङ्ग ताल मृदङ्ग झांझ डफ बाजहिं पनव निसान सुघर सरस

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ह नाइन्ह गावहिं समयसमान वीणावेणुमधुर धुनिसुनि किन्नरगंधर्व
निजगुणगरु अहरु अपतिमानहि मनतजिगर्व निजनिज अटनि
मनोहर गान करहि पिकवयनि मनहुंहिमालयशिखरनिलसहि नि
मरमृगनयनि धवलधामतें निकसहिं जहतहंनारि वरुत्यमानहुं
मयतपयोनिधिविपुल अपसराजूत्य किंशुक वरणसु अंसुकसुख
मासुखनिसमेत जनुविधुनिवहरहे करिदामिनिनिकरनिकेत कु
ङ्कुमसरस अवीरनिभरहि चतुर नरनारि ऋतुसुभायसुठिशोभितरे
हि विविधविधिगारि जो सुख योग याग जप तपतीरथतें दूरि राम
कृपातें सोइ सुख अवधगलिनरह्यौपूरि खेलिवसन्त कियोप्रभुमज्ज
नसरजूनीर विविधभांतियाचकजन पाये भूषण चीर तुलसिदास
तेहि अवसर मागी भक्ति अनूप मृदु मुसुकाय दीन्ह तव कृपा दृष्टिर
घुभूप २१७ रागबसन्त खेलत वसन्त राजाधिराज देखतनभकौ
तुकसुरसमाज सोहै सखा अनुजरघुनाथसाथ झोलीन्ह अवी
रपिचकारिहाथ वाजहिंमृदङ्ग डफतालवेणु छिरकहिं सुगंधभ
रे मलयरेणु उतयुवतिजूत्यजानकि सङ्ग समयपटभूषणसरि
सरङ्ग लियेछरीवेत सौंधेविभाग चांचरिझूमक गावैंसरसराग किं
किनिनूपुरधुनि अतिसुहाय ललनागणजवजेहिधरहिधायलो
चन आंजहिं फगुआमनाय छाडहिं न चाइ हाहा कराय चढिखर
निविदूषकस्वांगसाजि करैंकूटि निपटगइलाजभाजि नरनारि
परस्पर गारि देत सुनिहंसतरामभाइन निहंसतरामभाइनसमेतव
रषतप्रसूनवरविबुधवृन्द जयजयदिनकरकुलकुमुदचन्द ब्र
ह्मादि प्रशंसत अवधवास गावतकलकीरतितुलसिदास २१८॥
रागकेदारा देखत अवधको आनन्द हरषिवरषतसुमनदिनदिनः
देवतनिकोवृन्द नगररचनाशिखनकोविधितकतबहुविधिवन्द
निपटलागतअगमज्योजलचरहिगमनस्वछन्द मुदितपुरलोगनि